Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

जन्म न हुआ तो फिर कब होगा ? ३

अप्रैल १९८६ ७

(१६ अप्रैल १९८६ से १५ मई १९ —रेणु शर्मा ९

११

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का आह्वान

ाति हो सावधान

ारत बचेगा

ंगा — विश्व बचेगा

करुण। न हिन्दू का जीवन संकट में है - पंजाब में हिन्दू का जीवन दूभर है। देश पर संकट के बादल हैं। केरल में धर्मान्तरण की आंधी चल रही है। पूर्वांचल में विदेशी मिशनरी बगावत की आग भड़का रहे हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार और हरियाणा में भी उर्दू के नाम पर अलगाववादी संगठित हो रहे हैं। इस तरह देश के समक्ष गंभीर संकट की वेला है। इस स्थिति का सामना करने का एकमात्र उपाय है -

हिन्दू हिन्दू एक बने - गंगा गायत्री और
गीता के अनुयायी संगठित हों और नेक बने

आप कुंभ पर्व पर आए हैं - गंगाजल की अंजलियां लेकर हिन्दू धर्म की रक्षा का व्रत लें। व्रत को निभाने के लिए हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य स्वयं पढ़ें तथा अन्य बन्धुओं तक पहुंचाने के लिए भी साथ ले जाएं।

हिन्दुत्व संकीर्णता नहीं, मानवता के कल्याण का मार्ग है।
वेद ही मानवता की कल्याणी वाणी है।

दयानन्द संस्थान के पुस्तक भंडारों पर आइए - केवल तीन सौ रुपये की लागत राशि में चारों वेदों का हिन्दी भाष्य तथा सस्ते मूल्य में हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य ले जाइए।

दयानन्द संस्थान

१२१ "रोड़ी बेलवाला", १६ "पंतदीप," हरिद्वार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय
अब भी कालिया का दमन न हुआ तो फिर कब होगा ? ३
महात्मा वेदभिक्षु की अमरवाणी
हमने बिगुल बजाया है ? ७
श्रीराम—हमारी सांस्कृतिक यात्रा के प्रतीक —रेणु शर्मा ९
जम्मू-कश्मीर में विभाजन कालीन दुःस्वप्न —पंडिता राकेशरानी ११
महात्मा वेदभिक्षु की ५६वीं जयन्ती १७
आत्मिक अग्निहोत्र एवं अग्निहोत्र के
भावनात्मक लाभ —डा० रामनाथ वेदालंकार १९
मधु या शहद —अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार २९
भारतीय संस्कृति की संजीवनी शक्ति —गुलजारी लाल नन्दा ३३
आप ही के पत्र ३७
गाजर खाइये, कैंसर भगाइये
(स्वास्थ्यचर्चा) —अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार ४०
एक ऐतिहासिक पत्र शिवाजी द्वारा
जयसिंह को (कविता) —लालाराम जे० प्रजापत ४२
संख्याओं का संसार —विद्या पुत्र ४५
परमात्मा का सच्चा स्वरूप
(पोप की भारत यात्रा के सन्दर्भ में) प्रताप शंकर पंड्या ४९
दक्षिण-पूर्व एशिया में हिन्दू धर्म —रवि कुमार ५६
समझदार मुसलमान भाइयों से —युगलकिशोर चतुर्वेदी ६२
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति कुछ सुझाव —श्रीपालसिंह आर्य ६५
आनन्द स्वामी उवाच ७४
"अश्वत्थामा मारा गया मनुष्य या हाथी" —स्व० प्रेमचन्द्र शास्त्री ७७
शरीअत, संविधान और राजीव गांधी —प्रो० बलराज मधोक ८१
भारतीय संस्कृति है मेरी —सत्यव्रत सिद्धान्त शास्त्री ८५
कृष्ण और अल्लाह उसका नाम फिलस्तीन
का कहे इमाम —डा० सीताराम सहगल ८८
झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते
संस्कार (कविता) —रतन लाल 'रत्नेश' ९६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो ।

संस्थापक— स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक—राकेशरानी

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली–११००३६

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड, ६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.

यह अंक : तीन रुपये

चैत्र संवत् २०४३
अप्रैल १९८६, वर्ष १९, अंक १२

वेदोपदेश

अमरता का केन्द्र

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां,
स्वसादित्यानां अमृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय,
मा गां अनागां अदितिं वधिष्ट ॥

ऋ० ८.१०.१.१५ ॥

शब्दार्थ – मैं (चिकितुषे जनाय) प्रत्येक चेतनावाले मनेष्य को (नु प्रवोचं) कहे देता हूं कि (अनागां) निरपराध (अदितिं) अहन्तव्या (गां) गौ को (मा वधिष्ट) कभी मत मार, क्योंकि यह (रुद्राणां माता) रुद्र देवों की माता है, (वसूनां दुहिता) वसु देवों की कन्या है और (आदित्यानां स्वसा) आदित्य देवों की बहिन है तथा (अमृतस्य नाभिः) अमरपन का केन्द्र है ।

हे मनुष्य ! तू गौ को कभी मत मार । इस निरपराध बेचारी गौ को कभी मत मार । तू चेतनावाला है, तुझे परमात्मा ने कुछ समझ, अक्ल बुद्धि दी है । इसीलिए कहता हूं कि तू गो-घात कभी मत करना । तू जरा-सा अपनी समझ का उपयोग करेगा तो तुझे पता लग जाएगा कि यह गौ यद्यपि बड़ी-भोली, बेचारी, बिल्कुल निर्दोष है इसलिए इसे कोई भी कभी मार सकता है, मारने से मर यह मर जायेगी, लेकिन इसका घात करना आत्मघात है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

अब भी कालिया का दमन न हुआ तो फिर कब होगा ?

जनवरी और मार्च के बीच उग्रवादियों-आतंकवादियों ने पंजाब का सारा दृश्य ही बदल दिया है। लुधियाना में आतंकवादियों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में व्यायाम कर रहे स्वयंसेवकों पर हमला कर दर्जन भर को अपनी गोलियों का निशाना बनाया। अगले दिन जालन्धर जिले के तीन ग्रामों में बीस निर्दोषों की जान लेकर अपनी आततायी प्रवृत्ति का परिचय दिया। अकाली नेता भले ही न मानें किन्तु तथ्य गवाही दे रहे हैं कि स्वर्ण मन्दिर उग्रवादियों के कब्जे में है। अपने धर्म स्थान के अधःपतन से सिख बन्धुओं का मौन बहुमत शायद दुःखी भी है। परन्तु प्रश्न है कि आज वह उतना उग्र, उद्वेलित और विक्षुब्ध क्यों नहीं है। आपरेशन ब्लूस्पर के बाद था। अकाल तख्त एक बार फिर ढहाया जा चुका है, परन्तु किसी ने भी यह प्रश्न नहीं उठाया कि इतने संवेदनशील प्रतीकों के साथ खिलवाड़ क्यों किया जा रहा है ? अवरोधों को तोड़कर उस दिन उग्रवादियों ने विधान सभा को घेरा था तो होला महल्ला के पावन पर्व के दिन दशमेश पिता गुरु गोबिन्दसिंह की स्मृति कराने वाले आनन्दपुर साहब में उन्होंने बरनाला मन्त्रिमंडल के सदस्यों का सामूहिक संहार कर गुरुद्वारे पर कब्जा करने का भी प्रयास किया था।

समझ नहीं आ रहा कि स्थिति इतनी बिगड़ जाने के बाद भी पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला और देश के युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और अभी क्या कुछ घटित होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तथ्य अब सूर्य के प्रकाश की भांति उजागर है कि मुट्ठी भर आतंकवादी एक निर्वाचित सरकार को आतंक से उलटने की दुरभिसंधि अपने कलुषित मनों में संजोये हुए हैं। राज्य सरकार का दायित्व है कि आतंकवाद के सर्प का फण कुचले। केन्द्र का दायित्व है कि वह विदेशों से मिली बन्दूकों और आग्नेय अस्त्रों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बल पर गुरु गोविन्दसिंह और वीरवर बंदर बैरागी एवं हरिसिंह नलवा
तथा पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, देवता स्वरूप भाई परमानन्द ए
अगर हुतात्मा भगतसिंह जैसे प्रेरक पुरुषों की धरती पंजाब को पुनः अस्मि
का गौरव प्रदान करने के लिए "शठे शाठ्यम् समाचरेत्" के आह्वान
चरितार्थ करे। यदि अब भी समाधान कर लिया गया तो कीमत कम ही चुक
पड़ेगी। यदि यह कार्य श्री बरनाला करते हैं तो श्रेयस्कर है, अन्यथा भार
सरकार को यह करना होगा। कीमत कम हो या अधिक, काम तो करना
होगा। क्योंकि अब किसी भी कीमत पर हिन्दुस्थान टूट नहीं सकता। अंत
टूटेंगे वे ही जो इस राष्ट्र को—इस पुण्य भूमि भारत को तोड़
चाहते हैं।

अब सारे विश्व पर यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रश्न मन्दिर, तख्त, ग्र
आदि का नहीं है, सवाल विशुद्ध राजनैतिक है। हम तो यह समझते हैं
अगर खालिस्तान मिलता हो तो किसी के नापाक सहयोग से अपने नापा
इरादों को पूर्ण करने का सपना लेने वाले ये बन्दूक वाले न स्वर्ण मन्दिर
चिन्ता करेंगे न दुर्गियाना मन्दिर की। ये तो वे विषधर हैं जो कोटि-क
हिन्दू-सिखों के लिए पावन स्वर्ण मन्दिर को जलाकर खाक करने अपने सप
का खालिस्तान बनाने में संकोच नहीं करेंगे और शायद यही कहेंगे
हम अपने सार्वभौम राष्ट्र में जो नया और चमचमाता मन्दिर बनायेंगे, उस
रोशनी से सारी दुनिया के नेत्र चुंधिया जायेंगे।

हम यह भी जानते हैं कि यदि श्री बरनाला अथवा श्री राजीव गांधी
इन उन्मादियों को पावन स्वर्ण मन्दिर से बाहर निकालने का बीड़ा उठाया
ये राष्ट्रविरोधी और हिन्दूविरोधी ही नहीं, अपितु सिख विरोधी भी (क्यों
गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा हिन्दुत्व की रक्षार्थ ही सजाया था) सिख पंथ
समाप्ति का हौवा खड़ा करने का भी प्रयास करेंगे। ऐसी स्थिति में ह
विवेकशील किन्तु मूक सिख बहुमत से आह्वान है कि वह अपने दायित्व
निर्वाह करे और सांप तथा रस्सी के अंतर को पहचाने। सांप ने आज
स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश कर धर्म को डस लिया है। धर्म बेहोश लेटा है।
सर्प को आज नाथने की आवश्यकता है। संस्कृत में एक उक्ति है—

सर्पाणां च खलानां च परद्रव्यापहारिणाम्।
अभिप्राय न सिद्ध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

र्थात् सांपों के, दुष्टों के और दूसरों का जानमाल लूटने वालों के अभीष्ट योजन कभी पूरे नहीं होते। इसीलिए यह जगत् टिका हुआ है।

परन्तु आज पंजाब में जो स्थिति बन रही है, उससे तो लगता है कि उन सांपों की, दुष्टों की ही बन आई है और वे जगत् को न सही भारत को तो बर्बाद करने पर तुल ही गये हैं। समय की मांग है कि इस उक्ति को सत्य सिद्ध करने के लिए मन्दिर में घुस आये सर्प का फण कुचलने के लिए भी हरनाला आगे बढ़ें, अपने सुरजीत नाम को सार्थक करें और यदि उनसे यह कार्य नहीं हो पाता तो यह भी राजीव को करना होगा। जिन्हें राजनीति के पिछड़ में खिले कमल के रूप में आशा भरी दृष्टि से सारे देश ने निहारा था। वृद्ध जनों ने पुत्रवत् प्यार दिया था तो महिलाओं ने अपने रक्षक भाई के रूप में देखा और युवकों ने उन्हें देश को इक्कीसवीं सदी में ले जाने वाला मसीहा माना था। समय रहते वे अपनी आशाप्रदायिकी छवि पर मुस्लिम महिला विधेयक के कारण आ रही आंच को और गहराने से बचायें। इस विधेयक से जहनी उन्मादी वे तत्त्व और भी अधिक हौसला पा रहे हैं, जिन्हें विदेश में ता खालिस्तानी जगजीतसिंह चौहान गले लगा रहा है। जो तत्त्व नन्दन वन कश्मीर की केसर क्यारियों में अंगारे दहका रहे हैं। ये सभी मसले एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रधान मन्त्री के यह तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दुत्व ही राष्ट्र का मेरुदंड है और इसी भावना ने लोक सभा के चुनावों में उन्हें प्रचंड बहुमत प्रदान कराया था।

हमारा अनुरोध है कि श्री गांधी कश्मीर के आपदाग्रस्त जनों की पुकार, जम्मू में निर्दोषों का चीत्कार और निराह मुस्लिम बहनों की गुहार सुनकर साम्प्रदायिकता के विषैले नागों का फण कुचलने को उस पर अविलम्ब प्रहार करें। इस कालिधर के दमन के बाद देश उनका (श्री राजीव का) गुणगान करेगा। जग-जग में गूंजेगा उद्घोष राजीव गांधी अमर रहें।"

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब सेना के सुपुर्द किया जाये

—पंडिता राकेशरानी

नई दिल्ली। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी ने अपने एक वक्तव्य में लिखा है कि लुधियाना में संघ की शाखा पर हमला कर १३ निर्दोषों की हत्या और १५ को गम्भीर रूप से घायल करके उग्रवादियों ने कानून और व्यवस्था की पूरी तरह धज्जियां उड़ा दी हैं। इससे पहले जब से अकाली दल की सरकार अस्तित्व में आई है, पंजाब में निरन्तर निर्दोष लोगों की हत्याएं हो रही हैं। ऐसा लगता है जैसे पंजाब में कोई शासन है ही नहीं। हत्याएं कर उग्रवादी आराम से टहलते हुए निकल जाते हैं और हतप्रभ, भयभीत, खंडित मनोबल वाली पुलिस देखती रह जाती है।

पंडिता राकेशरानी ने कहा कि ऐसी ही स्थितियों में केन्द्र ने दरबारा सिंह सरकार को बर्खास्त कर दिया था, गुजरात में सोलंकी सरकार को भी इसी अराजकता के कारण जाना पड़ा था और हाल ही जम्मू-कश्मीर की शाह सरकार को भी बर्खास्त करना पड़ा। उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि इन सबसे विकट स्थिति होने पर भी पंजाब में केन्द्र अपने दायित्व से क्यों बच रहा है। क्या पंजाब के हिन्दुओं का रक्त पानी है जो उसकी चिन्ता नहीं की जा रही? समय की मांग है कि अक्षम सिद्ध हुई पंजाब सरकार को बर्खास्त कर पंजाब को सेना के हवाले किया जाये। पंडिता राकेशरानी ने कहा कि यदि केन्द्र अकाली सरकार की अक्षमता के नाम पर अपने दायित्व से बचने की कोशिश करेगा तो देश यही समझेगा कि उसमें आतंकवाद से निपटने का सामर्थ्य नहीं है और वह अकाली सरकार के लिए उदार बनाने का दिखावा मात्र कर रही है।

उन्होंने कहा कि यदि केन्द्र ने पंजाब के निरपराध हिन्दुओं के कत्लेआम को नहीं रोका तो वह देश को गृह युद्ध की ओर ढकेलने की भारी भूल कर सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि देश के नागरिकों की रक्षा के अपने दायित्व को अब राज्य सरकार का मामला कहकर न टाला जाय, भारत का संविधान किसी राज्य के नागरिकों के व्यापक नर संहार के लिए केन्द्र को मूक दर्शक बने रहने की इजाजत नहीं देता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

हमने बिगुल बजाया है !

विदेशी पादरियों ने भारत पर आक्रमण कर दिया है। सारे पूर्वांचल पर अधिकार कर वे अब उत्तरप्रदेश से लेकर कश्मीर तक के सारे हिमालय पर क्रास लगाने का संकल्प लेकर भारी संख्या में वहां पहुंच चुके हैं।

उनका निश्चय है कि वे सारे भारत को ईसालैंड बना देंगे और हमारा संकल्प है कि हम ईसाई पादरियों के षड्यंत्र प्राण देकर भी विफल करेंगे।

४२ मुस्लिम देश भारत को इस्लाम के जहर से अपावन करने की योजना बना बैठे हैं। उनकी गति-विधियां दिन-रात चल रही हैं। पाकिस्तान उनके द्वारा पूरे बल से भारत में विद्रोह की तैयारियां करा रहा है। भारत मां को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए विदेशी पादरी और इस्लामी ताकतें पूरे बल से लग चुकी हैं।

इस देश के देशभक्त गहरी नींद में सो रहे हैं। शासन वोटों के लिए देश में बारूद बिछता देखकर भी मौन है। विरोधी दल भी तुष्टीकरण की नीति में लगे हैं।

आग धधक रही है, देश जल रहा है पर किसी को चिन्ता नहीं। हमने जागरण का बिगुल बजा दिया है। पर हमारा शखनाद अभी तक आपकी नींद तोड़ने में सफल नहीं हुआ। आपकी नींद क्या सब-कुछ लुट जाने के बाद खुलेगी ? क्या जब पानी सिर से गुजर जाएगा तभी जागोगे ? बताओ तो सही कि क्या इच्छा है आपकी ?

मैं राम-कृष्ण और शिवा-प्रताप के वंशजों को पुकारता हूं—इसलिए कि वे खड़े होकर घर में लगी आग बुझाएं। मजहब की आड़ में देशद्रोह हम नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहेंगे। भारत का तिरंगा झंडा हम नहीं झुकने देंगे। सत्य-धर्म और संस्कृति का प्रतीक पावन ओ३म् का ध्वज हर धर्म स्थान पर फहराएंगे और क्रूर-हिंसक-देशद्रोही तत्त्वों के विनाश के लिए हम काल बन जाएंगे।

भाइयो और बहनो !

संगठन का महत्त्व समझो ! स्वयं जागो और सभी को जगाओ। स्थान-स्थान पर हिन्दू रक्षा सम्मेलन या राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित करो।

—विदेशी पादरियों को भारत से निकालने के लिए।

—ईसाइयों के देशद्रोही षड्यन्त्र विफल करने के लिए।

—इस्लामी साम्राज्यवाद का जहरीला प्रवाह रोकने के लिए।

१. अधिक से अधिक धन भेजिए।

२. अपने यहां रक्षा सम्मेलन आयोजित करें।

३. प्रचार साहित्य मंगाकर वितरण करें। जितना सहयोग मिलेगा उतना ही सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।

(जन-ज्ञान मासिक चैत्र संवत् २०३८ से उद्धृत)

दिमागी कसरत

निम्नलिखित वाक्यों में से प्रसिद्ध शहरों का नाम चुनें—

१. पप्पू नानी से गुस्सा हो गया।
२. लखन ऊपर की मंजिल में रहता है।
३. उसने राम का पैन कब लिया था ?
४. वह पूरा चौपट नाथ है।
५. वह मकान पुरना महता का है।
६. अम्बालाल बहुत अच्छा आदमी है।
७. रबर का काला नाग पुरस्कार देने योग्य है।
८. दूकान में अहमद नग रखता है।

उत्तर—१. पूना २. लखनऊ ३. बलिया ४. पटना
५. कानपुर ६. अम्बाला ७. नागपुर ८. अहमद नगर

—नन्द प्रसाद जोशी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामनवमी १८ अप्रैल पर विशेष लेख

श्रीराम—हमारी सांस्कृतिक यात्रा के प्रतीक

—रेणु शर्मा

कई बार इतिहास के क्रियाशील पात्र मौखिक गाथाओं के विषय बनकर जन-जीवन में घुलमिल जाते हैं और कालक्रम से उनके इर्द-गिर्द अलौकिक घटनाओं का तानाबाना इस तरह बुन जाता है कि वे मिथकीय दुनिया में सहज ही प्रवेश पा जाते हैं। बहुत कुछ यही राम, कृष्ण, बुद्ध तथा महावीर आदि के साथ हुआ। रामायण की कथा भारत के समाज, संस्कृति, इतिहास, साहित्य और धर्म में गुंथी हुई है। मिथक और इतिहास के श्रीराम स्वयं भारत के तथा भारत की सांस्कृतिक यात्रा के प्रतीक हो गये। उनकी यात्रा वैदिक काल से शुरू होती है और आज तक जारी है। यह यात्रा भारत, नेपाल, श्रीलंका, बर्मा, थाइदेश, कम्पूचिया, मलेशिया, इन्डोनेशिया आदि अर्थात् दक्षिण एशियाई देशों में भी शताब्दियों से अपने "जनसमूह माध्यम" द्वारा परम्परागत संस्कृति का विस्तार करती चली आ रही है।

कर्त्तव्य और भावना के संगम

वर्तमान मशीनी युग की भागमभाग में जहां विकृतियों के घन विटप को चीरकर मनुष्य व्यवस्था पाने की प्रक्रिया में संलग्न है, अपनी अस्मिता को पहचानने की कोशिश कर रहा है और अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए कई मोर्चों पर चौतरफा लड़ाई लड़ रहा है, वहीं राम के चरित्र में ही उसे अपना अक्स नजर आता है। वास्तव में उनके संघर्षशील व्यक्तित्व में आज के मनुष्य की क्रियाशीलता दृष्टिगत होती है। किशोरावस्था में गुरु विश्वामित्र के साथ वनों में जाकर राक्षसों का वध करके ऋषि-मुनियों के यज्ञ की रक्षा करते हैं। उनकी यह सक्रियता शनैः शनैः बढ़ती जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजमहल से बाहर निकलकर ही उनका व्यक्तित्व निखरता है। सभी सुखों को त्यागकर यह निर्वासित राजकुमार अकेला ही वन की बाधाओं से टकराता है और अंत में साधनहीन होने पर भी अपने पौरूष के बल पर वानर सेना का गठन कर रावण के विरूद्ध विजयश्री का वरण करता है। यही उनके साहस और उनकी क्रियाशीलता की चरम परिणति है। वास्तव में उनका व्यक्तित्व, शील, शक्ति और सौंदर्य से समन्वित है। वे लोकरंजक होते हुए भी लोकरक्षक हैं।

मर्यादाओं के संस्थापक

जिस कौटुम्बिक टूटन और सत्ता के लिए संघर्ष का सूत्रपात महाभारत काल में हो गया था, और जो कालान्तर में भयावह रूप में हमारे सामने उपस्थित है, उसे रोकने के लिए राम ने भ्रातृत्व के महान् आदर्श प्रस्तुत किए हैं। जब राम वंशानुगत वैभव को त्यागकर वन में निर्वासित जीवन व्यतीत करते हैं तो भरत उन्हें अयोध्या वापस लौटाने के लिए वन जाते हैं किन्तु राम "प्राण जाएं पर वचन न जाई" रघुकुल परम्परा की चर्चा करके उन्हें वापस स्वदेश भेज देते हैं। भरत, राम की खड़ाऊं को सिंहासन पर रखकर उनके सेवक की तरह शासनकार्य चलाते हैं। यहां भरत भी राम के भक्त मात्र नहीं हैं वरन् उच्चस्तरीय मानवीय मूल्यों के वाहक हैं। तभी तो राम कहते हैं— "भयउ न भुअन भरत सम भाई"

यह राम के चरित्र की महानता और उनकी प्रासंगिकता ही है कि उनके चरित्र को लेकर प्राचीन काल से आज तक निरन्तर साहित्य सृजन हो रहा है।

राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त के शब्दों में—

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।"

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जम्मू-कश्मीर में विभाजनकालीन दुःस्वप्न

—पंडिता राकेश रानी

२० से २२ फरवरी तक कश्मीर घाटी में जो कुछ हुआ, वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक कलंक के नाम से स्मरण किया जायेगा। इस दौरान हिन्दू अल्पसंख्यकों पर हुए घृणित हमलों ने सन् १९४७ की दुःखद स्मृतियाँ एक बार फिर ताजा कर दीं।

जम्मू-कश्मीर से आए भुक्त-भोगियों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों की रोंगटे खड़ी करने वाली कथाएं सुनाई हैं। श्रीनगर, अनन्त नाग तथा बारामूला जिलों के कस्बों और ग्रामों में हिन्दुओं के लगभग हर मंदिर को तोड़ा गया या जलाया गया। हिन्दुओं के घरों को आग लगाई गई, उन पर पथराव किया गया और उनकी बहू-बेटियों को अपमानित किया गया। दुकानें लूटी गईं और हिन्दुओं की पिटाई की गई। इन सब स्थानों पर दंगाइयों ने 'पाकिस्तान जिन्दाबाद', 'भारतीय कुत्तो वापस जाओ' और जियाउलहक जिन्दाबाद के नारे लगाए।

इस भयानक कांड के अवशेष कश्मीर घाटी में आज भी देखे जा सकते हैं। कश्मीर घाटी के हिन्दू इतने असुरक्षित अनुभव कर रहे हैं कि वे अपनी सुरक्षा के प्रति चिंतित हैं और घाटी छोड़ कर देश के दूसरे भागों में बसने की सोचने लगे हैं। ऐसा लगता है जैसे कश्मीर में औरंगजेब का शासन लौट आया हो।

अकेले अनन्तनाग जिले में, जो जमाअते इस्लामी का गढ़ है, बीस से अधिक स्थानों पर सैकड़ों मन्दिरों को नष्ट किया गया तथा अनेक मन्दिर जलाए गए। अपार धन-संपत्ति लूटी गई, और मूर्तियां तोड़ दी गईं। अत्याचार के इन चिह्नों को देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी शत्रु सेना ने हमला करके इन स्थानों को जी-भर लूटा हो।

इस घृणित कांड में तत्कालीन सत्तारूढ़ दल द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असामाजिक तत्त्वों को भड़काने और कश्मीर पुलिस द्वारा हमला,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लूटपाट तथा आग लगाने में सहयोग देने से हिन्दुओं को पता चल गया है कि कश्मीर घाटी में हिन्दुओं का भविष्य सुरक्षित नहीं है।

झगड़ा कैसे शुरू हुआ ?

जम्मू-कश्मीर के वर्तमान दंगों के लिए यदि किसी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है तो तत्कालीन मुख्यमंत्री जी. एम. शाह को। जम्मू सचिवालय में प्राचीन हिन्दू मंदिर की भूमि पर मस्जिद बनाने का षड्यन्त्र रचकर शाह ने सांप्रदायिकता को जानबूझकर हवा दी थी। जम्मू सचिवालय जिस जमीन पर बना है वह जमीन हिन्दुओं के एक प्राचीन मंदिर की है। दो सौ साल पूर्व बने इस मंदिर को माता बूआ दाती का मंदिर कहते हैं। सर्दियों में जम्मू-कश्मीर की राजधानी जम्मू आ जाती है। सभी सरकारी कर्मचारी श्रीनगर से जम्मू चले आते हैं। इन कर्मचारियों को नमाज अदा करने के लिए दोपहर को सरकारी समय में छुट्टी दी जाती है। शायद पूरे देश में एक भी ऐसा सरकारी दफ्तर नहीं होगा, जहां संप्रदाय विशेष के लोगों को सरकारी काम का नुकसान करके पूजा के लिए अवकाश दिया जाता हो परन्तु जम्मू-कश्मीर की सरकार ने सारे देश से अलग चलने का शायद ठेका ही ले लिया है। श्रीनगर सचिवालय में पहले ही सरकारी जमीन पर सरकारी खर्च से मस्जिद बनी हुई है। शाह ने जम्मू में भी मस्जिद बनवाकर सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया।

इसके विरोध में जब विभिन्न हिन्दू संस्थाओं की समन्वय समिति (हिन्दू रक्षा समिति) ने विरोध दिवस मनाने का निश्चय किया तो शाह ने ऐसी चालें चलनी शुरू कर दीं, जिनसे सारे कश्मीर में विद्वेष की आग भड़क उठी। शाह सरकार हर कीमत पर हिन्दुओं के शक्ति प्रदर्शन को दबाना चाहती थी। इसलिए शाह के आशीर्वाद से पनप रही जमअते इस्लामी के सदस्यों को भड़काने की योजना बनाई गई और हिन्दू रक्षा समिति का जलूस प्रारंभ होने के समय नंगी तलवारों से लैस लगभग २०० मुस्लिम युवकों का एक जलूस 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए निकला। पुलिस के संरक्षण में इस जलूस में खुलेआम राष्ट्रद्रोही नारे लगते रहे। दरअसल सरकार चाहती थी कि हिन्दू रक्षा समिति के जलूस से मुसलमानों के इस सशस्त्र जलूस का टकराव हो जाये और उसे हिन्दुओं का दमन करने का बहाना मिल जाये। परन्तु इस चाल का पता लगने पर हिन्दुओं ने अपना जलूस एक घंटा विलम्ब से निकाला। इसके बावजूद इस शांत जलूस पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया और अश्रुगैस के गोले छोड़े गए। प्रमुख हिन्दू नेता गिरफ्तार किये गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निरपराध हिन्दुओं पर जुल्म होने के कारण वातावरण बिगड़ गया। परिणाम-स्वरूप शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया।

देखा जाये तो वैसे तो कश्मीर घाटी में फैले सांप्रदायिक तत्त्वों को कोई बहाना चाहिए। वे उपद्रव करने के लिए हमेंशा तैयार रहते हैं, फिर चाहे वह मुद्दा राम जन्म भूमि का हो अथवा कोई दूसरा। तो भारत पूर्व जब बम्बई हाईकोर्ट में कुरान पर प्रतिबंध लगाने सम्बन्धी याचिका दायर हुई थी, तब भी कश्मीर में शरारत की गई किन्तु विडम्बना यह है कि इस बार सांप्रदायिक उन्माद को स्वयं तत्कालीन मुख्यमंत्री जी. एम. शाह ने भड़काया। कश्मीर घाटी में २० फरवरी को जी. एम. शाह के पहुंचने के बाद यह उन्माद भड़का। ज्ञातव्य है कि वरिष्ठ अधिकारियों और राष्ट्रविरोधी तत्त्वों द्वारा कुछ दिनों से यह अफवाह फैलाई जा रही थी कि जम्मू में हिन्दुओं द्वारा मस्जिदें जलाई गई हैं और मुसलमानों की हत्याएं की गई हैं। श्रीनगर में इन अफवाहों के फैलने पर तनाव बढ़ने लगा और जब १८ से २१ फरवरी तक जी. एम. शाह श्रीनगर में ठहरे तो यह तनाव विस्फोट के रूप में फट पड़ा।

अनन्तनाग और श्रीनगर में १९-२० फरवरी की रात को कर्फ्यू लगाया गया तो पुलिस का कोई प्रबंध नहीं किया गया। इसका लाभ उठाकर मुस्लिम बहुसंख्यक समाज के शरारती तत्त्वों ने संगठित होकर जवाहरनगर गणपतनगर और अन्य जिलों में खुलकर हमले किये और कश्मीर सशस्त्र पुलिस खड़ी तमाशा देखती रही। लगभग ४७ गांवों और कस्बों में हमलावरों ने सांप्रदायिकता का नांग नाच किया। एक दर्जन के लगभग घरों को आग लगा दी गई। लगभग ७५० घरों को लूटा गया, १२ दुकानें लूटी गईं १४ मन्दिर और दो धर्मशालाएं जला दी गईं तथा २५ मन्दिर नष्ट कर दिये गए। प्रसिद्ध नागबल मठ को लूटने की कोशिश की गई। कुल मिलाकर २१ करोड़ ५० लाख रुपये की संपत्ति नष्ट कर दी गई।

यह सन्तोष की बात है कि शाह मंत्रिमण्डल को बर्खास्त कर दिया गया है, जो हमलों की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता।

विडम्बना यह है कि कर्फ्यू के दौरान भी कई क्षेत्रों में इस प्रकार की घटनाएं होती रहीं। इससे यही संकेत मिलता है कि पुलिस दंगाई तत्त्वों के साथ मिली हुई थी। अभी तक हिन्दुओं में विश्वास उत्पन्न करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं की मांगें

इस आघात का सामना करने के लिए विभिन्न हिन्दू संस्थाओं ने एक सांझा मंच बनाकर केन्द्रीय सरकार से समुचित पग उठाने दो मास की है, ताकि अल्पसंख्यक हिन्दुओं में सुरक्षा का भाव जाग सके और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

१. उन्होंने मांग की है कि केन्द्र सरकार जम्मू-कश्मीर राज्य में अविलम्ब एक अल्पसंख्यक सुरक्षा बोर्ड का गठन करने की दिशा में प्रयास करे, ताकि हिन्दुओं के जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा की गारंटी हो।

२. केन्द्रीय सरकार से अपेक्षा है कि कश्मीर घाटी के हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए देशभक्त और परखे हुए मुस्लिम अधिकारियों के साथ ही इस क्षेत्र में हिन्दू प्रशासनिक एवं पुलिस तथा गुप्तचर अधिकारियों की नियुक्ति करने की व्यवस्था करे।

३. कश्मीर घाटी सहित इस प्रदेश के संवेदनशील क्षेत्रों में जहां हिन्दुओं को लगातार संरक्षण की जरूरत है, सीमा सुरक्षा बल और केन्द्रीय सुरक्षा बल के जवानों को स्थायी रूप से नियुक्त किया जाये और उन्हें अधिकार दिया जाये कि किसी भी तनाव की स्थिति में वे शीघ्र कार्रवाई कर सकें।

४. प्रशासनतंत्र और पुलिस बल में से उन तत्वों की छंटनी की जाये जो जमाअते इस्लामी जैसे सांप्रदायिक और पाक समर्थक कट्टरपंथी संगठनों से किसी प्रकार की सहानुभूति रखते हैं।

५. इस संवेदनशील राज्य में पैट्रो डालर (अरब देशों द्वारा तेल की कमाई के धन) तथा पाकिस्तानी घुसपैठियों के प्रवेश पर रोक लगाई जाये।

६. जमाअते इस्लामी और ऐसे ही दूसरे मुस्लिम संगठनों पर अविलम्ब प्रतिबंध लगाया जाये, जो हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर रहे हैं।

७. जम्मू-कश्मीर को राष्ट्र का अविभाज्य अंग मानने वाले सभी राष्ट्रीय दलों से अपेक्षा है कि वे इस राज्य को राष्ट्रीय धारा से पृथक् रखने वाली धारा ३७० को रद्द करने की मांग उठाएं।

८. संवेदनशील और सीमावर्ती होने के कारण इस क्षेत्र की पाकिस्तान से लाने वाली सीमा पर और कश्मीर घाटी में भूतपूर्व सैनिकों और पाक अधिकृत क्षेत्रों से लौटे शरणार्थियों की बस्ती बसाई जाये।

हिन्दुओं में आत्म विश्वास लौटाने के लिए उक्त पग उठाने जरूरी हैं। इसके साथ ही केन्द्रीय सरकार से अपेक्षा है कि इस बात की ओर भी ध्यान दिया जाये कि जम्मू-कश्मीर में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां॥
जगतृ भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम॥
चिंता ताकि कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय॥
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड सकल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो जाको वहु परिवार।
कह नानक थिर छछु नहिं सुपने जियुं संसार॥
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियुं जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान॥
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयों धन की॥
संग सखा सब तज गये कोऊ न निवाहियो साथ।
कहु नानक एहु विपत में टेक एक रघुनाथ॥

— श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सब नरक कुंड महिं परि है॥

दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंडू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१५८, धालकेश्वर मार्ग, उीनबत्ती, बम्बई-४००००६
१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाट-कोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)।
कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ? —वेदभिक्षु:	६० पैसे
३. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	६० पैसे
४. मोपला (उपन्यास) —वीर सावरकर	५ रु०
५. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
६. पोस्टर—दो प्रकार के	१)२० पैसे
७. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	६० पैसे
८. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	६० पैसे
९. हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
१०. इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
११. Bible in the Balance	१ रु०
१२. A Challenge to the Christian Faith	३० पैसे
१३. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	६० पैसे
१४. पादरियों को चुनौती	६० पैसे
१५. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	६० पैसे
१६. क्या ईसा खुदा का बेटा था !	६० पैसे
१७. ...और पादरी-भाग गया	६० पैसे
१८. Christianity Unmasked	१ रु०
१९. The Clarion Call	६० पैसे
२०. जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२१. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	६० पसे
२२. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
२३. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
२४. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	६० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः जी की ५६वीं जयंती पर वेद मन्दिर में यज्ञ महोत्सव सम्पन्न विद्वानों द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलियां

विगत १६ मार्च को वेदमन्दिर में महात्मा वेदभिक्षुः की ५६वीं जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर समाज के अनेक वर्गों के व्यक्तियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

किंगजवे कैंप अस्पताल के शल्य चिकित्सक डा० एल० पी० शास्त्री ने महात्मा वेदभिक्षुः की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे ऐसे महामानव थे जिनसे प्रथम साक्षात्कार में ही समस्त दूरियां समाप्त हो जातीं थी। उनके साथ कुछ क्षण की बातचीत के बाद ही किसी को भी उनकी विराटता का आभास हो जाता था। उन्होंने हिन्दू समाज के लिए अथक संघर्ष किया। डा० शास्त्री ने कहा कि उनके अन्दर हिन्दू समाज के लिए कार्य करने की एक ज्वाला थी और वे एक प्रखर योद्धा की तरह विजयी होने तक संघर्ष करने में विश्वास करते थे।

सामाजिक नेत्री श्रीमती शकुन्तला देवी ने महात्मा वेदभिक्षुःजी के प्रखर व्यक्तित्व को उद्घाटित करने वाले अनेक संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा कि देश और समाज के लिए उनकी कर्मनिष्ठा में व्यक्तिगत सुखों के लिए कोई स्थान ही नहीं बचा था। वे लक्ष्य के साथ एकरूप हो गये थे। शकुन्तला जी ने बताया कि अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति तक अपने विचार संप्रेषित करने की उनमें बेजोड़ क्षमता थी। लक्ष्य के प्रति कर्मठता के संदर्भ में उनके अन्तःकरण में ज्वालामुखी जैसी दाहकता थी तो स्वजनों, सहयोगियों और समाज के दुःख-दर्द के लिए स्नेहिल ऊष्मा थी। उनके चिन्तन और विचारों में समुद्र जैसी गहराई थी तो हिन्दू समाज के लिए उठने वाली कल्पना तरंगों में हिमालय जैसी ऊंचाई होती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति के महामंत्री प्रो० धर्मवीर ने महात्मा वेदभिक्षुःजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सहमति और असहमति के दो पक्षों के बावजूद अपने आप से सहमति और अनुकूलता उत्पन्न करा लेने में वे सिद्ध हस्त थे। यह सहमति विचारों की होती थी। श्री धर्मवीर ने कहा कि संगठनों और साधनों के बल पर सेवापथ पर आगे बढ़ना तो सरल कार्य है किन्तु वे ऐसे कर्मवीर थे जिन्होंने शून्य से अपनी यात्रा प्रारंभ कर उसे शिखर तक पहुंचाया था। हिन्दू समाज की सेवा और वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान करने के अभियान में उन्होंने कभी व्यावसायिक चिंतन से कार्य नहीं किया अपितु अधिकाधिक लोगों तक विचार पहुंचाने के लिए घाटे की व्यवस्था के अन्तर्गत साहित्य वितरण किया। श्री धर्मवीर ने कहा कि जनसामान्य तक वेदों को पहुंचाने के एकमात्र कार्य के लिए ही हिन्दू समाज उन्हें चिरकाल तक स्मरण रखेगा।

श्री सत्यपाल शास्त्री ने कहा कि उनकी कर्मठता किसी के लिए भी स्पृहणीय थी। अहोरात्रि उनमें अपने अंगीकृत कार्य के लिए ऐसी व्यग्रता रहती थी कि उन्हें सम्बल का विश्राम भी सहन नहीं होता था। यही कारण था कि अल्पकाल में ही वे अकेले इतना कार्य संपादन कर गए जितना अनेक संस्थाओं के लिए भी वर्षों में कर पाना साध्य नहीं होता।

इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने भी उन्हें मौन-मुखर श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।
आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

— सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मधु या शहद

शहद या मधु को अमृत भी कहा गया है। म० गांधी ने इस देश में जिन उद्योगों को आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से चलाने की प्रेरणा की उनमें मधुमक्खी पालन एक है। क्योंकि शहद गुणकारी बल वर्द्धक आरोग्यदायक और सौंदर्य-वर्द्धक है। नवजात शिशु सोने की शलाका से शहद चटाने की भारत में पुरानी प्रथा आज भी चली आ रही है। मातृस्तनों में दूध आने से पहले तक शिशु शहद पर ही रहता है। शहद की प्राण शक्ति एवं जीवन शक्ति इससे प्रकट है। वसन्त मधुमास कहा जाता है। शहद को मधु कहा जाता है क्योंकि वसन्त में बड़े परिमाण फूल खिलते हैं। इस ऋतु में संग्रह किया गया शहद सर्वोत्तम माना जाता है।

शहद की मक्खी की बस्ती छत्ता में सफाई करने वाले हैं, निरीक्षक हैं और पहरेदार हैं। ये सब अपने-अपने काम पर नियुक्त हैं। सफाई करने वाली मक्खियां छत्ते की सारी गन्दगी दूर करती हैं। इससे मजदूरनी मक्खियां (ये बंध्या होती हैं) फूलों से लाई रस को छत्ते की बाक्स में डाल सके। खोजी मक्खियां उन स्थानों का पता लगाती हैं, जहां बड़ी मात्रा में फूल खिले हुए होते हैं। खिले फूलों के स्थान पर बागों, उद्यानों कर्मकारी मक्खियां उड़कर वहां पहुंचती हैं। फूलों की ढूंढ में ये साधारणतः ३.३ किलोमीटर जाती हैं।

बी बाक्स से कोई शहद ले न जाय, इसके वास्ते पहरेदार सतर्कता से पहरा देती हैं। ये जंगली बिल्ली के समान आए दुश्मन पर हमला करती हैं। मानेर प्राणी को भी नहीं छोड़ती। इनका डंक बड़ा तेज होता है। सुई की नोक के समान मनुष्य के मांस में गड़ जाता है इससे मनुष्य मरते पाये गये हैं।

पहरेदार मक्खियां जानती हैं कि संगृहीत शहद की रक्षा में उनको अपना प्राण उत्सर्ग करना होगा। अतः वे सब छत्ते से बाहर आ जाती हैं। फिर वह मृत्यु संगीत गाती हैं। यह मृत्यु संगीत अन्यों को सावधान करने के लिए गाया जाता है। यह गीत सुनकर अन्य मधुमक्खियां मदद को आती हैं। दोनों मिलकर शत्रु पर हमला करती हैं। पानी में गोता लगाने वाले को भी नहीं छोड़तीं मुकाबला भयंकर होता है। मनुष्य मर तक जाते हैं। इस वास्ते छत्ता तोड़ने वाले रात को काला कम्बल ओढ़कर छत्ता तोड़ते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूसी वैज्ञानिकों के परीक्षणों ने बताया है इनका डंक आंखों के अनेक रोगों को दूर करने में सहायक होता है। भारत के किसी डाक्टर ने अभी तक यह परीक्षण नहीं किया। इनके डंक में उग्र विज होता है। यह मानी हुई बात है। आयुर्वेद का नियम है।

यिषस्य विषमोपधम्।

रूसी वैज्ञानिक कहते हैं, इसके डंक से खोई दृष्टि वापस आ जाती है। आंख आने पर शहद आंख में अंजन के समान लगाने की चाल तो गांवों में भी है। इसके वास्ते केसर के फूलों से बना शहद सर्वोत्तम माना जाता है। इसका रंग पीला होता है।

एक छत्ते में ८,००० से १०,००० मक्खियां होती हैं। इनमें २०० से ८०० नर मक्खी होती हैं रानी मक्खी सर्वकस सर्वोच्च शासिका है। रानी ही एकमात्र समागम व संभोग प्रक्रिया करती है। यह उड़ते हुए करती है। जिसके साथ करती है वह तत्क्षण मर जाती है। इसके बाद रानी छत्ते में रहती है। शेफ ड्रोन (नर मक्खी) रानी को परेशान न करें इस वास्ते वे सब मार दिए जाते हैं। रानी मक्खी जीवन में केवल एक बार ही संभोग करती है। इस वास्ते भी ड्रोन को मार दिया जाता है। इनका कोई उपयोग नहीं। मुफ्त में इनको खिलाना, कार्यकारी मक्खियों को पसन्द नहीं होता।

रानी मक्खी प्रतिदिन १००० अंडे देती है। मक्खियों की संख्या पूरी करती है। रानी मक्खी के सेल में शाही जेली धरी जाती है। यह कार्य कर्मचारी मक्खियां करती हैं। शाही जेली कर्मकारी के सिर से तैयार की जाती है। पुराने जमाने में राजा नवाब पुसंत्व प्राप्त करने के लिए शाही जेली खाते थे।

नवोत्पन्न मक्खियों में यदि कोई रानी मक्खी नहीं होती तो कर्मचारी मक्खियां अंडे देने लगती हैं। फिर ये अंडे निर्जीव होते हैं। कर्मकारी मक्खियां इनको लेने के बहाने अन्यों का लाया शहद खाती हैं। यह देख दूसरी कर्मचारी मक्खियां अंडे देने लगती है। इस समय मधुमक्खी पालक समझ जाता है। छत्ते से शहद निकालने और नई रानी मक्खी लाने का समय आ गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई रानी मक्खी के आने के साथ मधु संग्रह का काम फिर चालू हो जाता है। दूरदर्शी मधु मक्खी पालक मधु संग्रह का कार्य सतत जारी रखने के लिए ठीक समय पर नई रानी मक्खों को लाने पर सतर्क ध्यान रखते हैं।

बरसात में शहद की मक्खियां अपने छत्ते से बहार मधु-संग्रह के कार्य से नहीं जातीं। आहार की खोज में मक्खियां छत्ता छोड़ न जाय यह भय बना रहता है। अतः मधुमक्खी पालक छत्ते पर मीठा पानी डालता है। इससे मक्खियां छत्ते में बनी रहती है। मक्खियों को आहार रात में दिया जाता है। जिससे दिन की भूखी मक्खी वर्षा थमने पर बाहर मधु संग्रह करने जाये।

अमेरिका, रूस और ग्रेट ब्रिटेन का अनुभव बताता है कि मधुमक्खियों के पराग व परागसेचन के कारण फसल बड़ी मात्रा में होती है। मधुमक्खियों के परागम सेचन के कारण सेब की फसल ७० प्रतिशत बढ़ी। आड़ू के फसल में भी इसके कारण ७० प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। क्रास पालीनन अन्तर पार परागमी करण के कारण फलियां, लौंग, चुकुन्दर आदि तो ३०० प्रतिशत तक उपज बढ़ी।

भारत में लगभग ५ करोड़ हेक्टेर में खेती होती है। तिलहन, दालों द्विदल आदि की फलों, शाक-सब्जियों की खेती होती है। बड़े परिमाण में मधुमक्खियों के पालने और इनके द्वारा अन्तरपार परागमाकरण से उत्पन्न फसल का अरबों रुपए मूल्य बढ़ जायेगा। खेती की दृष्टि से किसान के लिए शहद की मक्खियों का पालन, नितान्त आवश्यक है, क्या इस सत्य को किसान समय रहते स्वीकार करेंगे। चीनी की जगह शहद को बरते।

क्या इस विचार से कृषि के प्रशिक्षण में आवश्यक सुधार किए जाएंगे और गांव-गांव में पुष्प वाटिकाएं बनाई जाएंगी? मधुमक्खी पालन गांवों को सौंदर्य मधुरमा और गरिमा प्रदान करेगी। क्या यह लाभ कम है?

अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कम्प्यूटर 'फेल' हो सकता है, वैदिक गणित नहीं

इन्दौर, ५ फरवरी (वा.) : रूड़की विश्वविद्यालय आगामी शिक्षा सत्र से वैदिक गणित पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू कर रहा है। यह जानकारी रूड़की के अध्यात्म अध्ययन की सदस्य तथा रूड़की विश्वविद्यालय के सिविल इन्जीनियरिंग विभाग की सुश्री माया लाड ने एक भेंट में दी।

इस तरह का पाठ्यक्रम आरम्भ करने वाला यह संभवतः पहला विश्वविद्यालय होगा। सुश्री लाड ने बताया कि पाठ्यक्रम शुरू करने की सभी तैयारियां पूरी हो गई हैं।

सुश्रीलाड गत एक सप्ताह से यहां हैं और शहर के विभिन्न स्कूलों और कालेजों में वैदिक गणित पर लेक्चर डिमोस्ट्रेशन दे रही हैं। अभी तक वे २० से अधिक स्कूल एवं कालेज में वैदिक गणित के महत्व और उपयोग को समझा चुकी हैं।

उनका कहना है कि चार वेदों, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद से लिये गये १६ सूत्रों की मदद से गणित की किसी भी समस्या को हल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कम्प्यूटर की अपनी सीमाएं हैं और वह असफल भी हो सकता है लेकिन वैदिक गणित कभी गलत नहीं हो सकता।

सुश्री लाड ने बताया कि वैदिक गणित, सिविल इन्जीनियरिंग विभाग के अन्तर्गत ही होगा। उन्होंने बताया कि अध्यात्म अध्ययन केन्द्र ने प्राचीन वैदिक गणित की कुछ लापता कुंजियों को फिर से खोज लिया है। इसमें जोड़ घटा र, मिश्रित जोड़, गुणा, भाग इत्यादि की अतिशीघ्र वैदिक प्रणाली शामिल है।

उन्होंने कहा कि पुरी के स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ द्वारा लिखित वैदिक गणित पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगाया जायगा। इस पुस्तक का अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, लातिनी तथा जर्मन में अनुवाद किया जा चुका है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय संस्कृति की संजीवनी शक्ति

—गुलजारीलाल नन्दा

देश के भीतर और उसके आसपास हाल में जो घटनाएं हुई हैं, उसके फलस्वरूप मौजूदा स्थिति, वर्तमान प्रवाहों और भविष्य की रूपरेखा के बारे में, इस देश के लोगों के कल्याण और मातृ-भूमि की रक्षा की दृष्टि से हमारी चिन्ता और पीड़ा बढ़ गई है। यह प्रकट है कि वर्तमान नीतियों और प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन किये बिना लोगों की अवस्था में बेहतरी नहीं हो सकती।

हमने विदेशी दासता से मुक्त होने के बाद ३९ वर्ष प्रतीक्षा में बिता दिये हैं। हमने दुःखी मन से अधिकांश देशवासियों की जीवन परिस्थितियों को बिगड़ते हुए देखा है। उन लोगों की संख्या और मात्रा बढ़ रही है, जिनकी मनुष्य के नाते न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में हम विफल रहे हैं। शिक्षितों और सामान्य जनों में बेकार और अर्द्ध बेकारों की संख्या बढ़ रही है। समाचारपत्रों में अपराधों और हिंसा तथा महिलाओं और हरिजनों के साथ होने वाले अत्याचारों के जो समाचार छप रहे हैं, उनसे हमारी मानसिक शांति लुट रही है। शिक्षण संस्थाओं में अशान्ति व्याप्त है और अनुशासन कहीं भी नजर नहीं आ रहा है। भारतीय समाज के प्रायः हर स्तर पर गहरी मानसिक अशांति के अनेक लक्षण प्रकट हो रहे हैं। विभाजन प्रवृत्तियां जोरों पर हैं जो हमारे राजनैतिक और सामाजिक जीवन को अधिकाधिक छिन्न-भिन्न कर रही हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारंभ में हमारे भीतर एकता और मेलजोल की जो भावना थी, वह धूमिल हो रही है।

हमारी आर्थिक योजनाओं के परिणाम हमारी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नकली सिद्ध हुए हैं। हम अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं और अपने उत्पादक साधनों और उनसे प्राप्त होने वाली सामग्री और सेवाओं के बीच योग्य संतुलन कायम करने में असफल रहे हैं। हमारी लोकतंत्री व्यवस्था और उसके अन्तर्गत चलने वाली राजनैतिक और आर्थिक संस्थाएं जिस प्रकार काम कर रही हैं उससे अत्यधिक असंतोष पैदा हो रहा है और स्थिति यहां तक आ पहुंची है कि भारत के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संविधान के मूलभूत बुनियादी तत्वों, लोकतंत्र और समाजवाद के प्रति लोगों की आशा ही नष्ट हो रही है। राजनैतिक पार्टियां सबकी सब लोगों के मन में आदर और विश्वास पैदा करने में अक्षम सिद्ध हो रही हैं। विभिन्न स्तरों पर काम कर रही राजनैतिक प्रक्रियायें, विशेषकर चुनाव प्रणाली अपनी विश्वसनीयता गवां बैठी है और आज देश को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उन्हें हल करने में उनका कोई उपयोग नजर नहीं आ रहा है। चुनावों के आधार पर जो विशाल धनराशि खर्च होती है, उसका अधिकांश भाग दूषित होता है। उसका उम्मीदवारों के खर्च के हिसाब में समावेश नहीं किया जाता। देश के प्रशासन में भ्रष्ट तरीकों का प्रचलन एक खुला और सर्वमान्य तथ्य है।

रोग क्या है, यह सब जानते हैं। वह कोई रहस्य नहीं है। उसकी जड़ इस बात में है कि हम धर्म की राह से भटक गये हैं और हमने अपने-आपको भारतीय संस्कृति की विरासत के वरदानों से वंचित कर दिया है। हम पर पश्चिमी देशों के तरीकों की विचारधारा, रहन-सहन के आकर्षण हावी हो गये हैं। देश के नैतिक मूल्यों और आचार नियमों का पालन नहीं करते। पारस्परिक व्यवहार में, हम थोड़े से स्वार्थ के खातिर नैतिक नियमों को ताक में रख देते हैं। हम यह समझने लगे हैं कि हमारी बढ़ती हुई आर्थिक और राजनैतिक विफलताओं के मूल में भारतीय समाज का नैतिक पतन और चारित्रिक ह्रास ही मुख्य तत्व है। यह खराब स्थिति है और अगर उसे ठीक करने का जोरदार प्रयत्न नहीं हुआ तो वह और भी बिगड़ सकती है देश की आंतरिक शांति और स्थिति और साथ ही उसकी अखंडता और सुरक्षा के लिए उत्पन्न खतरों को हम स्पष्ट देख सकते हैं।

देश में ऐसे स्त्री पुरुष मौजूद हैं जो इन परिस्थितियों से परिचित हैं और देश के लिए उत्पन्न खतरों का अनुभव करते हैं। वे अपने ढंग से और अपने स्थान से सच्चाई के साथ सामान्य लोगों और प्रभावशाली तथा सामान्य लोगों को यह समझाने और चेताने की कोशिश कर रहे हैं कि अगर सुबुद्धि का उदय नहीं हुआ और हमने अपने तौर-तरीके नहीं बदले तो हमारा बुरा हाल होने वाला है। वे बढ़ती हुई शराबखोरी, सिनेमा के पर्दे और साहित्य में कामवासना और हिंसा के नग्न प्रदर्शन और उसके हानिकारक प्रभावों भ्रष्टाचार और भाई भतीजेवाद के शिकंजे और समाज के कमजोर वर्ग विशेषकर हरिजनों के साथ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुलन्द कर रहे हैं। भारत की नारियों के प्रति जो अपराध हो रहे हैं और जिन लोगों का काम ही नारियों के मान-सम्मान और जान माल की रक्षा करना है, जब वही इन अपराधों में लिप्त होते हैं तो उनके विरुद्ध लोग अपना आक्रोश और क्रोध, प्रदर्शनों द्वारा प्रकट करने लगे हैं। जब जन-साधारण को न्याय से वंचित किया जाता और उन्हें सत्ता के दुरुपयोग का फल भोगना पड़ता है तो उसके विरुद्ध शोरगुल मचाया जाता है। किन्तु यह सब बेकार सिद्ध हुआ है। ये प्रदर्शन बिलकुल ही बेकार तो नहीं होते, किन्तु वे हमें किसी लक्ष्य तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। बुराइयों से प्रभावशाली तरीके से लड़ाई छेड़ने के लिए यह आवश्यक होगा कि देश भर में लोगों को बताया जाए कि उनका धर्म और उनका नैतिक दायित्व क्या है और उनके गलत कामों का खेद उनके लिए वर्तमान में और भविष्य में कितना भीषण परिणाम आ सकता है।

हमारे साधु सन्त, जो भारतीय संस्कृति के संदेशवाहक हैं धर्म शास्त्रों के मूल्यों और सिद्धांतों को प्रचारित कर रहे हैं। वे इस देश के ऋषि मुनियों के उदाहरणों और शिक्षाओं को सामने ला रहे हैं। यह प्रयास न होता तो हम और भी नीचे चले जाते। किन्तु इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि इस प्रयास से चरित्र का ह्रास और मापदण्डों का अवमूल्यन नहीं रुक पाया है। हम वर्ष प्रतिवर्ष पतन की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है? यह कठिन प्रश्न है और इसका पूरा उत्तर प्राप्त करने के लिए उन लोगों को गहरा आत्म चिंतन और अध्ययन करना होगा जो क्षमतावान परिपक्व हैं और अपने जीवन में और समाज में चारों ओर व्याप्त दुष्प्रभावों का सफलतापूर्वक मुकाबला करते रहे हैं। मैं कुछ उल्लेखनीय तथ्यों की ओर संकेत करूंगा, जिन पर हमें विचार करना चाहिए।

यह जाहिर है कि जब हम बाधाओं को दूर करने का प्रयास करते हैं अथवा किसी काम को पूरा करना चाहते हैं तो इसके लिए हमारे पास पर्याप्त शक्ति होनी चाहिए। वास्तव में हमारी शक्ति बहुत थोड़ी है। जिन बुराइयों से हमें लड़ना है, वे बहुत पुरानी हैं और उनकी जड़ें बहुत गहरी धंसी हुई हैं। पिछले ३९ वर्षों में स्थिति ज्यादा खराब हुई है। अच्छे तत्व और आधार की प्रक्रियायें निर्बल हुई हैं तथा जिन्हें हम समाज विरोधी तत्व कह सकते हैं और जिनकी सत्ता, पद-प्रतिष्ठा की भूख बढ़ रही है और जिन्हें किन्हीं मूल्यों, सिद्धांतों अथवा राष्ट्रीयहितों की कोई चिंता नहीं है उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। हमारे धर्म और हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं पर भीतर और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाहर से जबर्दस्त आक्रमण हो रहा है। जहां तक हिन्दुओं का संबंध है उनमें से जो अच्छी स्थिति में है और शिक्षित भी हैं अपने धर्म का नाम तो लगाये हुए हैं किन्तु उसके मूल तत्व से अपरिचित हैं और उसके अमल करने के प्रति सर्वथा उदासीन हैं। हरिजनों को जिन खतरों का सामना करना पड़ रहा है उनको वे दिल और दिमाग से नहीं समझ रहे हैं। इन तथ्यों का फलितार्थ हमें अच्छी तरह समझना चाहिए और उसे ध्यान में रखना चाहिए इस स्थिति में हमको तीन उपाय करने होंगे।

१. देश के हर कोने में धर्म और भारतीय संस्कृति का संदेश पहुंचाना चाहिए और कुछ निर्दिष्ट क्षेत्रों में इस दिशा में सतत और व्यवस्थित प्रवृत्तियां जारी रखनी चाहिए।

२. इस संदेश का बुनियादी तत्व निश्चित करना चाहिए ताकि वह प्रभावपूर्ण हो सके।

३. हमें सर्वमान्य-प्राथमिकताएं तय करनी चाहिए और एक शक्तिशाली संगठन का निर्माण करना चाहिए।

इस संगठन के लिए हमें सभी स्रोतों से साधन और कार्यकर्ता जुटाने होंगे। यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि यदि धार्मिक क्षेत्र की सभी संस्थाएं और नेता एकजुट हो जाएं और समान कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए संयुक्त रूप से काम करें तो भी काम काफी कठिन होगा और प्रगति की रफ्तार तेज नहीं हो सकती। अगर संगठित और सतत प्रयास नहीं किया तो भविष्य अंधकार पूर्ण ही होगा। ईश्वरीय कृपा ही हमारी रक्षा कर सकती है, किन्तु उसका भी हमें पात्र बनना होगा, हमको हर एक को जहां भी हम हों, अपनी पूरी ताकत लगानी होगी।

आज जो स्थिति है उसमें किसी भी दिशा में प्रगति के कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहे हैं। इस योजना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस क्षेत्र की सभी संगठित संस्थाओं को एक जगह लाया जाए। जब तक ये संस्थाएं केवल अपने सीमित उद्देश्य के लिए काम करती रहेंगी, हम भारतीय संस्कृति को राष्ट्रीय मामलों में एक शक्तिशाली तत्व नहीं बना सकेंगे। हम उस दिन का स्वप्न देख रहे हैं जब वह सारी दुनिया के लिए प्रकाश का आधार बन जाएगा। भूतकाल में उसकी यही भूमिका रही है।

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

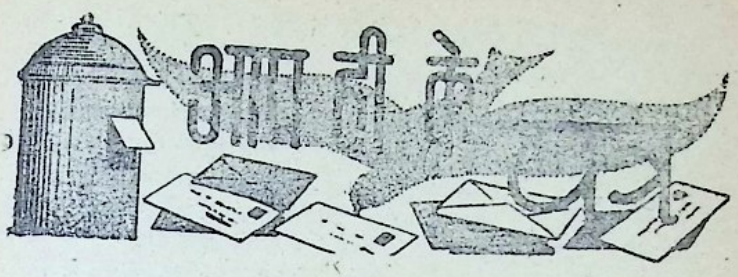

आपके प्रयास स्तुत्य हैं

बहिन राकेशरानी,

'जनज्ञान के दो अंक (भाद्रपद संवत् २०३९ और एक अन्य) मिलें पढ़ने के बाद लगा कि आपके और मेरे में बहुत सामंजस्य है। आप पर चल रहे मुकद्दमों से मन बहुत विचलित हुआ। आंसू तक आ गए कि हमारे ही स्वराज्य में एक कृतसंकल्प हिन्दू बहन पर मुकद्दमें पढ़े जाएं।

परमश्रद्धेया दीदी, आप पर कैसे अभियोग चल रहे हैं, उनके विषय में क्या किया जाना चाहिए, कैसे आप मां सीता की भांति निष्कलंक उतर सकती हैं, कहां-कहा चल रहे हैं, उनका पूरा विवरण भेज दें। भाद्रप्रद २०३९ वाला अंक बहुत ही अच्छा है। मां भारती के हर हिन्दू पुत्र-पुत्री को पढ़ना चाहिए और उसके अनुरूप कार्य करना चाहिए।

मैं बहुत सालों से हिन्दू धर्म सम्बन्धी विचार कर रहा हूं। आपकी तरह आपके अनुज के मन में यह विचार है कि कब हम विश्व गुरू का पद पुनः पा जाएं और इतने संगठित हो जाएं कि वसुधैव कुटुम्बकम् सबके हृदय में समा जाए। भ्रष्ट लोग सत्ता में हैं। ईमानदार, देशभक्त और पवित्र लोग मर-मर कर जीवन जी रहे हैं। हमारी और बहिनें भी आज पाश्चात्य जीवन की चकाचौंध के कारण अपनी ममता, प्रभुप्रेम, पतिनिष्ठा, मानव मात्रबंधुत्व, त्याग, दया, शील, लज्जा आदि सद्गुणों को छोड़कर नग्नता, क्रूरता, अश्लीलता, मादक द्रव्यों एवं अन्य व्यसनों की ओर जा रही हैं। हमारे पुरुष ईश्वर भक्ति, धर्म भीरूता, और शौर्य को छोड़ पश्चिमी जीवन में रंगों जा रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। कितना भोला है हिन्दू मानस। फिर ऊपर से इस्लाम तथा ईसाईयों के आक्रमण। हमारी सरकार अहिन्दू है। हमारे शहर के २० किलोमीटर पर भिंडरांवाले का गांव है। ज्ञानी जैलसिंह हमारे ही एक गांव सिधकां से हैं। हमारे ही अभिन्नअंग सिखों के कुछ सिर फटे नेताओं ने कैसे पंजाब को अग्नि में जला रखा है, रोजाना उग्रवादी कहीं न कहीं दो-तीन आदमियों को मार रहे हैं। भिंडरांवाले ने जो आग लगाई है, वह बुझ सकेगी, क्योंकि सरकार में दम नहीं। हिन्दू असंगठित होने के कारण आवाज तक उठाने में अक्षम रहे हैं। आपकी तरह ही मैं सोचता हूं कि कब हम स्वार्थ छोड़ पाएंगे। हमारे धर्म का नाश कई कारणों से हुआ है। परन्तु यदि स्वतंत्र होते समय हमारे कर्णधार हिन्दुत्व प्रेरित होते तो सब कुछ ठीक हो जाता। काश, उस समय समय मालवीय जी, राषि टंडन, गोलवलकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, र० म० लोहिया, नेताजी सुभाष, पटेल, वीर सावरकर, स्व० श्रद्धानन्द, गोस्वामी गणेशदत्त, आदि हिन्दू नेता एकत्र होकर सत्ता सम्भालते तो हमारा राजनैतिक सामाजिक जीवन अवश्य ही रामराज्योन्मुख होता। किन्तु गांधीं, नेहरू आदि ने देशभक्तों, सच्चे सपूतों जैसे भगतसिंह, बिस्मिल, आज प्रभृति के बलिदान को बिल्कुल भुला दिया। बिस्मिल जैसे महान् शहीद की बहिन शास्त्री देवी जी आपकी हृदयहीन दिल्ली में बुरी परिस्थितियों में रही हैं। बहिनजी, हमारे अभिन्नअंग सिखों के एक वर्ग ने गद्दारों, भगोड़े सैनिकों को बहुत धन, मान, इज्जत दी है। ब्रह्माकुमारी मिशन कुछ समय पूर्व निल था, अब हमारे छोटे-२ नगरों तक में फैल रहा है। निरंकारी भी फैल रहे हैं, राधास्वामी भी, आन्नद मार्गी भी, बालयोगेश्वर के चेले और रजनीश भी। दुःख है कि विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म की ध्वजा पश्चिम तक फहरायी, उनके चेलों ने अपने स्कूलों में तनख्वाह के मामले में बचने के लिए अपने को सर्वोच्य न्यायालय द्वारा अहिंदू की डिग्री ले ली। स्वार्थ की भी हद होती है। बातें बहुत हैं, पर कौन सुने। यह हर्ष का विषय है कि संघर्ष, मेहनत के बाद श्रीराम जन्म भूमि का बन्द द्वार खुला गया है। इसी तरह कृष्ण जन्मभूमि, काशी नाथ मंदिर पर से मुस्लिमी मस्जिदें खत्म हों। सरकार सब कुछ कर सकती है, अब कुछ फैसले जैसे (शाह बानो वाला) अच्छे हुए। पोप का आगमन खतरा सिद्ध हुआ है क्योंकि उसने रोम में जाकर कह दिया है कि मैं हिन्दु भारत में ईसाइयत को दृढ़ कर आया हूं।

सोमपाल

कोटकपूरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राम जन्म भूमि का ताला खुलने पर हर्ष

आदरणीय दीदी,

आगे हमारी इस समिति ने राम जन्म भूमि मुक्ति आंदोलन हेतु ३००० पर्चे [illegible] जैसे ही राम जन्म भूमि का ताला खुलने की सूचना (रेडियो न्यूज) १ फरवरी को मिली वैसे ही समिति ने नगर में हर्षोल्लास का वातावरण बना दिया। २ फरवरी १९८६ के दिन समिति द्वारा विशाल शोभायात्रा भगवान् श्री राम की निकाली गई जिसमें बड़ी मात्रा में गुलाल उड़ाई गई व पटाखे फोड़े गए। एक तरह से होली व दीवाली दोनों त्यौहार इस दिन मना लिए गये।

सोनी (सचिव), राजगढ़

(पृष्ठ ३६ का शेष)

यह बार-बार दोहराने की जरूरत है कि एक संस्था या व्यक्ति चाहे वह कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो उसकी कितनी उपलब्धियां क्यों न हों, और वह कितना ही साधन संपन्न क्यों नहो, वह देश की अवस्था को सुधारने के लिए धर्म और भारतीय संस्कृति को शक्तिमान नहीं बना सकता।

यह भी सही है कि जब आध्यात्मिक विभूतियां और देश की उपलब्ध संस्थाएं इस योजना को अपने समर्थन और पूरा सहयोग देंगी, तभी देश का चेहरा बदलना शुरू होगा। एक सुखी समाज, और न्यायोचित समाज व्यवस्था का जन्म होगा। उसे हम आध्यात्मिक समाजवाद का नाम दे सकते हैं। यह धर्म और भारतीय संस्कृति पर आधारित होगा।

इस दिशा में आगे बढ़ने की पहली शर्त यह होगी कि प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का एक दल गठित किया जाए और उन्हें कार्यक्षेत्र में नियोजित किया जाए। इन कार्यकर्ताओं को भारतीय संस्कृति की संपदा और इतिहास की बुनियादी जानकारी देने और उनमें लोगों के नैतिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में ठोस संगठन कायम करने की आवश्यकता क्षमता का विकास करना होगा। इन प्रवृत्तियों में लोगों को अधिकाधिक संख्या में भागीदार बनना होगा।

धर्म और देश की संस्कृति के लिए यह गंभीर कसौटी का समय है। मातृभूमि की पुकार सुनो, और इसकी सहायता के लिए जुट जाओ।

चैत्र संवत् २०४३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गाजर खाइये, कैंसर भगाइये

भारतीय डाक्टरों का यह निश्चित मत है कि गाजर के सेवन से भयानक कैंसर रोग दूर हो सकता है। ठीक है अमेरिका-यूरोप ने अभी इसको पुष्ट नहीं किया। परन्तु इस तथ्य को हम परीक्षा स्वतः कर सकते हैं।

क्योंकि इससे पहले प्राकृतिक चिकित्सा कहने वाले एवं देवो चिकित्सा नाम से संस्कृत में ग्रन्थ लेखक प्रो० भवानी प्रसाद ने घोषित किया था गाजर के रस से क्षय रोग के रोगी स्वस्थ किए जा सकते हैं। गाजर का रस निकालने के लिए उन्होंने लकड़ों की मशीन बनवाई थी। इस वास्ते गाजर की उपयोगिता एवं महत्ता इस देश में सदा स्वीकार की गई है। गरीबों का इसको मेवा कहा जाता है।

गाजर लगभग सालभर मिलती है। दिल्ली-महरौली इलाके में पेंशनर अफसरों के फार्म तो विशेष रूप से गाजर उपजाते हैं और कलकत्ता के मार्केट में बेचते हैं। गाजर की दो किस्में हैं। एक लाल दूसरी काली। सफेद गाजर कच्ची होती है। यह न खानी चाहिए।

दिल्ली से उत्तरी भारत में बढ़ते जाइये। जगह-जगह मटकों में काजी बेचने मिलेंगे। इनका नारा होता है—गाजर की काजी पीजिए और सालभर रोगों से मुक्त रहिए काजी काले गाजरों से बनाई जाती है। यह अत्यन्त ठंडी होती है। अतः वसन्त में विशेष उपयोगी होती है। हेमन्त ऋतु में गाजर का हलवा, व गाजर की खीर तैयार की जाती है। खीर को शाम को बनाकर रात में आकाश की छत के नीचे ढककर रख दीजिए। नाश्ते में इसको चांदी के वर्क लगाकर खाइए। यह शक्ति वर्द्धक सस्ता टानिक सिद्ध होगा। हलवा बढ़िया स्वादिष्ट बलवर्द्धक, अमीरों का मजेदार टानिक है। बढ़िया हलवा पानी में नहीं केवल शुद्ध गाय के दूध में पकाया जाता है। गाजर मोटापा दूर करता है। अतः हलवा टानिक हर हालत में लाभकारी है। मेवा भी खौलते दूध में डालने से हलवे के अंग हो जाते हैं। बादाम-पिस्ता को इस हालत में कद्दू कसकर खोये के समान डालना चाहिए। यह सुपच हलवा होगा। हलवा और खीर लाल गाजरों की बनती है। गाजर का आचार भी स्वादु होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गाजर पकने पर भी अपना रंग कायम रखता है। खुबानी और खुम्बों के साथ इसकी स्पेशल डिशें तैयार की जा सकती हैं। हरा धनिया, हरी मिर्च का व्यवहार करें। दही भी डाल सकते हैं। पालक और पनीर के साथ भी गाजर की तरकारी खास डिश होगी। आलू-गोभी के साथ बनाई तरकारी रोजमर्रा की साधारण सब्जी होगी। मटर-गाजर-आलू-गोभी को भुनी-तली गरम मसालों के साथ बनाई सूखी सब्जी के साथ पूरी-परौठा यात्रा व लम्बे सफर में खाइए। सफर की थकान व रेलवे को उबाने वाली यात्रा सुखद हो जाएगी।

गाजर पौष्टिक है। इसमें पौषक तत्त्वों की प्रचुरता है। दुर्बलता दूर करता है। रोग निरोधक क्षमता बढ़ाता है। शरीर से विजातीय द्रव्य निकालता है। गाजर अपने आप में एक औषध है। गाजर आहार एवं फल दोनों है। दिल मस्तिष्क की मांसपेशियों एवं हड्डियों को गाजर पुष्ट करता है। रक्त में लाल कण की संख्या बढ़ाता है। फलतः नस-नाड़ियों में रक्त संचार का प्रवाह ठीक रहता है।

गाजर का रस त्वचा को चमकीला बनाता है। त्वचा रोगों को दूर करता है। कच्ची गाजर खाने में अधिक गुणकारी है। यदि गाजर कच्ची रोज खाई जाये तो आध सेर गाजर खाने से शरीर को मिलेगा :

प्रोटीन—५ ग्राम

कैलशियम—१५६ ग्राम

विटामिन—ए, वी, सी और डी

एसिड—थाइमीन, फोलोक व रिबोफलेवोन

दरिद्र भारत के लिए गाजर से अधिक सुलभ पौष्टिक टानिक व औषध और क्या कोई अन्य हो सकता है ?

—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

आर्य समाज पुष्प नगर (आजमगढ़) उत्तर प्रदेश का तेरहवां वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से दिनांक १३ फरवरी १९८६ से दिनांक १९ फरवरी १९८६ तक मनाया गया। आचार्य पं० सूर्यबली पाण्डेय एवं श्री विश्राम सिंह जी तथा शास्त्री पं० पारस दाथ मिश्र 'कमल' का संगीत के माध्यम से वेदोपदेश का कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ऐतिहासिक पत्र शिवाजी द्वारा जयसिंह को

—लालाराम जे० प्रजापत

[१]

ए ! हिन्दु रक्त वीर जयशाह, ए ! हिन्दु उपवन के वीर माली,
ए ! शिव भक्त, ए राम पुजारी । ए भूप ! है चली कलम मतवाली ।।

[२]

सियार की जाल में फंस रहा, सिंह, गीत है सियार के गा रहा,
सिंह, सिंह को खाने आ रहा, निज धर्म को मिटाने जा रहा ।।

[३]

निज जनों का रक्त-पान ही, आज तुझे क्यों श्रेष्ठ लगा ?
उस बुद्धू के आ लालच में, स्व अपमान क्यों करने लगा ? ।।

[४]

कायरों का सा कार्य करके, क्यों दाग वंश पर लगा रहा ?
स्वधर्म पर तलवार चलाकर क्यों पय मां का लजा रहा ? ।।

[५]

पड़ प्रलोभन में पराग के, अलि, कलि में फंसता है ।
सारी निशा यों बोलता कि, यहां तो हालत खस्ता है ।।

[६]

ऐसा कुकर्म तू करने बढ़ा, हाय ! भारती रूठी, भारती रूठी ।
अमर भी यों बोलता कि, शौर्य की जंजीर टूटी, जंजीर टूटी ।।

[७]

बम-बम-हर-हर महादेव के, क्यों महानांद को भूला डाला ?
मुगलों का रण-नांद गुंजाता, हो रहा निष्कलंक, इतिहास काला ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[८]

जानता है तू क्या नहीं कि, है हिंदु-इतिहास लहू-लिखा
हर जिह्वा पर धिक्कार होगी, यदि होगा इतिहास का मोह फीका ।।

[९]

सिर क्या नहीं क्षण सोचता कि, धूर्त मुगल क्या चाहता है ।।
भिड़ा-भिड़ाकर सिंहों को, करना शक्तिहीन वह चाहता है ।।

[१०]

सहस्त्रों सैनिक देकर उसने, भेजे शाहिस्ता, अफजल खां ।
अंगुलिया एक की कट गिरी थी, घुसा अफजल के बघनखा ।।

[११]

भाग्य एक का संग रहा पर, था दूसरा 'अल्लाह का प्यारा' ।
और उपाय कुछ सूझा नहीं तो, सिखाया तुझे 'अल्लाह का नारा' ।।

[१२]

उलझन में अब मैं पड़ा कि, संग तेरे क्या खेलूं खेल ।
रक्त बहा दूं हिंदु का तो, नष्ट होगा फिर हिंदु-मेल ।।

[१३]

सर्वस्व कर दूं तेरे अधीन, साम्राज्य की यदि चाह अगर ।
सेनापति तेरा बन सकता हूं, पक्ष मुगल के लडे न अगर ।।

[१४]

पर दुष्टता धरा पर देखकर; नहीं पय मां का लजाऊंगा ।
भवानी की आशिष होगी, मैं जीजा-प्रण निभाऊंगा ।।

[१५[

जब तक कल सूर्यास्त होगा, चक्षु खत-पंथ निहारेंगे ।
अगला उदय फिर कैसा होगा, यह रवि, व्योम बतायेंगे ।।

[१६]

दिनकर भी यों बोलेगा कि, मैं हूं तेरा महाकाल ।"
प्रत्येक किरण शर बनेगी, करेगी पान तव रक्तलाल ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[१७]

नभ भी जब नहीं चुप रहेगा, क्रोधित हो यों बोल उठेगा।
कुछ आशा-सितारे शेष थे, हो गए विलीन तव भाग्य फुटेगा ॥

[१८]

फिर रक्त देह का उबल पड़ेगा, समझा न सकूंगा जवानी को,
अरि गर्दने काट-काट मैं, चढ़ा दूंगा भवानी को ॥

[१९]

खड्ग म्यान से निकल जायेगा, काल तेरा बन जायेगा।
चम-चम करता रक्त पीकर, पुरानी प्यास बुझायेगा ॥

[२०]

फिर हय-टाप गूंज उठेगी, उड़ेगी धूल रण-प्रांगण में।
नृत्य करेगी मौत सिर पर, बिखर जायेंगे सिर-धड़ क्षण में ॥

[२१]

बम-बम-हर-हर गूंज उठेगा, थर्रायेंगे भू अम्बर फिर।
सवार, सवारों पर टूट पड़ेगा, दृश्य होगा भयंकर फिर ॥

[२२]

अरि धूल धरा की चाटेंगे, होगी 'अल्लाह' की करुण पुकार।
रक्त बहेगा नाला बनकर, जब-जब होगी सिंह-हुंकार ॥

[२३]

धन्य-धन्य वो जीजा माता, जिसने दिया शिवा मतवाला।
मातृ-भूमि को वंदन करता, पूर्ण करता यह खत 'लाला'

केवल इक्कीस रुपए दक्षिणा देकर
जन-ज्ञान में अपना वैवाहिक
विज्ञापन प्रकाशित करवायें !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संख्याओं का संसार

—विद्यापुत्र

गणित का अपना एक रोचक संसार है और उसकी अनंतता भी प्रकृति की अनंतता के इस सूत्र के ही अनुसार है कि सब कुछ अध्ययन की दृष्टि से असीमित है, अनंत है और पूर्णतया स्पर्श नहीं किया जा सकता। गणित में १० अंकों (अर्थात् ०,१,२,३,४,५,६,७,८,९) का राज्य है। इन अंकों से संख्यायें सभी बना लेते हैं पर क्या कोई भी व्यक्ति कभी यह कह सकता है कि बस इतनी ही संख्यायें बन सकती हैं, इससे अधिक नहीं? नहीं। निस्सन्देह उपनिषद् में कहा हुआ यह कथन सत्य है—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

(वह पूर्ण है, यह पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न हुआ है। पूर्ण के पूर्ण को निकाल लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है।)

अनंतता का चमत्कार

यह कितनी रोचक बात है कि १,२,३,४,…१००, १०१,…२००,… ३००,……, गिनते जाइए तब जिस अनंतता का दर्शन होता है, वही अनन्तता दशमलव वाली संख्याओं या भिन्नों के अंग-अंग में भी समाई हुई है। १.१ और १.२ के बीच में अनंत संख्यायें हैं, यही नहीं १.११ और १.१२ के बीच में भी उसी प्रकार अनंत संख्यायें हैं और १.१११ और १.११२ के बीच में भी। ठीक इसी प्रकार १ बटे ३ और १ बटे २ के बीच में भी अनंत भिन्नें अर्थात् संख्यायें हैं। इस अनंतता के लिए बड़े-से-बड़े वैज्ञानिकों ने सिर झुकाया है।

अंकों की नृत्यलीला

अनेक गणितज्ञों ने इन संख्याओं को अपना जीवन का एक बड़ा भाग समर्पित किया है और उनकी तालबद्ध नृत्यलीला को देखकर वे मुग्ध रह गए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। उदाहरण के लिए एक संख्या १४२८५७ को ही लें। इसे १ से ९ तक की संख्याओं से गुणा करें तो हमें क्रमशः ये संख्यायें प्राप्त होती हैं —

(१)	१४२८५७	(२)	२८५७१४
(३)	४२८५७१	(४)	५७१४२८
(५)	७१४२८५	(६)	८५७१४२
(७)	९९९९९९	तथा (८)	११४२८५६
(९)	१२८५७१३		

उपर्युक्त प्रथम छह संख्याओं में हमें संख्या १४२८५७ के ही छहों अंकों का नृत्य हो रहा है, यह समझने में देर नहीं लगती। सातवीं संख्या का रूप तो निराला ही है। आठवीं संख्या में मानो किसी अज्ञात कलाकार ने मूल संख्या १४२८५७ के ७ को १ व ६ में तोड़कर ६ को ७ के स्थान पर रखकर १ को दूसरे किनारे पर स्थापित कर दिया है। नवीं संख्या में भी ऐसा ही चमत्कार ४ के साथ किया गया है और उसके दो भागों १ व ३ को दाहिने सिरे पर पास-पास ही प्रतिष्ठित कर दिया गया है। इस संख्या को आगे की संख्याओं १०, ११ आदि से गुणा करने पर पाठकों को क्या रोचक जानकारी मिल सकती है, यह देखना चाहिए।

रूढ़ संख्याओं की जानकारी

गणितज्ञों के लिए रूढ़, संख्याओं (प्राइम नम्बर्स) का अध्ययन भी एक रोचक विषय रहा है। रूढ़ संख्याएं २,३,५,७,११,१३,१७ आदि वे संख्यायें हैं जिन्हें किन्हीं दो संख्याओं के गुणनफल के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता जबकि इन दो संख्याओं में १ को नहीं रखा गया हो। उदाहरणार्थ १११ रूढ़ संख्या नहीं है क्योंकि यह ३ × ३७ के रूप में रखी जा सकती है। अब प्रश्न किया जा सकता है कि रूढ़ संख्याएं कितनी हैं? उत्तर फिर वही मिलता है 'अनंत'। इन अनंत रूढ़ संख्याओं में से प्रारंभिक तो हमारी सुपरिचित हैं परन्तु गणितज्ञों में इस बात पर होड़ रही है कि ऊंची-ऊंची रूढ़ संख्याओं की खोज करते रहें। सन् १९५२ तक सबसे बड़ी रूढ़ संख्या १२७ बार लिखे गए २ की परस्पर गुणा से प्राप्त संख्या में से १ घटाकर प्राप्त होती है अर्थात् २ का वर्ग १२७-१ अर्थात् १७० १४१ १८३ ४६० ४६९ २३१ ७३१ ६८७ ३०३ ७१५ ८८४ १०५ ७२७ यह ३९ अंकों की संख्या है। आजकल इससे बड़ी अनेक रूढ़ संख्यायें ज्ञात हैं जैसे—२ का वर्ग ३२७१-१।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई संख्या किसी गणितज्ञ के कह देने से ही रूढ़ नहीं मान ली जाती। अब तो कम्प्यूटर की सहायता भी ली जाती है।

संख्याओं के जादूगर रामानुजम्

भारतीय गणितज्ञ रामानुजम् संख्याओं के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध हैं। यदि उनकी असामयिक मृत्यु न हो गई होती, तो उन्होंने अद्भुत चमत्कारों से भारत को और भी चमकाया होता। जब इंग्लैंड में एक चिकित्सालय में अस्वस्थ रामानुजम् को देखने गए गणितज्ञ प्रोफेसर हार्डी ने उनसे कहा था—"आज मैं जिस टैक्सी में आया हूं, उसका नम्बर १७२९ था, बहुत ही नीरस संख्या है यह तो।" तत्काल ही रामानुजम् ने कहा था—"इसे नीरस मत कहिए, क्योंकि यह एकमात्र संख्या है जो दो संख्याओं के घनफल के रूप में व्यक्त की जा सकती है।

देखिए—१० का घन धन ९ का घन = १७२९ और १२ का घन धन १ का घन = १७२९

प्रोफेसर हार्डी रामानुजम् की ऐसी ही मेधाशक्ति पर न्योछावर हो गए थे। बाद में रामानुजम् की भारत में मृत्यु के पश्चात् उनकी बिखरी गणितीय खोजों के कागज-पत्रों को प्रोफेसर हार्डी ने परिश्रमपूर्वक सम्पादित कर प्रकाशित किया था। स्वयं रामानुजम् के देश में भी आज रामानुजम् की गणित-साधना को समझने वाले विरले ही हैं। पर उन्हें महान् बनाने वाली शक्ति संख्याओं की साधना ही थी। निस्सन्देह यदि आज भारतीय विद्यार्थियों को गणित में रूचिशील बनाया जा सके तो भारत की वैज्ञानिक प्रगति के लिए अधिक सुदृढ़ आधार स्तंभ तैयार किए जा सकेंगे। □

अनमोल वचन

(१) मेरे दाहिने हाथ में कर्म है, बाएं हाथ में जय है।

—अथर्ववेद

(२) प्राणी कर्म का त्याग नहीं कर सकता, कर्मफल का त्याग ही त्याग है।

—गीता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पोप की भारत यात्रा के सन्दर्भ में

परमात्मा का सच्चा स्वरूप

—प्रतापशंकर पंड्या

ईसाई समुदाय के धर्मगुरु पोप जान पाल द्वितीय भारत पधारे और भारत ने उनका स्वागत किया जैसा वह चिरकाल से करता चला आया है। सत्य की निरन्तर शोध और मानव मात्र को उस सत्य से अवगत कराना और उनके जीवन को सत्य, सदाचार और संयम के मार्ग पर आरूढ़ करना, यह धर्माचार्यों का कार्य रहा है, और भारत इस कार्य में विश्व के सब देशों से अग्रणी रहा है। ऋग्वेद का जो समस्त मानव जाति का आदि ग्रंथ वाक्य है "आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः" सद् विचारों का पूरे विश्व से आमंत्रण है। उसकी ऋचायें मानव मात्र को संबोधित हैं और विश्व कल्याण के लिए लिखी हैं। उसने समस्त मानव जाति को एक माना है और सद्गुणों और अवगुणों के आधार पर ही शत्रु और मित्र के रूप में बांटा है। वह ईश्वर के मुख से निकला है। वह अनादिकाल से है, इसलिए सनातन है और मानव मात्र के कल्याण के लिए है। इसलिए सही मानव धर्म है।

सत्य असीम और अनन्त है। उससे किसी एक परिधि में नहीं बांधा जा सकता। उसके अनेक रूप हैं और विचित्र भाषाओं में वह अपने को व्यक्त करता है" (डा. राधाकृष्णन्)

विश्व में भौतिक प्रश्नों के अलावा कुछ मूल प्रश्न हैं। जीव कौन है, कहां से आया है, कहां जायेगा, आदि कहां है, अन्त कहां है, जीवन का उद्देश्य क्या है, व उसके कर्त्तव्य क्या हैं, यही "ब्रह्म जिज्ञासा" है, जिसके पीछे भारत सदियों से पागल है। चिरकाल से यहां शिष्य गुरु के चरणों में बैठकर अति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व को आश्चर्य करता आया है और यहां के गुरुओं, ऋषि-मुनियों उस ब्रह्म को जानने के लिए मनन, चिन्तन द्वारा जंगलों में घोर तपस्या क उस दर्शन की अनन्त गहराइयों तक पहुंचने की कोशिश की है। विभि धर्मगुरुओं—विद्वानों—चिन्तकों ने शास्त्रार्थ द्वारा उसकी त्रुटियों को हटा तर्क पर आधारित किया है। जो ज्ञान तर्क से परे है, वह योग और तप की अनुभूति पर आधारित है, लेकिन कहीं भी असंगत नहीं है। ऐसे ब्रह्मज्ञान गुरु निःस्वार्थ भाव से अपने शिष्य को देता रहा है और गुरु-शिष्य परम्परा हजा वर्ष से भारत में चली आ रही है। ज्ञान के आदान-प्रदान की उस परम्प को, विचारों की स्वतंत्रता को, भारत में जीवित रखना है। यह देखना है जबर्दस्ती या छल, कपट से किसी के अज्ञान और कमजोरी का लाभ उठा कोई धर्म जबरन किसी पर थोपा न जाए।

पोप राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी के मायके से पधारे। उन राजकीय सम्मान उचित ही था। कन्यादान के साथ कन्या पक्ष वाले कुछ देते ही हैं। कम से कम यही सद्भाव देकर जाएं। वे वेटिकन में भारत वैदिक, जैन, बौद्ध आदि धर्मों के अध्ययन की शाखा खोलने की अनुमति दे भारत की आम जनता और ईसाई समुदाय, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते उनके आपस के सम्बन्ध मधुर हों, एक-दूसरे के प्रति जो संदेह का भाव रहा है वह कम हो व यहां के ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण आदि ऐसे कि कार्य को प्रोत्साहित न करें, जिससे अपनी कटुता बढ़े और जिस तरह हि समाज सर्वधर्म समभाव व भाईचारे का निष्कपट व्यवहार करता है, वैसा आचरण वहां के ईसाई बंधु करें, ऐसा उन्हें निर्देश देकर जाते।

कुछ धर्मान्ध ईसाई भोली-भाली अनपढ़ जनता को बहका-फुसलाकर ई बना लेते हैं और उनके अन्दर फिर यहीं के हिन्दुओं के प्रति घृणा का भ फैलाते हैं, जिससे वे पुनः हिंदू न बन जायें तथा उन्हें विश्व के ईसाई समुद के साथ जोड़कर अपने राष्ट्र-संस्कृति, अपने-तीर्थ मंदिर व अपने ही हि भाइयों से विमुख कर देते हैं।

बर्मिंघम की "स्प्रिंग इंटरनेशनल" इवेनजलिकल संस्था ने २ घंटे प्रोग्राम चैनहैटेन केबल टेलीविजन नेटवर्क पर दिखाया कि हिंदू धर्म व हि समाज घोर अंधकार व धर्मान्धता में डूबा है। कोई प्रार्थना करता है, कं ध्यान लगाता है, कोई बलि देता है। ईसा का संदेश ही उनकी मुक्ति क

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है और वे ईसाई धर्म अपनाने को तैयार बैठे हैं। दूसरी रिपोर्ट विश्व इवानजेलिस्ट, लोसान कमेटी की है यह रिपोर्ट बड़ी है। इसमें किस तरह हिंदुओं को ईसाई बनाया जाये—इसका गहन अध्ययन करके उपाय सुझाये गये हैं, उनका सार यह है—

भारत सहित पूरे विश्व में बसे ५६ करोड हिन्दुओं में ईसा का पूर्ण प्रभाव हो, इसके द्वार खुल चुके हैं, उन्होंने प्रसन्नता दिखाते हुए कि "सर्वेन्ट्स आफ गाड" यानी ईसाई मिशनरी २ करोड़ हिन्दुओं को ईसाई बनाने में सफल हुए इस पर दुःख व्यक्त किया कि पूरा हिंदू समाज अभी तक ईसाई नहीं बनाया जा सका। उन्होंने रिपोर्ट में सुझाव दिया है कि अभी तक मिशनरी शहरी इलाकों पर ध्यान देते रहे हैं। अब उन्हें अपनी प्रचाररूपी बंदूकें गांवों की ओर घूमानी चाहिए जहां ८० प्रतिशत हिंदू रहते हैं। हिंदू धर्म के इतिहास का गहन अध्ययन करने के बाद उन्होंने रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला है कि आम हिंदू हजारों वर्ष पुराने अपने वैदिक दर्शन से दूर जा रहा है और इस समाज का रूढ़िवादी वर्ग कर्मकांड, अंधविश्वास, जादू-टोना मंदिर, संम्प्रदाय तथा पुराने कुल के रीति-रिवाजों में विश्वास करता है। धीरे-धीरे उनकी इन कमजोरियों पर प्रहार करके अपने धर्म की, ईश्वर की महत्ता बताकर उन्हें ईसाई बनाना होगा। उन्हें अपनी सेवा, दवा, अस्पताल की सुविधाओं के अहसान में लेकर उनके मन को जीतना और फिर अपना ध्येय प्राप्त करना होगा।

इस बात को बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने समझा था और कहा था कि जो मिशनरी अस्पताल, कान्वेंट स्कूल आदि सेवा के नाम पर खोला जाता है वो धोखा है, सेवा नहीं, क्योंकि उसके पीछे धर्म-परिवर्तन का स्वार्थ छिपा है। उनके वाक्य हैं "धर्म परिवर्तन वह तीव्र विष है, जिसने सत्य के आधार को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि अगर हमारे हाथ में होता तो हम कानून से धर्म-परिवर्तन बंद कर देते।

कनाडा के लाल सरदाना नामक पत्रकार ने अमेरिकी मिशन के एक प्रचारक से जब प्रश्न किया कि ईसाई बनाने में आपको ज्यादा सफलता किधर मिली तब उसने बताया कि पाकिस्तान, बंगलादेश आदि में जरा भी दाल नहीं गलती; हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहां आशातीत सफलता मिली है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस स्थिति के लिए हिंदुओं की अतिशय उदारता और दूसरे धर्मों के प्रति भी आदर का भाव, सर्वधर्मसमभाव ही जिम्मेदार हैं : हिंदू हजारों साल के इतिहास में कभी अनैतिक व धर्मान्ध नहीं हुआ, क्योंकि उसने माना है कि सत्य का स्वरूप अनन्त, असीम है, ईश्वर के सिवा पूर्ण रूप से उसे कोई नहीं जान सकता। इसलिए सत्य के शोध में वह कभी बाधक नहीं बना। विचारों का खुला आदान-प्रदान, शास्त्रार्थ द्वारा निर्णय, हारने वाले को भी अपने विश्वास से आदर के साथ जीवित रहने का अधिकार, सहिष्णुता—उसकी यही परिपाटी रही है, जो आज तक अक्षुण चली आ रही है।

इसका उदाहरण हम आज भी देख सकते हैं।

जो सत्य की अनुभूति यहां के धर्माचार्यों, साधकों को हुई, उसमें जो दिव्यता, मन की शांति उन्हें प्राप्त हुई उसे पूरे मानव समाज को देने के लिए वे आतुर रहे। इसलिए महान् संतों ने पहले खुद तपस्या द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त किया, फिर लंगोटी लगाकर निकल पड़े। उनके पीछे किसी संस्था की, राज्याश्रय की, ताकत नहीं थी, न कोई छल, फ़रेब से, गरीबी, अशिक्षा, का फायदा उठाकर किसी का धर्मपरिवर्तन करने की नीयत थी। बल्कि परम शक्तिशाली भौतिक विज्ञान में प्रबुद्ध और समृद्ध जनता को, जो अपनी इच्छाओं की गुलाम होकर वासनाओं की तृप्ति के पीछे निरन्तर भाग रही है, सच्चा सुख, मन की शांति और सत्य की एक झलक दिखलाने का उद्देश्य था। जो जन समाज रात दिन अपने भौतिक सुख में लीन, विज्ञान की नई-नई खोजों से अपने अहं की तुष्टि में लगे थे, उन्हें अपने असली आत्मत्व को पहचानने के लिए प्रेरित किया। यह महान् दर्शन दिया कि सब कुछ उसी से उत्पन्न होता है और उसी में लय हो जाता है। उस ज्ञान की झलक पाकर अपने पराये का भेद भी मिट जाता है। बच जाता है केवल शुद्ध पवित्र मानववाद।

इसके सामने बीसवीं सदी में निकले सभी वाद, जैसे पूंजीवाद, समाजवाद बौने और अर्थहीन हो जाते हैं। इस दर्शन की थोड़ी झलक मिलने के बाद विज्ञान का दर्शन, विज्ञान की उपलब्धियां इस ब्रह्म की सर्वव्यापी शक्ति का एक तुच्छ अंश मात्र लगता है। वैज्ञानिकों की उपलब्धियों का अहंकार नष्ट हो जाता है। जैसा कि आईस्टान को जीवन के आखिरी क्षणों में में हुआ था। उन्हें उन आखिरी क्षणों में ब्रह्म की, प्रकृति की सगन्वयात्मक महान् शक्ति की थोड़ी झलक मिली। उन्हें लगा कि उनका सारा जीवन यों ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यर्थ चला गया थोड़ी जीवन और मिल जाता तो ब्रह्म जिज्ञासा में ही लगता।

आत्मचिन्तन का मार्ग जिन्हें कठिन लगता है उनके लिए अन्य मार्ग हैं। योग मार्ग, भक्ति मार्ग, मंत्र साधना मार्ग आदि। ये सभी हिन्दू सनातन धर्म के अंग हैं। परम तत्त्व परब्रह्म को पहचानने, प्राप्त करने के विविध साधन हैं। इन सभी विभिन्न संप्रदायों की आस्था वेदों पर है और लक्ष्य सबका एक है। परब्रह्म जो सर्वशक्तिमान् है, उसे करोड़ों नामों से चाहे, पुकारे, अथवा अनेक स्वरूपों में देखें, कोई फर्क नहीं पड़ता। वे विविध अनेक मार्ग उस राजमार्ग में मिल जाते हैं जिससे पकड़कर साधक अपने गंतव्य को पहुंच जाता है। हिन्दुओं के करोड़ों देवता, उनके अनगिनत नाम, व उनकी अलग-अलग साधना, सब उसी सर्वशक्तिमान् परब्रह्म की साधना है, इसे हिंदू ही समझता है।

इतिहासज्ञ पी० एन० ओक ने अपनी पुस्तक "वर्ल्ड वैदिक हेरिटेज" में विश्व के अनेक भागों में जो प्राचीन उल्लेख प्राप्त हुए हैं, उनसे यह साबित करने की कोशिश की है कि पूरे विश्व में यह वैदिक संस्कृति और देवनागरी लिपि फैली हुई थी।

यूरोपीय देशों का क्राइस्ट के बाद का इतिहास मार-काट से भरा है। साम्राज्यवादी व विस्तारवादी ईसाई मिशनरी अशिक्षित कमजोर वर्ग के लोगों में यही प्रचार करते हैं कि ईश्वर के पास बिना ईसामसीह के नहीं पहुंचा जा सकता क्योंकि सिर्फ वही उनके एकमात्र पुत्र हैं। मनुष्य पापी है। साल में एक बार पाप को पादरी के पास स्वीकार कर लो, पाप से मुक्त हो जाओगे, फिर चाहे पाप में लग जाओ। यह ऐसा तर्कहीन दर्शन है कि किसी के गले नहीं उतर सकता।

हर धर्म अपना विस्तार करना चाहता है। तर्कसंगत, प्रेमयुक्त धर्म के विचारों की प्रबलता के कारण, बिना हिंसा छल कपट के बुद्धिजीवी समाज में अपने आप बढ़ता है। जैसे किसी वक्त में समस्त हिन्दू दर्शन जिसमें सनातन वैदिक धर्म, जैन, बौद्ध धर्म आदि आते हैं सारे विश्व में दूर-दूर तक फैले थे।

प्रकृति या ईश्वर, उसके नियम एक हैं जो उन नियमों का सही उपयोग करता है, वही ईश्वर के सबसे अधिक नजदीक है। जो प्राणिमात्र में दया उत्पन्न करता है। संवेदनशील है, निष्कपट, प्रेम कर सकता है वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सही धर्म है। जो संदेह, छल, कपट, विश्वासघाती प्रवृत्तियों में धर्म के नाम पर लगता है वह धर्म को गलत रास्ते पर ले जाता है। प्रसलन जो हिन्दू अपने कमजोर वर्ग के भाइयों जैसे हरिजन आदिवासी, गरीब ब्राह्मण आदि के प्रति भेदभाव पूर्ण वर्ताव करता है वह पाखंडी है, सच्चा हिन्दू नहीं है। जो ईसाई या मुसलमान उस वर्ग की कमजोरी का नाजायज फायदा उठाकर लोभ, लालच, दबाव में लाकर उसके पैतृक मूल धर्म से अलग करके उसका धर्मान्तरण करता है और अपने पूर्वजों और मातृभूमि के प्रति आस्था मिटाकर मक्का, मदीना या यरूशलम या रोम में नयी आस्था पैदा करना चाहता है वह स्वार्थी राजनीतिज्ञ है —धार्मिक नहीं, जिसका उद्देश्य सिर्फ विश्व में अपना जातीय संतुलन बढ़ाकर शक्ति पैदा करना है। जब कई धर्म एक साथ इस प्रवृत्ति में लगेंगे तो आपस में टकराव होगा। युद्ध होगा युद्ध होगा यानी मानव जाति का पूर्ण विनाश। हम निर्णय करें कि हमें क्या करना है। धर्मांधों के पीछे भागना है और अपना विनाश मोल लेना है या सहिष्णुता और सर्वधर्मसमाव को अपनाना है, मानव धर्म को अपनाना है। धर्मांधता का नतीजा भी सामने है। लेबनान में ईसाई और मुसलमान एक-दूसरे का गला गला काटने में संलग्न हैं। ईरान—इराक दोनों ही मुस्लिम देश हैं लेकिन आपस में युद्धरत हैं।

प्रसिद्ध दार्शनिक अर्नोल्ड टायनबी ने कहा है कि आज मानव इतिहास के अत्यन्त खतरनाक नाजुक क्षणों में मनुष्य जाति के उद्धार का एक ही रास्ता दिखता है जो सिर्फ इंडियन यानी भारतीय रास्ता है। यही वह विश्वबंधुत्व की भावना सही रूप में दिखाती है जिसके द्वारा संपूर्ण मानव जाति एक कुटुम्ब के रूप में दृढ़ सकती है। और इस अणुयुग में यही एक मात्र रास्ता दिखता है जिससे हम अपने को विनाश से बचा सकते हैं।

धर्म और विज्ञान के समन्वय के लिए एक वर्ल्ड कांग्रेस बुलाई गई थी जिसमें विश्व के महान् दार्शनिक व वैज्ञानिक आये थे। स्टेज पर बड़े अक्षरों में लिखा था अथातो ब्रह्म जिज्ञासा वैज्ञानिकों का भी यही मत था कि सत्य शोध ही विज्ञान का भी उद्देश्य है। उन्होनें घोषणा व प्रस्ताव किया कि जब विज्ञान का दुरुपयोग गलत हाथों में होने लगेगा तब विश्व का विनाश निश्चित है। और उसके साथ समस्त मानव जाति उसका धर्म और विज्ञान की उपलब्धियां नष्ट हो जायेंगी। अणु युद्ध की छाया में मानव जाति वर्षों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से जी रही है। इन मानव पुत्रों को इस तरह कब तक जीना होगा? एक वर्ष, दो वर्ष, पांच वर्ष। कोई नहीं कह सकता। यह स्थिति असह्य है। यह रुकनी चाहिये। विश्व की कुछ बड़ी ताकतें जिन्होंने पूरे मानव समाज को बंधक बना रखा है, इसे रोकें।

हिन्दू धर्म मानव का मूल धर्म है। इसके समस्त दर्शन में विश्व का कल्याण निहित है। आध्यात्मिक उपलब्धियों का पूर्ण मार्गदर्शन है। ऋषियों वर्ष की तपस्या और गहन अध्ययन की अनुभूतियां उसके धर्म ग्रन्थों में संजोई गई हैं। उनकी रक्षा करना हर बुद्धिजीवी, विचारवान् व्यक्ति का कर्तव्य है। आज विश्व को रेगन, गोर्बाचोव, खुमैनी जैसे की नहीं बल्कि गांधी, बुद्ध, महावीर जैसी महान् आत्माओं की जरूरत है।

जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

—यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।

—आपके उत्पादन-संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।

—जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।

—एक यज्ञ है यह, आप इसमें आहुति भी देंगे—जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दक्षिण-पूर्व एशिया में हिन्दू संस्कृति

---ऋषि कुमार

रामायण के माध्यम से श्रीराम का जीवन और उसमें बताए गए आदर्श हजारों वर्षों से हिन्दू समाज को प्रेरणा देते आ रहे हैं, और भविष्य में भी देते रहेंगे। किन्तु श्रीराम के जीवन-आदर्शों की यह प्रेरणा भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि इन आदर्शों का प्रचार-प्रसार अनेक देशों में फैला हुआ है और उन देशों के लोग भी श्रीराम को आदर्श पुरुष मानते हैं।

विभिन्न देशों में राम की जीवन कथा का प्रमाण हजारों वर्ष पूर्व से मिलता है। मध्य एशिया में यीशु क्रीस्ट का जन्म हुआ था और उनके जन्म के भी हजारों वर्ष पूर्व "लोकस" नामक एक सन्त का जन्म भी उसी स्थान पर हुआ था। लोकस के जन्मकाल में इजिप्ट (मिस्र) में राज कर रहे राजा का नाम "रमेशस" यानी रमेश था। पश्चिम के अनेक देशों को तो रामायण ने प्रभावित किया ही है, किन्तु भारत के पूर्व में स्थित थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, वियतनाम इत्यादि देशों को भी श्रीराम के जीवन ने अत्यधिक प्रभावित किया है।

रामचन्द्र जी का जन्म इक्ष्वाकू वंश यानी सूर्यवंश में हुआ था। जापान के लोग भी अपने आपको सूर्यवंशी कहते हैं। वे अपने प्राचीन इतिहास को रामायण के साथ जोड़ते हैं।

थाईलैंड की हर गली राममय—थाईलैंड के राजा को "राम" नाम से ही सम्बोधित किया जाता है। वर्तमान राजा का नाम है—"भूमिपाल अतुल्य तेज राम-नवम"। वे चक्रीय वंश के राजा हैं। इस वंश के हरेक राजा को "राम" नाम से सम्बोधित करने की परम्परा रही है। राम (नवम) का अर्थ यही है कि इससे पूर्व राम-प्रथम, राम द्वितीय, राम-तृतीय, राम-चतुर्थ के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रम से नव राम-नवम सिंहासनारूढ़ हैं। बैंकाक की अनेक सड़कों का नाम भी राम के नाम पर ही रखा हुआ है जैसे राम-वन-स्ट्रीट, राम-टू-स्ट्रीट आदि। आज थाईलैंड की राजधानी भले ही बैंकाक हो लेकिन कुछ वर्ष पूर्व इसकी राजधानी का नाम अयोध्या था। थाईलैंड में एक प्रसिद्ध बैंक भी है जिसका नाम है "बैंक आफ अयोध्या"। इनकी हांककांग, मलयेशिया, सिंगापुर आदि देशों में भी अनेक शाखाएं हैं। इसी प्रकार बैंकाक के एक विशाल होटल का नाम है "हयात रामा"। थाई भाषा की रामायण का नाम "राम कीर्ति" है। रामायण में वर्णित अनेक नामों के आधार पर थाईलैंड के स्थानों के नाम रखे गये हैं।

बैंकाक से कुछ सौ मील दूरी पर एक लघु थाईलैंड, यानी प्राचीन थाई देश का लघु आकार बनाया गया है। इसका आकार सम्पूर्ण थाईलैंड की अनुकृति ही है। इसमें अलग-अलग प्रान्तों के छोटे-छोटे प्रतिरूप बनाये गए हैं। इसे हम कार में घूमकर देख सकते हैं और इस प्रकार एक ही परिक्रमा में सम्पूर्ण थाई देश के दर्शन किये जा सकते हैं।

मैं जब इस स्थान पर गया तो मुझे "टूरिस्ट गाइड" ने हरेक स्थान का जो परिचय दिया वह आह्लादकारी था। उसने कोई स्थान दिखाकर कहा, यह राम का जन्म स्थान "अयोध्या" है, यह किष्किंधापुरी है, यह पंचवटी है, यह लंका है। यहां पर वह सीता जी, अशोकवट, हनुमान इत्यादि का वर्णन इस प्रकार कर रहा था मानो रामायण की सम्पूर्ण घटनाएं थाई देश में ही हुई हों।

थाईलैंड और मलयेशिया में एक प्राचीन मनोरंजन का खेल है जिसे "जय कुलित" कहते हैं। यह "छाया खेल" है। यह रामायण, महाभारत और भागवत पुराण की कथाओं पर आधारित हैं। इसमें एक कलाकार पर्दे के पीछे खड़ा होकर हाथ हिलाता है और उसके इशारे में पर्दे के सामने वाले चित्र राम, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सीता इत्यादि के होते हैं। हाथों को हिलाने के साथ ही सारी कथा का वर्णन भी कविता के रूप में किया जाता है। राम कथा का यह रूप न केवल थाईलैंड बल्कि मलयेशिया, इन्डोनेसिया, वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस इत्यादि देशों में भी देखने को मिलता है।

थाईलैंड (बैंकाक) में भगवान् बुद्ध का एक मन्दिर है जिसे इमोरल्ड बुद्ध टेम्पल कहते हैं। मन्दिर के बीच में बुद्ध की मूर्ति और दीवार के चारों ओर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामायण के रंगीन चित्र बनाये गये ई भाषा में रामायण की कविता भी लिखी गई है। हांगकांग में एक इन्डो-सियन रेस्टोरेन्ट का नाम है "रामायण"। इसके विपरीत भारतीय लोग अंग्रेजी नाम रखते हैं।

इस्लामी देश में हिन्दी संस्कृति—मलय भाषा में पत्नी को "श्री" और पति को "स्वामी" कहा जाता है। इसी प्रकार उनकी भाषा में शक्ति, भक्ति, वनिता, प्रथमा, द्वितीया जैसे संस्कृत शब्दों का भी बाहुल्य है। मलयेशिया के बनाइट इस्लामी देश की राजधानी का नाम 'सुन्दर श्री भगवान-सी पार्ट' है। एक मुस्लिम राष्ट्र की राजधानी का नाम श्री भगवान् होने से इस क्षेत्र में भारत के सांस्कृतिक प्रभाव को आसानी से समझा जा सकता है। मुस्लिम देश होने के बावजूद ये देश हिन्दू संस्कृति को जीवित और सुरक्षित रखे हुए है क्योंकि तलवार के बल पर नहीं बल्कि सामंजस्य के बल पर वहां यह संस्कृति पहुंची है।

कम्बोडिया (कम्पूचिया) के इतिहास में वर्णन है कि वहां एक 'कौंडिन्य' नामक ब्राह्मण आए थे और वे अपने साथ बहुत-से कपड़े आदि लाए थे उन्होंने यहां के लोगों में बांट दिया था। इससे प्रभावित होकर वहां की राजकन्या ने उनसे विवाह कर लिया और तब से यहां हिन्दू राज्य स्थापित हुआ।

जहां भी हिन्दू गए वहां उन्होंने मन्दिर तो बनाए ही, लेकिन विश्व में सबसे बड़ा मन्दिर कम्बोडिया के अंकोरवाट में है। दसवीं शताब्दी में हिन्दू राजाओं द्वारा ही इसका निर्माण किया गया था।

वियतनाम का प्राचीन नाम चम्पा देश था इसी प्रकार लाओस का पुराना नाम लवदेश है। फ्रेंच में अपभ्रंश होकर यह लाओस बन गया। ज्ञातव्य है कि बाली द्वीप में ईसाई मिशनरी और मुसलमान भी गए थे लेकिन यहां के हिन्दू राजाओं ने उन्हें युद्ध करके रोका इसलिए हिन्दू संस्कृति वहां आज भी जीवित है। इस द्वीप में २ लाख हिन्दू हैं लेकिन सम्पूर्ण व्यवस्था हिन्दू संस्कृति पर ही आधारित है। यहां अनेक छोटे मंदिर समूहों में एक बड़ा मंदिर होता है। इसी प्रकार सारे राष्ट्र का एक प्रमुख मन्दिर है जिसे 'बैसाकी' कहते हैं।

इन्डोनेसिया में हिन्दू धर्म की शिक्षा—इन्डोनेसिया में हिन्दू धर्म की शिक्षा के लिए एक महाविद्यालय है। सरकार की ओर से भी हिन्दू धर्म की शिक्षा अनिवार्य बना दी गयी है। यहां ईसाई, बौद्ध, हिन्दू आदि धर्मों में से किसी एक की शिक्षा अनिवार्य रूप से ग्रहण करनी पड़ती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनोहारी संयोजक सूत्र—इन देशों में हिन्दू संस्कृति एक मनोहर संयोजक और समन्वय सूत्र का काम कर रही है। इसीलिए ये देश राजसत्ता और राजनैतिक चरित्र में निरंतर परिवर्तन के बावजूद हिन्दू संस्कृति का दामन थामे हुए हैं। हिन्दू संस्कृति का यह संरक्षण नामों में ही नहीं, विभिन्न प्रतीकों में भी है।

कुआलालम्पुर में अनेक ट्रांसपोर्ट कम्पनियां हैं। उनमें से एक का नाम है "श्री जया"। मलयेशिया में मूल निवासियों के अलावा १० लाख भारतीय हिन्दू भी हैं। मलयेशिया इस्लामी देश है लेकिन यहां पर चीनी और भारतीय मूल के लोग भी रहते हैं। एक राष्ट्र में तीन प्रमुख जातियों में एकता के लिए मलय भाषा सीखने का आग्रह किया जा रहा है। मलय टेलिविजन पर एक उद्घोष बार-बार दिखाई देता है—"भाषा ही राष्ट्र की जीवनदायी शक्ति होती है।"

दूरदर्शन केन्द्र को "आकाशपुरी", समाचारों को "वार्ता" और प्रधानमंत्री को महावीर मुहम्मद कहते हैं। इस प्रकार एक इस्लामी देश में श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति को सम्पूर्ण रूप से ग्रहण करने में गौरव अनुभव किया जाता है।

थाईलैंड में भी इसी प्रकार भारतीय परम्परा वाले नाम और प्रतीक मिलते हैं। वहां प्रधानमंत्री का नाम प्रेम त्रिसुलानन्दा है और सैनिक जरनल का नाम आदित्य है। बड़ी-बड़ी इमारतों का नाम भी "मन्त्ररत्न", "छाया" आदि संस्कृत शब्दों पर आधारित है। मलय लोगों के दैनिक आचरण में भी भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती। वे हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं। पान-सुपारी देकर अतिथि का सम्मान करते हैं। भूमि पर पद्मासन की स्थिति में बैठकर भोजन करते हैं। पान-सुपारी देकर अतिथि का सम्मान करते हैं। धार्मिक अवसरों पर हल्दी, कुंकुम और अक्षत से आशीर्वाद दिया जाता है। बड़े लोगों का आदर किया जाता है। बैंकाक में भिक्षुओं, महिलाओं, और वृद्धों का असीम सम्मान किया जाता है। इस श्रेष्ठ संस्कृति का श्रेय वे भारतीय लोगों को ही देते हैं। थाईलैंड को वहां की भाषा में श्याम देश कहते हैं। उनके राष्ट्रगीत में भी थाईलैंड का नाम श्याम देश ही है—श्याम यानी भगवान् विष्णु का रंग। पीनांग (मलेशिया) के एक विश्वविद्यालय में आचार्य को "गुरू", "महागुरु" और विद्यार्थियों को महाशिष्य कहते हैं। छात्रावासों के नाम "भक्ति" और "शक्ति" जैसे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मलय का शब्द कोष इतना समृद्ध नहीं है, फिर भी अपनी भाषा में ही उन्होंने उच्च शिक्षा की व्यवस्था की है। थाईलैंड और इन्डोनेसिया में संस्कृत अध्ययन पर काफी ध्यान दिया जाता है। अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग हैं। इनसे संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापक संस्कृत में एम.ए. पी एच. डी. होते हैं। थाईलैंड के मूल निवासियों ने भारत में आकर संस्कृत का अध्ययन किया है और अब वहां संस्कृत पढ़ाते हैं। इस्लामी मलयेशिया में कुर्ता और टोपी पहनने का आग्रह किया गया तो भारतवासियों ने विरोध किया। इस पर मलय मंत्रियों ने समझाया कि यह तो भारतीय परम्परा ही है। समारोहो पर्वों और दीक्षांत समारोहों में वहां इसी भारतीय वेश का आग्रह रहता है। मलयेशिया में सैनिक को "पहलवान" कहते हैं और सैनिकों के लिए प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र का नाम भी "पहलवान" है। आजकल कुछ कट्टरपंथी मुसलमान भारतीय संस्कृति के प्रतीकों का विरोध करने लगे हैं और कहते हैं कि वहां अरबी संस्कृति का ही प्रचार-प्रसार हो लेकिन वर्तमान मलय सरकार वहां मलय संस्कृति का मूल चरित्र ही बनाये रखना चाहती है, क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि यह संस्कृति मर्यादाओं पर आधारित है और राष्ट्र को जोड़े रखने का दृढ़ संयोजक सूत्र है। आश्चर्य इस बात का है कि हजारों मील दूर रहकर भी उन्होंने भारतीय संस्कृति को बचाकर रखा है। मलयेशिया की एक करोड़ तीस लाख आबादी में दस लाख हिन्दू हैं लेकिन अल्पसंख्यक होने के बावजूद अपनी जागरूकता के कारण वे अपनी श्रेष्ठ संस्कृति को पूर्व समान ही समृद्ध बनाकर रख सके हैं। कुल जनसंख्या में भारतमूलक १० प्रतिशत, चीन मूलक ३५ प्रतिशत और मलय ४० प्रतिशत तथा शेष वनवासी हैं।

और अब संक्रामण का दौर—भारतीय लोग हिन्दू, मलयी इस्लामी और चीनी बौद्ध के अनुयायी हैं। चीनी लोग व्यापार में और मलय सरकारी नौकरियों में आगे हैं। भारतीय लोग अन्य कार्य करते हैं।

यहां का श्रमिक संगठन (ट्रेड यूनियन) भारतीयों के हाथ में है। वैसे यहां धर्म परिवर्तन तेजी से जारी है किन्तु अनेक संस्थाएं हिन्दू संस्कृति की रक्षा का काम कर रही हैं। इनमें से एक का नाम है "मलयेशिया हिन्दू संगम"। इसके वर्तमान अध्यक्ष हैं डा० एस० एम० पुनैया। इन्होंने हिन्दू संस्कृति पर ही पी० एच० डी० की है। एक संस्था का नाम "मलयेशिया हिन्दू यूथ कौंसिल" है। तीसरी संस्था है "नेताजी रिसर्च सेन्टर"। नेताजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का प्रभाव सिंगापुर, मलयेशिया, और थाईलैंड में रहा है। उन्होंने हिन्दुओं को संगठित किया और सैनिक शिक्षा दी। यहां उत्तर और दक्षिण भारत के लोगों ने अनेक मन्दिर बनाये हैं और अनेक भारतमूलक संस्थाएं सांस्कृतिक कार्य कर रही हैं। यहां सनातन धर्म सभा और सनातन धर्म युवक सभा भी कार्यरत हैं। लक्ष्मीनारायण मन्दिर यहां सबसे बड़ा है। इसमें प्रति रविवार को उत्तर भारत के हिन्दू सपरिवार पूजा के लिए आते हैं। अब हर रविवार को यहां बच्चों के लिए सांस्कृतिक और हिन्दी शिक्षण वर्ग भी आयोजित किया जाता है।

यहां १९८२ के दीपावली पर्व में दक्षिण भारतीय लोगों के साथ कुछ समय रहा। दुर्भाग्य से वे लोग इस बात से खिन्न हैं कि कुछ भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रचारक यहां प्रवचनों की फीस माँगते हैं। मुझे भी इसका कटु अनुभव हुआ लेकिन जब मैंने डा० पुनैया से कहा कि मैं तो केवल आपकी मदद करना करना चाहता हूं तो उन्होंने हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने विश्व हिन्दू परिषद् की सेवावृत्ति की सराहना की। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि भारत के दूतावास ने भारत में किसी हिन्दू की जानकारी उन्हें नहीं दी। उन्होंने अपने राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए भारत को आमंत्रण दिया और श्री गोपालन् जी तमिलनाडु से उसमें भाग लेने गए।

अनेक संस्थाओं द्वारा धर्मप्रचार—विश्वव्यापी सांस्कृतिक और राजनैतिक उथल-पुथल के इस दौर में कुछ संस्थाएं प्रामाणिकता से संस्कृति संरक्षण का काम कर रही हैं। डिवाइन लाइफ सोसायटी ने भी यहां काफी काम किया है। सां ई बाबा सेन्टर के भी कई केन्द्र हैं। प्रति गुरुवार वे भजन-कीर्तन करते हैं। एक केन्द्र पर ९२ लोग देखे गए। इनमें दो हिन्दू शेष सभी चीनी थे। नागप्पा नामक एक कार्यकर्त्ता वहां धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया को रोक रहे हैं। वैद्यलिंगम् भी एक ऐसे ही कार्यकर्त्ता हैं।

इनकी सहायता से हमने १९८३ में ७ दिन एक प्रशिक्षण वर्ग लगाया था। इसमें भारतीय संस्कृति की जानकारी दी गई। अब यहां इस प्रकार के प्रशिक्षण वर्ग प्रायः लगते हैं। इन से धार्मिक जागृति और संस्कृतिक चेतना बढ़ी है। इस प्रकार विदेशों में अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के लिए वहाँ की हिन्दू संस्थाएं और कार्यकर्त्ता पूरी सजगता से जुटे हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समझदार मुसलमान भाइयों से

--युगल किशोर चतुर्वेदी

(भूतपूर्व मन्त्री राजस्थान)

हाल ही में न्यायालय के निर्णय के आधार पर अयोध्या स्थित राम जन्म-भूमि मन्दिर का ताला खोला जाकर वहां राम के भक्त हिन्दुओं को दर्शन करने की अनुमति मिल जाने पर हमारे मुस्लिम भाइयों का बेहद नाराज होना और उसके विरोध में स्थान-स्थान पर भीषण आंदोलन करना अपनी मजहबी मदान्धता का परिचय देना ही है।

विशेषतः उसके विरोध में गत १३ फरवरी को दिल्ली की जामा मस्जिद के इर्दगिर्द जिस प्रकार का भद्दा प्रदर्शन हुआ और उससे भड़काने के लिए शाही इमाम बुखारी तथा सांसद शहाबुद्दीन ने जैसे उत्तेजक भाषण दिए, उनसे पिछले ८०० वर्ष के मुस्लिम शासन कालीन ऐतिहासिक घटनाओं की स्मृति ताजी हो गई।

भारत की अपार सम्पत्ति और उसकी कुछ अन्य विशेषताओं से आकृष्ट होकर विदेशी शक्तियों ने इस पर समय-समय पर अनेक आक्रमण किये थे जिनका आरम्भ सिकन्दर के आक्रमण से हुआ था और उसके उपरांत शक, सीथियन, हूण आदि दल-बल सहित यहां आते रहे थे, परन्तु उन्होंने यहां, अपने अस्तित्व के कोई विशेष चिन्ह नहीं छोड़े, बल्कि उनमें से अधिकतर जातियां तो यहां के मूल निवासियों के धर्म, सभ्यता और संस्कृति को अपना-कर उनमें ऐसी घुल-मिल गईं कि अब उनका पता लगाना भी मुश्किल है।

परन्तु उनके पश्चात् मुहम्मद बिन कासिम से लेकर अहमदशाह अब्दाली तक मुसलमानों के जो आक्रमण हुए, उनका उद्देश्य यहां की कल्पनातीत अपार सम्पत्ति को लूटना, हिन्दुओं के मंदिरों को तोड़ना, मूर्तियों को खंडित करना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और यहां के निवासियों को इस्लाम में दाखिल करना था, इसलिए महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी आदि जितने भी आक्रमणकारी आये, उन्होंने इस प्रवृत्ति का प्रत्यक्ष परिचय दिया था, जिसका प्रमाण सोमनाथ तथा मथुरा और कन्नौज के अनेक मंदिरों को तोड़ने तथा उनका धन लूटने से मिलता है। इसी शृंखला की कड़ी के रूप में अयोध्या की श्रीराम जन्म भूमि, मथुरा की श्रीकृष्ण जन्म भूमि तथा वाराणसी का विश्वनाथ मंदिर आते हैं, जिन्हें तत्कालीन मुस्लिम शासकों ने तुड़वाकर वहां मस्जिदें बनवाई थीं।

इतना ही नहीं, उन्होंने हिन्दू पुरुषों को तलवार के बल पर मुसलमान बनाने के अतिरिक्त उनकी स्त्रियों को भी जबरन अपने घर में डाला था। इसी का यह परिणाम था, जो इतिहासकार लेनपूल के मतानुसार अरब, ईरान आदि देशों से केवल ५० लाख मुसलमानों के ही यहां आने पर लगभग यहां १५ करोड़ मुसलमान हो गये थे।

मुसलमान शासकों की इसी मनोवृत्ति की परिचायक उनके द्वारा बलात् मुसलमान बनाने के लिए अनेक निरीह और निर्दोष व्यक्तियों की, जिनमें गुरु तेगबहादुर, बन्दा बैरागी, गुरु गोविन्दसिंह के पुत्र तथा स्वयं गुरु गोविन्दसिंह, बालक हकीकत राय के अतिरिक्त वर्तमान काल में पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल आदि की हत्या की गई।

मुसलमानों की सहान्यता के विपरीत हिन्दू शासकों की सहिष्णुता तो इसी से सिद्ध होती है कि इतिहास में एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा, जिसमें किसी हिन्दू राजा ने मुसलमानों को बल पूर्वक हिन्दू बनाया हो, मस्जिदों को तोड़ा हो या मुस्लिम महिलाओं को जबरन अपनी पत्नी बनाया हो, जिसका सबसे बड़ा प्रमाण छत्रपति शिवाजी के उस आचरण से मिलता है जिसमें उसने अपने सैनिकों द्वारा लाई हुई एक सुंदर शहजादी तथा कुरान शरीफ की प्रति को यह कहकर लौटा दिया था कि उन्हें क्रम से अपने परिवार वालों के पास तथा मस्जिद में सम्मानपूर्वक पहुंचा दिया जाए। इस घटना का मुसलमान इतिहासकारों ने भी उल्लेख किया है।

आरंभ में आक्रमणकारी के रूप में आने के अवसर पर मुसलमान शासकों द्वारा हिन्दुओं के प्रति ऐसा व्यवहार किया जाना कुछ अंश तक क्षन्तव्य हो सकता है, क्योंकि वे तो यहां विदेशी के रूप में आये थे, परन्तु अब उनका इस देश में ८०० वर्ष तक परस्पर पड़ौसियों की तरह रहने पर भी शत्रुता का व्यवहार करना कहां तक उचित है यह विचारणीय है। अच्छा तो यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होता कि वर्तमान सर्वधर्मसमभाव और धर्मनिरपेक्षता के युग में समझदार मुसलमान अपने पूर्वजों के अन्यायपूर्ण कार्यों के लिए खेद प्रकट करते और उसके लिए प्रायश्चित भी करते, परन्तु इसके विपरीत वे 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' वाली लोकोक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं, जो अनुचित है। अतः समस्त समझदार मुसलमानों से हमारा अनुरोध है कि वे अपने हिन्दू भाइयों की उचित मांगों का विरोध करने के स्थान पर उनका समर्थन करके अपनी उदारता और न्यायप्रियता का परिचय दें।

५११ गौएं पकड़ी गईं : १३ व्यक्ति गिरफ्तार

धर्मपुर ग्राम के निकट हरयाणा-दिल्ली बार्डर पर गुड़गांव सदर थाना पुलिस ने ५११ गौओं को अवैध रूप से ले जाते १३ दोषियों को रंगे हाथों पकड़ा। दोषियों को श्री दहिया के न्यायालय में पेश किया गया। रात को श्रीकृष्ण मंदिर नजफगढ़ में महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि (अध्यक्ष अखिल भारतीय गो संरक्षण परिषद्) की अध्यक्षता में एक बैठक में ऐसी गौओं की सम्भाल के लिए एक गो सदन बनाने का निश्चय किया गया। पांच सज्जनों की एक संयोजक समिति गठित की गई, जिसमें श्री रघुनाथसिंह यादव, श्री चमनलाल कालरा, श्री रामदत्त आदि सम्मिलित हैं। स्वामी जी के अनुरोध पर लोगों ने २० हजार रुपया तुरन्त लिखवा दिया। यह गो-सदन गोभक्त स्मारक परिषद्, नई दिल्ली के अन्तर्गत कार्य करेगा।

स्वाधीनता का फूल तभी खिलेगा जब देश के प्रत्येक नागरिक को सुख-स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। आइए, इसके लिए हम सभी प्रयत्नशील हों।—महात्मा वेदभिक्षु:

जिसके घर में वेद नहीं
वह हिन्दू का घर नहीं !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : कुछ सुझाव

—श्रीपालसिंह आर्य

१९८१ की जनगणना के अनुसार हमारे देश में निरक्षकों की संख्या पूरी जनसंख्या का ६५ प्रतिशत है। इसमें पुरुष ५५ प्रतिशत तथा स्त्रियां ७६ प्रतिशत अशिक्षित हैं। यह बहुत दुःख की बात है कि स्वतंत्रता के ३८ वर्षों में देश में जो शिक्षा की प्रगति होनी चाहिए थी, वह नहीं हुई। शिक्षा का सीधा सम्बन्ध मनुष्य की योग्यतानुसार उसके सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, ईमानदारी, सच्चाई, नैतिकता, देश भक्ति, न्यायप्रियता, कर्तव्य परायणता और मानवता के सर्वोच्च मूल्यों से जुड़ता है। जितने भी लोग आज शिक्षित हैं उनमें से कितने लोग शिक्षा की इन कसोटियों पर खरे उतरते हैं। यह भी आज एक गंभीर चिन्तन व चिन्ता का विषय है। यदि ईमानदारी से सोचा जाये तो यह तथ्य हमारे सामने उभर कर आता है कि इसका सबसे प्रमुख कारण हमारी दूषित शिक्षा नीति और पद्धति हैं। यह शिक्षा नीति लार्ड मैकाले के युग से ही थोड़े से परिवर्तनों या सुधारों के साथ चली आ रही है जो देश के विकास के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। ऐसी बात नहीं है कि लोगों ने इस तरफ सोचा नहीं है, परन्तु सच्चे हृदय से इसमें आमूल चूल परिवर्तन करने के लिये प्रयास नहीं किये गये। स्वयं भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने शिक्षा नीति के विषय में एक बार कहा था।

"After long long consideration I have come to this conclusion that the present system of)ducation is nothing but simply a betheretion for the present generation.

अर्थात् "बहुत सोच विचार के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि वर्तमान शिक्षा पद्धति आज की पीढ़ी के लिये एक बोझ के सिवाय कुछ नहीं है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब बजाशीघ्र वर्तमान शिक्षा पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन करके इसे उपयोगी, आवश्यक और सामयिक बनाना चाहिए।

यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाये हैं। प्रस्तुत लेख में नई शिक्षा नीति हेतु कुछ महत्व-पूर्ण सुझाव उनकी सेवा में दिये जा रहे हैं जो शिक्षा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं, जो शिक्षा के क्षेत्र में सच्चे हृदय से क्रांतिकारी परिवर्तन करना चाहते हैं या करने का प्रयास कर रहे हैं या जो कर सकते हैं अर्थात् जिनके हाथों में करने की शक्ति है। जिस प्रकार किसी उद्योग को लगाने से पहले सभी बातों पर विचार किया जाता है तथा लगाने के बाद उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए कुशल प्रबन्धक की व्यवस्था की जाती है, उसी प्रकार या उससे भी अधिक व्यवस्थित ढंग से नई शिक्षा नीति के विषय में कार्य करना पड़ेगा। इसके लिए हमें निम्नलिखित प्रमुख मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श करके ठोस कार्यक्रम बना कर कार्य करना होगा।

१. योजना

किसी भी कार्यक्रम को उचित प्रकार व व्यवस्थित रूप से चलाने के लिये योजना बनानी पड़ती है। शिक्षा योजना के अन्तर्गत उद्देश्य, नीति कार्य प्रणाली, आवश्यक संसाधन व प्रत्येक कार्य की परिसीमा को स्पष्ट करके रूप रेखा बनानी होगी। जिस प्रकार देश के विकास के लिये पंचवर्षीय योजनाएं बनती हैं, उसी प्रकार शिक्षा के लिए भी विस्तृत योजना बनानी होगी। क्योंकि शिक्षा का प्रत्येक विकास से सीधा सम्बन्ध है। आवश्यक तथ्यों को एकत्र करके विश्लेषण करके कार्यक्रम बनाकर लक्ष्यों को निर्धारित करना होगा। योजना को निम्नलिखित बिन्दुओं में विभाजित किया गया है—

(क) उद्देश्य—शिक्षा ऐसी हो जो...

१. ज्ञान का विकास, वैयक्तिक विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास, नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास कर सके।

(२) भारतीय मूल्यों का, प्राचीन संस्कृति का पालन, संरक्षण व उस पर गर्व करना सिखाये।

(३) चरित्रवान्, ईमानदार, देशभक्त, निडर व कर्तव्य परायण नागरिक निर्माण कर सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) विज्ञान, तकनीकी और कला के क्षेत्रों में संसार के किसी भी देश से कम या पिछड़ा न रहे।

(५) देश की सुरक्षा, एकता और अखण्डता की रक्षा कर सके।

(६) माननीय मूल्यों को पोषक और निरन्तर आगे बढ़ाने वाली, जिससे भारत फिर से जगदगुरू बन सके।

(७) बेरोजगारी का उन्मूलन कर सके और लोगों को अपने पैरों पर खड़े कर सके।

(ख) नीति :— नीति में निम्नलिखित प्रमुख बातों पर विचार करना होगा—

(१) स्वरूप—पूरे देश में शिक्षा का स्वरूप एक समान होना चाहिए।

(२) माध्यम —माध्यम हेतु हमें अंग्रेजी का सहारा छोड़ना होगा। हमारी दीर्घकालीन दासताने इसके प्रति इतना मोह भर दिया है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हम अंग्रेजी के शिकंजे से नहीं छूट पाये हैं। इससे नवयुवकों का तथा देश का कितना अहित हुआ है, हो रहा है, इसे जानने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी का इस विषय में यह विचार था, "विदेशी भाषा के माध्यम ने राष्ट्र की शक्ति को क्षीण कर दिया है। इसने व्यक्तियों की आयु कम कर दी है। इसने हमें जनसाधारण से पृथक् कर दिया है। इसने शिक्षा को अनावश्यक रूप से मंहगा बना दिया है।" इसकी आवश्यकता ही नहीं है। संसार के बहुत-से विकसित देश अपनी-अपनी भाषा के माध्यम से ही शिक्षा देते हैं। अतः हमारी भी सम्पूर्ण शिक्षा मातृभाषा और राजभाषा हिन्दी के माध्यम से होनी चाहिए।

(३) शिक्षा की अनिवार्यता—आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इनके कंधों पर देश का भार आयेगा। अतः ये राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति हैं और इनका अच्छी तरह पालन पोषण करना और उचित शिक्षा देना राष्ट्रीय कर्तव्य है। अतः मैट्रिक तक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और इसकी समुचित व्यवस्था शासन को करनी चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) गुरूकुल शिक्षा प्रणाली—गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए शासन को समस्त आवश्यक सुविधायें देनी चाहिए।

(५) इतिहास—इतिहास किसी भी देश के लिए प्रेरणादायक होता है। हमारे देश के इतिहास की पुस्तकें बहुत ही भ्रामक है। इन्हें फिर से संशोधित करने की आवश्यकता है। इस कार्य में आर्यसमाज के इतिहासकारों को अवश्य सम्मिलित करना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को विशेष रूप से पढ़ाने की आवश्यकता है।

(६) प्रौढ़ शिक्षा—प्रौढ़ों में निरक्षरता को दूर करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। यह दायित्व ग्राम पंचायतों को सौंपना चाहिए। इसके लिए अवकाश प्राप्त शिक्षकों व शिक्षिकाओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए।

(७) सहशिक्षा—सहशिक्षा का निषेध हो। महर्षि दयानन्द ने जो संसार के महान् सुधारकों में से एक हैं, सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है—"विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और लड़कों और लड़कियों की पाठशाला दो कोस दूर, एक-दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष व भृत्य व अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का व पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पाये।"

(८) राजनीति से दूर—स्कूलों व कालेजों को राजनीति से दूर रहना चाहिए ताकि विद्यार्थी सम्पूर्ण समय पढ़ाई में लगा सकें। राजनैतिक शिक्षा हेतु अलग प्रबन्ध होना चाहिए।

(९) सैनिक शिक्षा—देश की एकता और अखण्डता की बाहर और अन्दर दोनों से रक्षा करने के लिये आठवीं के बाद ही से शारीरिक दृष्टि से सक्षम लड़कों और लड़कियों को सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूप से देनी चाहिए। आगे चल कर जो लोग पुलिस व सेना में जाना चाहते हैं उनके लिए भी यह शिक्षा काफी उपयोगी रहेगी।

(१०) रोजगारोन्मुख—शिक्षा रोजगारोन्मुख हो और उन्हें रोजगार देने की गारंटी सरकार की होनी चाहिए। इसके लिए सरकार को ऐसी योजना की आवश्यकता है, जो आवश्यकतानुसार शिक्षा दे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सके ताकि किसी भी क्षेत्र में आवश्यकता से अधिक शिक्षित लोग न हो सकें ।

(११) **परीक्षा पद्धति**—परीक्षा पद्धति ऐसी हो, जिससे विद्यार्थी का सतत मूल्यांकन होता रहे। लिखित परीक्षा ऐसी हो, जिसमें पुस्तकों की पूरी छूट हो और प्रश्न ऐसे हों, जिनका पूरा उत्तर सभी पुस्तकों में खोजने पर भी न मिल सके। इससे नकल की समस्या हल हो जायेगी। लिखित परीक्षा के अतिरियत व्यवहारिक व मौखिक परीक्षा भी प्रत्येक विषय में अनिवार्य होनी चाहिए।

(१२) **तकनीकी शिक्षा**—इसके लिए आधुनिक व सामयिक उपकरण होने चाहिए। चूंकि इनके द्वारा प्रशिक्षित विद्यार्थियों का काफी भाग निजी क्षेत्रों में भी काम आता है, अतः निजी क्षेत्रों से तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए उचित फण्ड लिया जाना चाहिए।

(१३) **उच्च शिक्षा**—स्नातक स्तर के ऊपर की शिक्षा केवल उन्हीं विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए जो शिक्षा और व्यावहारिक क्षेत्र में शोध या क्रांतिकारी कार्य करना चाहते हैं और इसके सुपात्र हों।

(१४) **प्रतिभा पलायन**—प्रतिभाओं को उत्पन्न करने के लिए देश को काफी खर्चा उठाना पड़ता है। अतः देश को अधिकार है कि उनका समुचित उपयोग करे, परन्तु या तो उचित अवसर न मिलने से या दूसरे देशों में कुछ सम्बन्ध होने से प्रतिभा पलायन होता है। इसे उचित अवसर प्रदान करके और कम से कम १०वर्ष तक का प्रतिबंध लगा कर रोका जा सकता है। अच्छे और आकर्षक अवसर उत्पन्न करके न केवल अपने देश से प्रतिभा पलायन रोका जा सकता है अपितु दूसरे देशों की प्रतिभाओं को भी आकर्षित किया जा सकता है।

(ग) साधन—

प्रायः यह दर्शन और मान्यता प्रचलित है कि शिक्षा एक अनुत्पादक क्षेत्र है, जिसमें लागत ही लागत लगानी पड़ती है और इससे कुछ उत्पादन होता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नहीं। यह विचार बहुत ही भ्रामक और गलत हैं। इसे बदलने की आवश्यकता है। शिक्षा के क्षेत्र में लागत लगाकर हम वे अमूल्य हीरे पैदा करते हैं, जो देश के हर क्षेत्र में उत्पादन और उत्पादकता बढ़ा कर देश की चहुंमुखी प्रगति कर सकते हैं। अतः शिक्षा पर हमें प्रमुखता से संसाधनों पर लागत लगानी चाहिए और लगानी होगी। साधनों को हम दो भागों में बांट सकते हैं—

१. मानवीय साधन २. भौतिक साधन

(१) मानवीय साधन—इसमें प्रमुख हैं शिक्षक, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, प्रशासक तथा अन्य कर्मचारी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं शिक्षक। शिक्षक का पेशा बहुत आदर्श पेशा है, परन्तु इसे आज अधिक अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। आज इस पेशे में जो लोग आते हैं, प्रायः या तो उनके सामने कोई और विकल्प नहीं होता या किसी अन्य मजबूरी के कारण। अतः इस पेशे को फिर से गौरव दिलाने के लिए—

(क) योग्य, अनुरागी, परिश्रमी, शिक्षा कार्य में अभिरूचि रखने वाले, चरित्रवान्, आदर्श, ईमानदार, जितेन्द्रिय, प्रभावशाली, विनम्र, व्यवहार कुशल, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विज्ञ लोगों को ही शिक्षक के पद के लिए चुनना चाहिए।

(ख) शिक्षकों का वेतन, अन्य सुविधायें तथा उन्नति के अवसर बहुत ही अच्छे और आकर्षक बनाने होंगे ताकि लोग इस पेशे को प्राथमिकता के साथ अपनाने के लिए लालायित हो उठें।

(ग) प्राइवेट ट्यूशन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए और शिक्षकों को डाक्टरों की भांति इसके लिए भत्ता देना चाहिए।

(२) भौतिक साधन --इसमें प्रमुख हैं शाला, सहायक सामग्री, वित्त आदि।

(क) शाला—शाला और विद्यालय भवन में न्यूनतम साधनों से युक्त होने चाहिए। प्राचीन काल के समान गुरूकुल और खुले विद्यालयों को भी बढ़ावा देना चाहिए।

(ख) सहायक सामग्री—पुस्तकालय, उपकरण तथा अन्य शैक्षिक सामग्री आधुनिक, सामयिक व पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ग) वित्त व्यवस्था—उपरोक्त के लिए धन की व्यवस्था जितना अधिक से अधिक सरकार कर सकती है करे। शेष के लिए शिक्षा कर लगाना चाहिए। छूट यदि और आवश्यक हो तो इसके लिए ऋण की भी व्यवस्था करनी चाहिए। एक राष्ट्रीय शिक्षा कोष का भी निर्माण करना चाहिए। लाटरियों के माध्यम से राष्ट्रीय कोष को निरंतर बढ़ाया जा सकता है।

(द) लक्ष्य—हमारे निम्नलिखित प्रमुख लक्ष्य होने चाहिए—

(१) ५ वर्षों के अन्दर शिक्षा को रोजगारोन्मुख बना दिया जाये।

(२) १० वर्षों के अन्दर निरक्षरता का उन्मूलन कर दिया जाये। यदि सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाये। उनका दायित्व सरकार का हो। और प्रौढ़ों को पढ़ने-लिखने तथा काम चलाऊ हिसाब रखने का ज्ञान कराया जाये तो १० वर्ष इस कार्य के लिए पर्याप्त हैं।

(३) ५ वर्षों के अन्दर प्रौढ़ शिक्षा को पूरा कर दिया जाये। इसके बाद यदि बच्चे अनिवार्य रूप से पढ़ेंगे तो प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

(ध) शिक्षा प्रणाली—हर स्तर की शिक्षा प्रणाली सरल, सामयिक, रूचिकर, व्यवहारिक और आधुनिक होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक कि शिक्षकों का अच्छा प्रशिक्षण होना चाहिए। केवल प्रशिक्षण की डिग्री या डिप्लोमा लेना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु उनका प्रशिक्षण होते ही रहन चाहिए ताकि ये नवीनतम विकसित प्रणालियों का सफलतापूर्वक उपयोग क सकें।

२. संगठन

यह कार्य को सुव्यवस्थित रूप से चलाने का एक स्वरूप है, एक ढांचा है जिसका निर्माण व्यक्तियों, वस्तुओं, धारणाओं, प्रतीकों, नियमों, सिद्धान्तों के द्वारा या इन सबके संयोग से होता है। संगठन के अन्तर्गत दो प्रकार की व्यवस्थायें निहित होती हैं—

१. मानवीय २. भौतिक

मानवीय तत्वों का संगठन कक्षाओं, शिक्षक वर्ग एवं अन्य कर्मचारी वर्गों में किया जा सकता है। भौतिक तत्वों के अन्तर्गत भवन, फर्नीचर,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं अन्य शैक्षिक सामग्री आदि की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाता है।

संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए आज सबसे पहली आवश्यकता है शिक्षा के विषय को राज्यों से हटाकर केन्द्र सरकार के अधीन लाकर इसका राष्ट्रीय स्वरूप बनाना चाहिए। पूरे देश में एक समान पाठ्यक्रम होना चाहिए। संगठन के तीन प्रमुख अंग होते हैं—प्रशासन, प्रबन्ध और प्रचालन। इन तीनों का भार मंत्री से लेकर प्रधानाचार्य व शिक्षक तक योग्य, अनुरागी, परिश्रमी, चरित्रवान व समयबद्ध परिणाम देने वाले व्यक्तियों के ही हाथों होना चाहिए। शिक्षा को निम्नलिखित विभागों में विभाजित कर सकते हैं—

१. पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक
२. पूर्व माध्यमिक
३. माध्यमिक
४. स्नातक
५. स्नातकोत्तर, शोध एवं विकास
६. प्रबन्ध व प्रशासन
७. प्रशिक्षण
८. व्यवसायिक व दस्तकारी
९. तकनीकी
१०. गुरुकुल

३. सामंजस्य

संगठन के जितने भी अंग होते हैं उनमें आवश्यक संबंध स्थापित करना, समन्वय रखना आदि सामंजय के अंतर्गत आते हैं। आवश्यक सामंजस्य रखकर मानव और भौतिक साधनों के अपव्यय और संघर्ष को रोकना चाहिए। जिससे वे कुशलतापूर्वक निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक साथ मिलकर अच्छी तरह काम कर सकें।

४. मूल्यांकन और परामर्श

मूल्यांकन द्वारा हमें इस बात का ज्ञान होता है कि हमने अपने निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति किस सीमा तक की है। इसके द्वारा हम यह भी जान सकते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं अमुक कार्य और उसकी प्रणाली में क्या-क्या कमियां और दोष रहे जिनके कारण अभीष्ट सफलता प्राप्त नहीं कर सके। मूल्यांकन का कार्य प्रतिमाह, त्रैमासिक, छमाही और वार्षिक होना चाहिए। जो दोष और कमियां परिलक्षित होती हैं उन्हें संशोधन द्वारा दूर करना चाहिए।

मूल्यांकन के लिए समितियों और उप-समितियों का गठन करना चाहिए जिनमें विद्यार्थियों और अभिभावकों का भी प्रतिनिधित्व होना चाहिए। प्रशासन को इन समितियों के सुझावों और सिफारिशों पर समुचित ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए।

५. नियंत्रण और निर्देशन

नियंत्रण और निर्देशन अंतिम और अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। शिक्षा के सभी विभागों और कार्यों पर प्रभावशाली नियंत्रण रखना आवश्यक है। बिना उचित और पर्याप्त नियंत्रण के अच्छी-अच्छी योजनाएं दिशा विहीन हो सकती हैं। जिन कर्मचारियों, शिक्षकों आदि का कार्य ठीक न हो, उन्हें सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। कार्यकुशल लोगों को पुरस्कार तथा जो सक्षम व कुशल न हों उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। सतत मूल्यांकन के बाद जहां भी आवश्यक हो संशोधन हेतु निर्देश मिलते रहने चाहिए।

भारत जैसे विशाल देश के लिए जहां कदम-कदम पर विभिन्नता व्याप्त है शिक्षा के सुधार के विषय पर बहुत बड़ा ग्रन्थ लिखा जा सकता है, फिर भी उसके पूर्ण होने की गारंटी नहीं दी जा सकती। सुधार को एक सतत प्रक्रिया होती है जिसे किसी सीमा द्वारा प्रतिबन्धित नहीं किया जा सकता। फिर भी कोई भी कार्य जो योजनाबद्ध ढंग से किया जाता है उसके परिणाम अच्छे और सार्थक ही होते हैं। अतः संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि शिक्षा के सुधार हेतु अच्छी योजना, संगठन, सामंजस्य, मूल्यांकन और परामर्श, नियंत्रण और निर्देशन पर सविस्तार विचार करके कार्य करना होगा। यदि इनमें से किसी एक में भी कमी रही तो जिन उद्देश्यों व लक्ष्यों को हम प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें नहीं प्राप्त कर सकेंगे और जैसा-जैसा चलता आ रहा है वैसा चलता तो रहेगा ही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन्द स्वामी उवाच

आत्मा क्या है? इसके सम्बन्ध में एक कहानी सुनिये। पुरंजन नाम का एक राजा था किसी समय में। एक बार उसे इच्छा हुई कि किसी नगर में जाकर रहूं। कई नगर उसने देखे, कोई भी उसे पसन्द नहीं आया। तब हिमालय के दक्षिण में उसने एक नौ द्वारों वाली नगरी देखी। यह भी देखा कि उस नगरी में एक सुन्दरी भी रहती है। दस सेवक उसकी सेवा करते हैं। पांच फन वाला एक सर्प सदा उसकी रक्षा करता है। उस स्त्री ने भी पुरंजन राजा को देखा। दोनों एक-दूसरे को देखते ही एक-दूसरे पर मोहित हो गये। पुरंजन राजा उस नगरी में गया। उस स्त्री ने उसको अपना स्वामी बना लिया। दोनों इस नगरी में रहने लगे। रहते-रहते वर्षों व्यतीत हो गए। इनके कितने ही बच्चे भी हुए। तब अन्त में पुरंजन राजा का शरीर ढीला होने लगा। कितने ही रोगों ने उसे दबा लिया। तब एक दिन दुःखी हो कर उसने वह नगरी छोड़ दी।

यह सारी कथा वास्तव में आत्मा की कहानी है, क्योंकि पुरंजन राजा कोई दूसरा राजा नहीं, यही आत्मा है और नौ द्वारों वाली जिस नगरी में आकर उसने निवास किया, वह नौ द्वारों और आठ चक्रों वाला यह मानव-शरीर है। वेद भगवान् ने इस नगरी का वर्णन करते हुए कहा :—

अष्ट चक्रा नव द्वारा,
देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्मयः कोशः
स्वर्गो ज्योतिषावृत्तः ॥

आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली यह वह पुरी है, जिसे कोई जीत नहीं सकता। इसमें एक चमकते हुए प्रकाश में परमात्मा के प्रकाश से आवृत्त वह आत्मा बैठा रहता है, जो अपने आप में सुख-रूप है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस नगरी का वेद भगवान् ने वर्णन किया है, वह मनुष्य का यह शरीर है। इसके नौ द्वार हैं—दो आंखें, दो कान, दो नथुने, एक मुख और दो मल और मूत्र त्यागने के द्वार। यह है नौ द्वारों वाली अयोध्या नगरी। इसमें आठ चक्र हैं—मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुरक चक्र, अनाहत चक्र, हृदय चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञाचक्र, ब्रह्मचक्र। इस नौ द्वारों और आठ चक्रों वाली नगरी में बुद्धि नामक सुन्दर स्त्री रहती हैं। दस इन्द्रियां उसके दस सेवक हैं और पांच प्राण, पांच फनों वाला वह सर्प हैं, जो इस नगरी की रक्षा करता है।

इस नगरी में आया है वह पुरंजन राजा—वह जीवात्मा और जब इस नगरी को छोड़कर निकला तो विदर्भ के राजा के नगर में जाकर एक—कन्या के रूप में उत्पन्न हो गया। वह कन्या बहुत रूपवती और गुणवती थी। विदर्भ के राजा ने उसका नाम रखा—अपूर्व कन्या। वह बड़ी हुई तो मलयध्वज नाम के राजा के साथ उसका विवाह हो गया। दोनों सुख से रहने लगे। परन्तु तभी एक दिन राजा मलयध्वज शीशे में अपना मुख देख रहे थे तो सिर में एक श्वेत केश दिखाई दिया। केश को देखकर वह अपूर्व कन्या से बोले—"रानी! मैं तो अब जंगल में जाकर भगवान् का भजन करूँगा, तुम चाहो तो इस राज्य को चलाओ।"

रानी ने कहा—"आपके बिना मैं कैसे रहूंगी? जहां आप, वहीं मैं आपके साथ चलूंगी।"

दोनों वन में पहुंचे। आश्रम बनाकर रहने लगे। परन्तु समय तो प्रत्येक स्थान पर व्यतीत होता है, वन में भी बीतने लगा। अन्ततः वह समय भी आया, जब मलयध्वज का देहान्त हो गया। रानी अपूर्व कन्या ने रो-रोकर अपना बुरा हाल कर लिया। वन में और कोई था नहीं। रोते-पीटते उसने वन में से लकड़ियाँ एकत्रित कीं। एक चिता बनाई। मलयध्वज की लाश को उसके ऊपर रख दिया। अपने हाथ से उसने चिता को आग लगाई। स्वयं भी उसमें बैठ गई। अग्नि प्रज्वलित हुई। चहुंओर लपटें फैलने लगीं। रानी अपूर्व कन्या अब भी रो रही थी। उसके क्रन्दन से वन गूंज रहा था। तभी उन लपटों में से आवाज आई—'पुरंजन! ओ पुरंजन!"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रानी ने आश्चर्य से इधर-उधर देखा, कोई भी उसे दिखाई नहीं दिया, परन्तु ध्वनि ने फिर कहा—"पुरंजन ! रोना बन्द करो। तुम स्त्री नहीं हो, रानी नहीं, अपूर्व कन्या भी नहीं हो।"

रानी ने आश्चर्य से कहा—"तुम कौन हो, जो आवाज दे रहे हो ?"

ध्वनि ने कहा—"पहले यह समझो कि तुम अपूर्व कन्या नहीं, हो। तुम पुरंजन हो। कभी तुम पुरुष थे। अब स्त्री हो। वास्तव में तुम स्त्री-पुरुष भी नहीं हो।"

रानी ने कहा—"और तुम कौन हो ?"

ध्वनि ने कहा—"मैं तुम्हारा अज्ञात नाम वाला मित्र हूं और मैं ही तुम्हारा मित्र हूं, दूसरा कोई मित्र नहीं, कोई सम्बन्धी नहीं, कोई पति या पत्नी नहीं, पुत्र या पुत्री नहीं।"

तब उस पुरंजन ने अपने इस मित्र को पहचाना। तब उसने समझा कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। इसके लिए, मलयध्वज के लिए या किसी भी आत्मा के लिए कोई मृत्यु नहीं और सबका मित्र वह एक है, जिसे लोग परमात्मा, प्रभु, ईश्वर, परमेश्वर, परम ब्रह्म, भगवान् शिव, शंकर, नारायण और कितने ही नामों से पुकारते हैं।

यह सारी जीवात्मा की कहानी है जो शरीर के साथ मिलकर कभी अपने आप को अपूर्व कन्या कहता है, कभी पुरंजन, कभी मलयध्वज, कभी विदर्भराज, कभी कुछ और कई प्रकार के, सहस्त्रों, लाखों, करोड़ों नाम वह अपनाता है, करोड़ों रूप अपनाता है।

हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अश्वत्थामा मारा गया मनुष्य या हाथी"

—स्व० प्रेमचन्द्र शास्त्री

महाभारत के युद्ध में एक दिन दुर्योधन ने आचार्य द्रोण को बहुत बुरा—भला कहा कि आप जानबूझ कर पाण्डवों को नहीं मारते हैं, वे हमारी सेना का विनाश करते जा रहे हैं। इस कारण द्रोणाचार्य ने पाण्डवों से बड़े डटकर युद्ध किया। पाण्डवों की सेना को छिन्न-भिन्न करते हुए वे रणभूमि में घुसने लगे। पाण्डवों के दो वीरों—द्रुपद और विराट् ने मिलकर द्रोणाचार्य पर बड़े वेग से आक्रमण किया। उन्होंने इन दोनों का सिर काट डाला। इन दोनों वीरों के मारे जाने से पाण्डवों की सेना में हाहाकार मच गया। अर्जुन और भीमसेन को बड़ा क्रोध आया और वे कौरवों की सेना पर बुरी तरह टूट पड़े और उनके वीरों का वध करने लगे। लड़ाई बड़े जोरों से हो रही थी। इस समय श्रीकृष्ण जी ने भीमसेन से कहा कि देखो द्रोणाचार्य का वध तो कोई भी नहीं कर सकता। हां, एक बात से इनका वध हो सकेगा। भीमसेन के पूछने पर श्री कृष्ण जी ने बताया कि यदि कोई असत्य ही यह कह दे कि अश्वत्थामा मारा गया है, तो अपने पुत्र के शोक से वे शिथिल हो जायेंगे। उस समय उनका वध हो सके तो ही सके, अन्यथा सर्वथा असम्भव है।

श्री कृष्ण जी बड़े नीतिज्ञ थे। उनकी सम्मति से भीम एक अश्वत्थामा नामक हाथी को मार कर आया और द्रोणाचार्य के पास जाकर कहने लगा कि "मैंने अश्वत्थामा को मार दिया है"। श्री कृष्ण जी स्वयं झूठ नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोलते थे, या तो किसी से झूठ बुलवा देते थे या इस प्रकार बात कहते थे कि जो झूठ भी न हो और सच भी न हो। भीम ने द्रोणाचार्य के सामने झूठ बोला कि "मैंने अश्वत्थामा को मार दिया दिया।" अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनकर द्रोणाचार्य दुःखी तो बहुत हुए किन्तु उन्हें विश्वास नहीं हुआ। वे सच बात जानने के लिये युद्ध बन्द करके युधिष्ठिर के पास गये। युधिष्ठिर कभी भी झूठ नहीं बोलते थे, उनकी बात पर सब विश्वास करते थे। जब द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से पूछा तो युधिष्ठिर ने कहा—'अश्वत्थामा मारा गया पर हाथी'। श्रीकृष्ण जी जानते थे कि युधिष्ठिर झूठ नहीं बोलेंगे, इसलिए वे उस समय युधिष्ठिर के पास ही खड़े रहे। जब युधिष्ठिर इतना कह चुके कि 'अश्वत्थामा मारा गया'—वह 'हाथी' कह भी न पाये थे कि श्रीकृष्ण ने बड़े जोरों से शंख बजवा दिये। हाथी शब्द दोणाचार्य की सुनाई नहीं दिया। युधिष्ठिर ने तो झूठ नहीं बोला—सच ही कहा, किन्तु कृष्णजी ने अपनी नीति से उसे झूठ बना दिया। द्रोणाचार्य ने समझा कि जब युधिष्ठिर भी कह रहे हैं तो सच ही है।

पुत्र के शोक से व्याकुल होकर द्रोणाचार्य रथ से उतर कर पृथ्वी पर बैठ गये और प्राणयाम करने लगे। उन्हें इस अवस्था में बैठा देख कर धृष्टद्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट डाला। अर्जुन आदि ने उसे बहुत रोका, पर उसने किसी की बात नहीं मानी।

आचार्य की मृत्यु से अर्जुन को बहुत शोक हुआ और वह रोने लगा। पिता की मृत्यु से अश्वत्थामा को बड़ा दुःख हुआ। उसने भीम को मारने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु सब व्यर्थ ही हुआ।

भारत उनका जो भारत के। विदेशी षड्यंत्रकारियों को देश से निकाला जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में गुमशुदा पाकिस्तानी और बंगला देशी कब तक बने रहेंगे ?

६ नवम्बर, १९८५ को संसद् में श्री जसवंतसिंह के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए आंतरिक सुरक्षा राज्यमंत्री श्री अरुण नेहरू ने कहा, "पिछले ३३ वर्षों में जितने पाकिस्तानी भारत आये, उनमें से ५५१३ ऐसे हैं, जो पाकिस्तान कभी नहीं लौटे, और वे भारत में ही गुम हो गये हैं। इनमें से ३२७३ अकेले महाराष्ट्र में ही 'गुम' हुए हैं।"

यदि हम इन 'गुमशुदा' पाकिस्तानियों में ऐसे पाकिस्तानियों और और बंगलादेशियों को भी शामिल कर लें, जो अपने 'वीजा' की परिधि बीत जाने पर भी भारत से नहीं लौटते, तो गृहमंत्री श्री शंकरराव चह्वाण के अनुसार यह संख्या बढ़कर ९१२२ हो जाती है।

श्री लालकृष्ण आडवाणी तथा श्री शंकरसिंह वाघेला के इन दो प्रश्नों के कि (१) सरकार इस मामले में क्या कार्रवाई कर रही है, और (२) ऐसे 'गुमशुदा' पाकिस्तानियों और बंगलादेशियों की राज्यवार संख्या कितनी है ? उत्तर में श्री चह्वाण ने कहा, "विर्यारित अवधि से अवधि से अधिक समय तक ठहरने वाले सभी व्यक्तियों के विरुद्ध विदेशी नागरिक अधिनियम १९४६ के अधीन कार्रवाई करने के लिए राज्य सरकारों को आदेश दिये गये हैं। (३) ऐसे व्यक्तियों की राज्यवार संख्या इस प्रकार :—

१. आंध्र प्रदेश २६ २. बिहार ४७० ३. गुजरात ८५० ४. हरियाणा २३ ५. जम्मू कश्मीर १०८ ६. कर्नाटक ६६ ७. केरल ४१७ ८. मध्यप्रदेश ६१५ ९. महाराष्ट्र ३८२९ (अस्थायी) १०. उड़ीसा १२४ ११. पंजाब ३५३ १२. राजस्थान २६७ १३. तमिल नाडू ९७ १४. उत्तर प्रदेश ११६७ १५. पश्चिम बंगाल ३४५ १६. दिल्ली ३५३ १७. गोवा १२ योग–९९२२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या हम केन्द्र और उपरोक्त राज्य सरकारों से आशा करें कि वे इन गुमशुदा पाकिस्तानियों और बंगलादेशियों को पहचानने (चीन्हने) और उन्हें भारत से बाहर निकालने के उद्देश्य से तत्काल प्रभावी और ठोस कदम उठायेंगी। कारण ये ही व्यक्ति गुजरात, बम्बई, भिवण्डी आदि स्थानों में साम्प्रदायिक दंगों को शुरू कराने, आतंकवादियों को हथियार तथा वन देने और नशीले पदार्थों का व्यापार कर देश की युवा पीढ़ी के स्वास्थ्य को चौपट करने के लिए जिम्मेवार हैं।

—सदाजीवतलाल

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एवं मनोहर संगीत में आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये ईश्वरभक्ति, महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनों के सर्वोत्तम कैसेट मंगवाकर-

आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1. पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एवं गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।

2. सत्यपाल पथिक भजनावली- सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।

3. श्रद्धा- प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान।

4. आर्य भजनावली- फिल्मी संगीतकार एवं गायक वेदपाल वर्मा।

5. वेद गीतांजलि- गीतकार एवं गायक- सत्यकाम विद्यालंकार

6. भजन सुधा- आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट। से 3, 30 रु. तथा 4 से 6, 35 रु. है। डाक व्यय अलग विशेष- 5 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी.पी.पी. से भी मंगा सकते हैं।

प्राप्तिस्थान- आर्यसिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई 400082

ये कैसेट वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, अलीपुर दिल्ली-३६ से भी उपलब्ध हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरीअत, संविधान और राजीव गांधी

—प्रो० बलराज मधोक

जब से सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो नाम की तलाकशुदा मुस्लिम महिला की अपने पति से जिसने उसे लगभग ४० वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद तलाक दे दिया था, गुजारा मांगने सम्बन्धी अपील को स्वीकार किया है और उसके वकील पति को भारतीय दंडसंहिता की धारा १२५ के अन्तर्गत ५०० रुपये प्रतिमाह गुजारा देने का आदेश दिया है। कुछ मुस्लिम नेताओं और सदस्यों ने आसमान सिर पर उठा रखा है। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने शरीअत में दखल दिया है। वे मांग कर रहे हैं कि दंडसंहिता की धारा १२५ और संविधान की धारा ४४ को जिसके अनुसार राज्य का कर्तव्य है कि सभी नागरिकों के लिए समान कानून की व्यवस्था करे, हटा दिया जाए और उन्हें आश्वस्त किया जाए कि उनकी शरीअत में दखल नहीं दिया जायेगा। श्री राजीव गांधी के मंत्रिमंडल के एक सदस्य श्री अंसारी ने लोकसभा में भी इसी प्रकार के विचार रखे हैं। श्री राजीव ने अभी तक उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की है अपितु यह कहा है कि शरीअत द्वारा प्रतिष्ठित मुसलमानों के विवाह और तलाक सम्बन्धी कानून में दखल देने का उनका कोई इरादा नहीं। इसलिए यह प्रश्न उभरकर सामने आया है कि "सेकुलर" भारत में इस्लामी शरीअत प्रमुख है कि संविधान और क्या प्रधान मंत्री संविधान से भी ऊपर है?

इस प्रश्न का ठीक से उत्तर देने के लिए पहले यह समझना होगा कि शरीअत का आधार मुख्य रूप से मुहम्मद साहब का अपना जीवन और उनका विभिन्न परिस्थितियों और अवसरों पर व्यवहार है। उनके मरने के अनेक वर्ष बाद उन्हें जानने वाले कुछ लोगों ने इसके सम्बन्ध में अपने-अपने अनुभवों और अनुभूतियों के आधार पर कुछ हदीस लिखी थीं। उनमें एकरूपता नहीं है। उनके आधार पर विभिन्न मुल्लाओं द्वारा दिये गए फ़तवे या फैसले भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भिन्न-भिन्न हैं। सुन्नी और शिया मुसलमानों की इस सम्बन्ध में मान्यताएं भी बहुत कुछ भिन्न हैं। विभिन्न राज्यों के शासक उनमें अपने-अपने सवालों की पूर्ति के लिए समय-समय पर फेरबदल भी करते रहे हैं। इस प्रकार शरीअत का इस्लामी मजहब के बुनियादी सिद्धांतों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। यह एक व्यवहार सम्बन्धी परम्परामात्र है।

शरीअत का सम्बन्ध सिविल मामलों से भी है और फौजदारी मामलों से भी। फौजदारी मामलों में शरीअत चोरी का दंड हाथ काटना और व्यभिचार का दंड पत्थरों से मार डालना है। इसमें सूद का लेना और देना तथा शराब पीना भी वर्जित है। परन्तु हिन्दुस्तान के मुसलमान इसके फौजदारी भाग को अपने ऊपर लागू नहीं रखना चाहते। वह केवल शरीअत के विवाह और तलाक सम्बन्धी भाग से ही जुड़े रहना चाहते हैं। क्योंकि मुहम्मद साहब की ११ पत्नियां थीं और उनकी पहली पत्नी की आयु उनकी आयु से दुगुनी और अन्तिम की आयु उनकी आयु का पांचवा भाग थी। इसलिए बहुविवाह और बेमेल विवाह प्रथा शरीअत का अंग मानी जाती है।

शरीअत के अनुसार हर मुसलमान एक समय में चार पत्नियां रख सकता है। यदि वह उनमें से किसी को छोड़ना चाहे तो उसे तीन बार "तलाक दिया" कहना पर्याप्त है। जिस पत्नी को उसने एक बार तलाक दे दिया हो उससे वह दोबारा विवाह तभी कर सकता है जब वह तलाकशुदा पत्नी किसी और से विवाह करे, उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करे और उसके बाद उसे तलाक मिले। जिस औरत को तलाक दिया जाए यदि वह गर्भवती हो तो सन्तान की उत्पत्ति तक अन्यथा तीन महीनों तक ही उसे गुजारा देने की जिम्मेदारी पति की रहती है।

इस प्रकार शरीअत के अनुसार औरत मर्द के पांव की जूती के समान है जिसे वह कभी भी फेंक सकता है। उसे अनेक सौतों को और हर प्रकार के उत्पीड़न को सहना पड़ता है।

यह स्थिति भारत के संविधान और संयुक्त राष्ट्र के मानव अधिकार चार्टर के बिलकुल विपरीत है। भारत का संविधान सेकुलर है, मजहबी नहीं। यह लिंग के आधार पर स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव की इजाजत नहीं देता। इसकी धारा ४४ राज्य के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून के लागू करने का भी निर्देश देती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई मुस्लिम महिला नहीं चाहती कि उसकी अनेक सौतें हों और उसका पति जब चाहे उसे तलाक दे दे, और उसे कोई गुजारा भी न दे। इसलिए मुस्लिम महिलाओं ने आम तौर पर शाहबानो केस पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत किया है। वे चाहती हैं कि देश में सबके लिए समान सिविल कानून हो और विवाह तथा तलाक के सम्बन्ध में उन पर भी वही नियम लागू हो जो हिन्दू महिलाओं पर लागू होते हैं।

परन्तु मुसलमान मर्द, विशेष रूप में मुल्ला-मौलवी शाहबानो केस के फैसले से घबरा गये हैं। इसके कई कारण हैं। पहला यह है कि इससे उनकी बहु-विवाह की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा है, क्योंकि अब तलाकशुदा मुस्लिम औरतें उनसे गुजारा मांग सकती हैं। दूसरे, अनेक पत्नियों से अनेक बच्चे पैदा करके मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाने की उनकी राजनैतिक योजना पर इस फैसले से रोक लग सकती है। तीसरे, इस फैसले के कारण मनचले अमीर हिन्दुओं के दूसरा विवाह करने के लिए मुसलमान बनने पर भी कुछ रोक लगेगी। यही कारण है कि जमाते इस्लामी, जमीयतउल उलेमा, मुस्लिम लीग और शहाबुद्दीन जैसे मुसलमान इस फैसले और न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ के पीछे लट्ठ लेकर पड़ गये हैं। शहाबुद्दीन के अनुसार इस फैसले ने सभी मुसलमानों को इकट्ठा कर दिया है। परन्तु शायद वे मुसलमानों में मुस्लिम औरतों को नहीं गिनते।

मुसलमानों द्वारा इस फैसले के विरुद्ध और संविधान की धारा ४४ को हटाने के लिए चलाये जाने वाले आन्दोलन की प्रतिक्रिया भी होने लगी है। सभी राष्ट्रवादी तत्व और दल इस फैसले और सांझे सिविल कानून के पक्ष में बोलने लगे हैं।

मुसलमानों द्वारा चलाये जाने वाले इस आंदोलन से यह प्रश्न कि मुसलमान भारत के नागरिक हैं या विदेशी फिर उठ खड़ा हुआ है। यदि पाकिस्तान की मांग करने के बाद भारत में स्वेच्छा से रह गये मुसलमान भारत के नागरिक हैं तो उन्हें भारत के संविधान का आदर करना चाहिए और भारत के कानूनों को मानना चाहिए। यदि वे नागरिक नहीं तो फौजदारी मामलों पर भी उन पर शरीअत लागू होनी चाहिए। भारत इस्लामी राज्य नहीं। यदि वे शरीअत से इतना ही प्यार करते हैं तो वे पाकिस्तान या किसी और इस्लामी राज्य में जाकर बस सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक प्रबुद्ध और आधुनिक व्यक्ति के नाते श्री राजीव गांधी से अपेक्षा थी कि वे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। परन्तु इस मामले में उन्होंने जो रवैया अपनाया है उससे उनकी स्थिति बहुत हास्यास्पद और दयनीय बन गई है। एक तरफ तो वे हिन्दुस्तान को २१वीं शताब्दी में ले जाने की बात करते हैं और दूसरी ओर महिलाओं के हितों की उपेक्षा करके और भारत के संविधान की अवहेलना करके वे मुसलमानों के ७वीं शताब्दी की ओर लौटने की बात मानने के संकेत दे रहे हैं। उनके द्वारा अपने मंत्री श्री अन्सारी के विरुद्ध अभी तक कोई कार्रवाई न करने से उनके मंत्रिमंडल के कई अन्य सदस्य भी खिन्न हैं। मंत्रिमंडल का उत्तरदायित्व सांझा होता है। यदि एक मंत्री संसद् में ऐसी बात कहे जो संसदीय परम्परा, संविधान और नैतिकता के विरुद्ध हो तो उसके छींटे सभी मंत्रियों पर पड़ते हैं। (ऊर्जा राज्यमन्त्री आरिफ मुहम्मद खां ने तो उच्चतम न्यायालय के फैसले को प्रभावी न होने देने के लिए प्रस्तुत विधेयक कार्य विरोध करने के लिए अपने पद से त्यागपत्र भी दे दिया है।)

सन् १९८४ के चुनाव में श्री राजीव गांधी और कांग्रेस को मुसलमानों के मत न के बराबर मिले थे। वे राष्ट्रीय एकता की अपील के कारण अधिकतर हिन्दू मत ले पाये थे और वही उनकी और कांग्रेस की प्रचंड सफलता का मूल कारण था। अब यदि उन्होंने मुल्लाओं को प्रसन्न करने के लिए संविधान और राष्ट्रीय भावना की उपेक्षा की तो हिन्दुओं पर इसकी प्रतिकूल प्रतिक्रिया होगी। मुल्ला तुष्टीकरण की नीति से कांग्रेस को मुस्लिम मत मिले कि नहीं यह तो समय बतायेगा परन्तु इसकी छवि अवश्य धूमिल हो जाएगी और यह हिन्दू मतदाताओं को अपने से दूर करने में अवश्य सफल होगी। ऐसी स्थिति, जिसमें चार पत्नी वाला मुसलमान जज किसी हिन्दू को दूसरा विवाह करने पर दंडित कर सकता है, भारत में अब अधिक देर तक चलने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

एकता ही वह मंत्र है, जिससे हम सारी आसुरी सेना का सामना कर सकते हैं।

भेद भुलाकर एक बनो अब, एक बनो धरती को जीतो।
जीवन की प्रेरक वीणा का, आमन्त्रण स्वीकार करो प्रिय।

—महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय संस्कृति है मेरी

उदित गगन के चिर प्रभात की क्षितिज ज्ञान से घेरी।
ज्येष्ठ और शिव श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है मेरी॥

इस धरती से परम पुरुष ने वेद ऋचायें पाईं,
अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा ने मिलकर के गाईं,
अखिल विश्व का सुरभित जिसने वातावरण किया है,
उपनिषदों का तत्व ज्ञान वैदिक पीयूष दिया है,
गौतम कपिल कण्व पतंजलि व्यास जैमिनी दर्शन,
जन मानस चैतन्य बना है या जिनका संस्पर्शन,

ज्ञान और विज्ञान समाविंत गुण गाथा है तेरी।
ज्येष्ठ और... ... ...

राष्ट्र पुरुष भगवान राम ने क्षात्र धर्म को सींचा
योगेश्वर, मतिमान कृष्ण ने चक्र सुदर्शन खींचा,

इस्लामी सल्तनत हिलाकर शौर्य सिन्धु मथ डाला,
अमर हुई तलवार शिवा की औ प्रताप का भाला,

पृथ्वीराज के शब्द वेध की तीरन्दाज कहानी,
लड़ी सिंहनी सी बनकर के झांसी वाली रानी,

विश्व विजय कर बजी अनेकों बार यहां रण भेरी।
ज्येष्ठ और ... ...

यहां पदमिनी ने चूमा है जौहर की ज्वाला को,
रण चण्डी दुर्गा ने पहना मुण्डों की माला को,
भूलेगा मेवाड़ नहीं पन्ना बाई की ममता
ऐसा है चित्तौड़ कहां इस कुर्बानी की समता,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंधारी द्रौपदी यहां जन्मी सावित्री सीता,
जिनका है प्रतिबिम्ब महाभारत रामायण गीता,

तीर्थंकर बन यहां अहिंसा महावीर ने हेरी।
ज्येष्ठ और ... ...

बुद्ध शंकराचार्य कुमारिल भट्ट हुए प्रति वादी,
यहां मार्गों और भारती की है ज्ञान प्रसादी,
कालिदास भवभूति आदि कवि वाल्मीकि की कविता,
विदुर और चाणक्य पाणिनि थे संस्कृति के सविता,
यहां भर्तृहरि भोज चरक औबाग्भट्ट की वाणी,
रोग-भोग से मुक्त जिन्हें पढ़ करके होता प्राणी,

अखिल सभ्यता भूमण्डल की रही यहां की चेरी।
ज्येष्ठ और ... ...

सूरदास तुलसी कबीर की इसमें काव्य तरंगें,
राम तीर्थ स्वामी की इसमें उठती रहीं उमंगें,
महामना मदन मोहन मालवीय की इसमें शुचिता,
थे रहीम रसखान यहां पर रही कहां संकुचितता,
कह सकता कवि कौन के इतिहास की सदियां,
हुआ अरस्तू मुग्ध यहां गंगा यमुना-सी नदियां,

कर देते सर्वस्व समर्पण लगती यहां न देरी।
ज्येष्ठ... ... ...

राष्ट्र देवता को दे डाला सभी राष्ट्र का धन था,
इदं न मम से बना हुआ क्या मामाशाही मन था,
चिने गये दीवारों पर निकले विचार के सच्चे,
फतहसिंह जोरावट से ध्रुवधीर यहां के बच्चे,
बलिदानी शिर मौर गुरु गोविन्दसिंह है मेरा,
अकथनीय है शौर्य वीर बन्दा वैरागी तेरा,

चन्द्रगुप्त की सैल्यूकस ने देखी अजब दिलेरी।
ज्येष्ठ और ... ...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी श्रद्धानन्द वीर सावरकर की यह धरती,
पड़ जाने पर समय रक्त रंजित भी तर्पण करती,
भगतसिंह आजाद चन्द्र शेखर की इसमें थाती,
ज्योतिर्मय असफाक और बिस्मिल से इसकी बाती,
लाला लाजपत राय की है इसमें गुण गरिमा,
ऊधमसिंह ने कर दी इसकी वन्दना और परिक्रमा

भरी सभा में ओडायर की कर दी जिसने ढेरी।
ज्येष्ठ और — — — —

योगिराज अरविन्द तिलक टैगोर काव्य की टीका,
गीतांजलि के सम्मुख मिल्टन शैक्सपियर है फीका,
भीमराव विधि विज्ञ विवेकानन्द विश्व की छवि थे,
नेहरूजी गांधी सुभाष इस स्वतन्त्रता की छवि थे,
गये दूर से झांक महात्मा ईसा जिसकी झांकी,
दयानन्द ने वेद भाष्य कर कीमति जिसकी आंकी,

दीप्त रहेगी धरा धाम पर ऐसी ज्योती बिखेरी।
ज्येष्ठ और — — — —

सन्त महात्माओं की इसमें रही गूंजती वाणी,
सुदृढ़ संगठन शक्ति गोलवलकर की है कल्याणी,
यहां विनोबा भावे का है सर्वोदय का सपना,
अमर आत्म विश्वास यहां शास्त्री जी का था अपना,
ऋतम्भरा प्रज्ञा से इसकी बनी हुई हैं कड़ियां,
टूट न सकती प्रलय काल तक अनुबन्धित हैं लड़ियां,

विजय पताका वेदभिक्षु: ने फिर से इसकी फेरी।
ज्येष्ठ और शिव श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है यह मेरी॥

—सत्यव्रत सिद्धान्त शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'कृष्ण और अल्लाह उसका नाम' फिलस्तीन का कहे इमाम

—डा० सीताराम सहगल

इस्लाम का विशेष गुण सामाजिकता रहा है जिससे उसने लोक-मानस को भरसक जिता है। यह मुल्लाओं के हाथ की कठपुतली रहा। जहां विश्व में अनेक धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है वहाँ इस दृष्टि से मुल्लाओं की देन कुछ भी नहीं है। आज इस्लामी देश ईराक और ईरान दोनों उड़ रहे है: इस्लामी देशों में सैनिक शासकों का बोलबाला है। जनतन्त्र फैल नहीं सका। इस दिशा में अब प्रकाश की किरण दिखाई दी है कि फिलस्तीन मुक्ति मोर्चे के सैनिकों ने 'हरे कृष्ण' आंदोलन में दिल खोलकर भाग लेना शुरू कर दिया है। ईशोवास्योपनिषद् तथा गीता का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ और हजारों की संख्या में बिक चुका है। क्या इस्लाम का काया पलट होगा?

"मैं इस्लाम के इमाम के रूप में कहना चाहता हूं कि कृष्ण अल्ला का ही श्रेष्ठ नाम है। हरे कृष्ण आन्दोलन साम्प्रदायिक नहीं है अपितु सार्वलौकिक सनातन धर्म है" ऐसा मोहम्मद याह्या यूनुस ने कुछ समय पूर्व बंगलौर की एक सार्वजनिक सभा में कहा था, वे हरेकृष्ण आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। उनका नाम अब रावणारिदास है। वे फिलस्तीन के सुन्नी परिवार मे पैदा हुए थे। उनका परिवार छः सौ वर्षों से फिलस्तीन की मक्का मस्जिद में जद्दी पुरोहित है।

हरे कृष्ण आंदोलन से प्रभावित होकर वे अब धोती पहनते हैं, तिलक लगाते हैं, यज्ञोपवीत धारण करते हैं। हरे कृष्ण का जाप भी करते हैं, परन्तु हिन्दू शास्त्रोक्त पद्धति को अपनाकर भी वे अपने को मुसलमान मानते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि भारत के मुसलमानों को कुरान-शरीफ पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें गीता पढ़नी चाहिए। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि जहां ईसा मसीह और मोहम्मद पैगम्बर हैं वहां श्रीकृष्ण उनकी तुलना में बहुत ऊपर हैं। श्रीकृष्ण तो साक्षात् भगवान हैं। वे हरे कृष्ण आंदोलन के प्रधान केंद्र वृन्दावन में भी अक्सर आते-जाते हैं और वहां इस मत की बारीकियों को समझकर अपने को सौभाग्यशाली पाते हैं।

प्रो० युनुस का जन्म सन् १९४५ में जैरुसलम में हुआ था। सन् १९६७ में जब अरब ईस्राइल में युद्ध ठना तो वे फिलस्तीनी मुक्ति मोर्चे में सैनिक थे। उनके सिर पर सख्त चोट लगी थी। वे बेरुत विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र के स्नातक हैं। उसके बाद इन्होंने हाम्बुर्ग (जर्मनी) विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर विज्ञान का अध्ययन भी किया है।

सन् १९७३ में इन्होंने जर्मनी में हरे कृष्ण आंदोलन में भाग लिया। स्वयं श्रील प्रभुपाद महाराज ने इन्हें दीक्षा दी और इनका नाम रावणारिदास रखा। इन्होंने गीता और ईशावास्योपनिषद् दोनों ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया है। धार्मिक परिवार में पैदा होने के कारण धर्म में इनकी जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढ़ती रही। कुरान के विशेषज्ञों ने जब इनके कुछ कूट प्रश्नों का उत्तर सन्तोषजनक नहीं दिया तो इन्होंने दूसरे किसी धर्मगुरु की शरण ली। इस दौरान इन्हें हरे कृष्ण आंदोलन की पत्रिका हाथ लगी जिसे पढ़कर उन्होंने प्रभुपाद के दर्शन किए। उनसे प्रश्न पूछे और सन्तोषजनक उत्तर मिलने पर गीता का अध्ययन किया।

इनकी मान्यता है कि अल्ला का अर्थ ईश्वर है कृष्ण भी ईश्वर का वाचक शब्द है। कुरान में लिखा है कि ईश्वर अजन्मा और अद्वितीय है (कुल हुआ अल्लाहु, अहद अल्लाहु, समद लं यालिद वलं युलद') गीता में भी यही कहा है—आप परम ब्रह्म – परमात्मा, परमधाम—परमतेज और परमपावन हैं। तथा आप नित्य और दिव्य पुरुष हैं (पर ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्। पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादि देवमजं विभुम् ॥ गीता-१०,१२)

इस्लाम का अर्थ शरणागति है। जो ईश्वर के प्रति शरणागत है वह मुसलमान है। गीता में भी यही लिखा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ।।

सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूंगा। चिन्ता मत कर। (गीता १६,६६,१८) जब मैंने अपने को कृष्ण की शरण में प्रस्तुत कर दिया तब मैं इस्लामी हू और ऐसी परिस्थिति में सभी इस्लामी हैं।

मोहम्मद नबी ने अपनी हदीस में कहा है—'उसम अल्ला अल अजम'। ईश्वर का बड़ा नाम गुह्य होता है। जो उसे जानता है उसकी सारी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। मैं इस्लाम में उस ग्रह्य नाम की तलाश कर रहा था। वह मुझे अब मिल गया है। वह है—हरे कृष्ण।' कुरान में लिखा है कि इन्सान को ईश्वर की आकृति में तराशा गया है और यह भी कहा गया है 'वा इस्तवा अल अर्श'—ईश्वर अपने आसन पर बैठा है। 'बेयदिन इथनाथियां—उसके दो हाथ हैं। 'अल्लाहु शामिल'—ईश्वर सुन्दर है। इस प्रकार कुरान शरीफ में ईश्वर की सत्ता को अस्वीकृत नहीं किया। परन्तु यह भी कहा है कि ईश्वर पाच्चभौतिक नहीं है। परन्तु कृष्ण की आकृति भावातीत है, उसे देखने के लिए दिव्य दृष्टि होनी चाहिए (दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् गीता ११,१८) कुरान शरीफ में अल्लाह के दिव्य रूप का वर्णन नहीं है। असल में जब मूसा द्वारा पूछा गया कि ए ईश्वर, अपनी शकल दिखलाओं। तब अल्लाह का जवाब था—ऐ मूसा, अपनी सीमा को समझो। वह आकृति पाच्चभौतिक नहीं है, वह तो भावातीत है, जिसे मन और बुद्धि केवल छू सकते हैं।

कृष्ण ही अल्लाह है

कृष्ण को देवता के रूप में पूजना मूर्तिपूजा नहीं है। अल्लाह असीम तथा सर्वव्यापक है। कुरान शरीफ कहता है कि अल्लाह भी असीम और सर्वव्यापक है। कृष्ण के रूप का वर्णन भी उसी तरह है। वह कीचड़, लकड़ी, पत्थर, रोगन व मन में प्रकट हो सकता है। वह अपने को किसी भी शकल में प्रकट कर सकता है। वह प्रत्येक आत्मा में विद्यमान है, हम देवता की पूजा करने से आत्मा की सीमा का निर्धारण नहीं कर रहे, परन्तु उसे सर्वतो भावेन समझने में समर्थ हो सकते हैं। श्रीमद्-भागवत् में ऐसा ही लिखा है—ब्रह्मेति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परमात्मेति भगवान् इति शब्दयते। कृष्ण ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ रूप है। उसे परमात्मा कहा है जो घट-घट में वास करता है। वह सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक कृष्ण को ही कुरान में अल्लाह नाम से पुकारा गया है।

पेट कब्रिस्तान नहीं

कुरान शरीफ की पहली सुरह में गाय का वर्णन—'सुरहतुल बकरा' शब्दों में किया है। इसका अर्थ है कि गाय देखने में बड़ी सुन्दर है। गाय का मांस खाने का विधान कुरान शरीफ में कहीं नहीं है। इसके विपरीत इमाम अली ने कहा है—'अपने पेट को, पशुओं का मांस खाने से कब्रिस्तान मत बनाओ।

कुरान शरीफ में स्वर्ग को जन्न कहा गया है। जिसके दो रूपों का वर्णन मिलता है पहला जन्न वह है जहां साधु लोग रहते हैं। दूसरा जन्न वह है जिसे जन्नती (मेरा स्वर्ग) कहा गया है, जिन लोगों का कुरान सम्बन्धी ज्ञान अल्प है वे यही समझते हैं कि भोगों की तृप्ति का धाम जन्न ही, जीवन का अन्तिम पड़ाव वही है। यह स्थान उसे भी मिल सकता है जो 'हरे कृष्ण' का जप शुद्ध भाव से करता है।

गीता और ईशोपनिषद्

प्रोफैसर यूनस की अरबी भाषा में अनूदित गीता का अनुशीलन असंख्य लोगों ने किया है, पी एल ओ (PLO) के हजारों सैनिकों ने उसे पढ़ा है। हरे कृष्ण मंत्र का पाठ आनन्दपूर्वक किया है। आजकल वे लैबनान के दो विश्व विद्यालयों में कृष्ण चैतन्य तत्त्व पर साप्ताहिक व्याख्यान देते हैं। नवयुवक इसमें भरसक रुचि लेते हैं। वे सब मिलकर हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे उत्साह से गाते हैं। उनके ईशावास्योपनिषद की अरबी भाषा के अनुवाद की लगभग २२ हजार कापियां बिक चुकी हैं। अरबी में गीता की लगभग ७ हजार कापियां बिकी हैं। प्रोफेसर अली जहूर जो यूनिवर्सिटी के डीन हैं, श्रील प्रभुपाद की कुछ पुस्तकों का अरबी में अनुवाद करवाकर पाठ्य पुस्तकों के रूप में पढ़ाना चाहते हैं। हां, कृष्ण मन्त्र सबके लिए सुलभ है, इसके लिए किसी भी विशेष वर्ण, विशेष विश्वास, विशेष राष्ट्रीयता व विशेष धर्म की आवश्यकता नहीं है। वहां का हर छात्र आज अनुभव करने लगा है—कृष्णस्तु भगवान स्वयम्—कृष्ण तो साक्षात् भगवान् हैं॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने कैंसर चिकित्सा की नई विधि खोजी

नयी दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रीय कैंसर इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने सूचना दी हैं कि उन्होंने एक ऐसी नई विधि खोज निकाली है जिससे उन कैंसर रोगियों को भी स्वस्थ्य किया जा सकता है जिस पर शल्य चिकित्सा, केमोथेरेपी या विकिरण जैसी साधारण विधियां नाकाम रहती हैं। इस नई विधि से कैंसर की गांठे संकुलित अथवा पूरी तरह नष्ट की जा सकती हैं।

इंस्टीट्यूट के चिकित्सा विभाग के प्रधान शल्य चिकित्सक और नई विधि के आविष्कारक डा० स्टीवन रोजेनवर्ग ने बताया कि इस विधि के अधीन कैंसर रोगी की श्वेत रक्त कोशिकाओं को निकालकर एक परखनली में इंटरल्युकिन-२ से मिश्रित किया जाता है जिससे लिम्फोकाइन नामक नई कोसिकाएं बनती हैं। ये कोशिकाएं रोगी के शरीर में डाल दी जाती हैं और इंटरल्युकिन-२ की नई खुराकें देकर उन्हें सबल बनाया जाता है। ये कोशिकाएं शरीर में बढ़ती जाती हैं और कैंसर कोशिकाओं को नष्ट कर देती हैं।

वैज्ञानिकों ने बताया कि पिछले साल आनुवंशिकी की सहायता से निर्मित इंटरस्युकिन-२ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। अब यह भारी मात्रा में चिकित्सकों को सुलभ कराई जा रही है।

राष्ट्रीय कैंसर इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने जटिल कैंसर के २५ रोगियों पर इस नई विधि का परीक्षण किया। एक रोगी पूरी तरह रोगमुक्त हो गया और ११ रोगियों की कैंसर गांठें आकार में काफी घट गई।

लेकिन इन वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यह विधि अभी परीक्षण की अवस्था में ही है और इसके हानिकारी पार्श्व प्रभाव होते हैं। फिर यह अन्य कैंसर चिकित्साओं के मुकाबले में अधिक महंगी भी हैं। इस समय यह चिकित्सा विधि केवल इसी इंस्टीट्यूट में सुलभ है जहां थोड़े से रोगियों पर इसका परीक्षण किया जा रहा है। लेकिन अन्य अनुसंधानी चिकित्सालयों में भी शीघ्र ही इसका प्रयोग शुरू हो जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैज्ञानिक अब यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या अन्य स्वस्थ व्यक्तियों की श्वेत रक्त कोशिकाओं का भी इस चिकित्सा विधि में प्रयोग किया जा सकता है या नहीं। वे यह भी जानने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या रोगी के रक्त में लिम्फोकाइन कोशिकाओं को सीधे कैंसर कोशिकाओं में डालना समूची रक्त संचार प्रणाली में उन्हें डालने से अधिक प्रभावी होगा या नहीं।

विश्व में कई प्रकार के कैंसर रोग हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। लगभग ४५०००० अमेरिकी प्रति वर्ष इस रोग से मरते हैं। विश्व में कैंसर से मरने वालों की संख्या इसकी दस गुनी बताई जाती है। फ़ेफड़ों का कैंसर सर्वाधिक प्रचलित तथा घातक है। अमेरिका में फेफड़ों के कैंसर का प्रचलन कुछ घटा है। यह धूम्रपान से ही अधिकतर होता है।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिंदी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : ३०० रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ८०० रु० में लीजिये।

आदेश के साथ ५० रु० के अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम

अलीपुर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाक में हिन्दुओं को पक्के मकानों की अनुमति नहीं

श्रीगंगानगर : पाकिस्तान में बसे हुए हिन्दुओं को जनरल जिया-उल-हक की तानशाह सरकार ने रहने के लिए पक्के मकान तक बनाने की इजाजत नहीं दी। उन्हें झोंपड़ियों में रहने को मजबूर किया जाता है। वहां बसे हिन्दू इंसाफ पाने के लिए न तो कानून और न ही किसी अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

यह बात पाकिस्तान में घोर यंत्रणाओं का शिकार होकर चोरी-छिपे भारत में शरण पाने के लिए यहाँ आये एक हिन्दू दल ने कही है। पाकिस्तान के रहीमयार खां नामक स्थान के निवासी हिन्दुओं का यह दल सरहद पर स्थित अनूपगढ़ के रास्ते हाल ही में भारत में आया था और उसने स्वयं को अनूपगढ़ थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया था।

इस दल में दस पुरुष तथा पांच महिलाएं हैं। इसके साथ कोई बच्चा नहीं है। एक प्रौढ़ व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी जवान हैं। दल के पुरुष सदस्यों के नाम गिरधारी लाल, मालाराम, राहूराम, भंवरे राम, पीरराम चुनारा, श्रवण राम, उदाराम, उदमाराम व गिरधारी राम हैं। ये सभी हिन्दू हरिजन हैं। ये सभी लोग पैदल चलकर भारत सीमा तक आये हैं और सीमा पार कर अनूपगढ़ पहुंचे थे।

गिरधारी लाल ने बताया कि पाकिस्तान में हिन्दुओं को तरह-तरह से सताया जाता है। उन्हें वहां नागरिकों के सामान्य अधिकारों से वंचित रखा

(शेष पृष्ठ ६५ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान-दाताओं की सूची

१०१) रु० देने वाले

श्री देवड़ा, बम्बई, ब्रह्मसिंह धनबाद बिजयकुमार विष्ट पटना।

१००) रु० देने वाले

सर्वश्री खुशीराम शर्मा जालन्धर, जगदीशप्रसाद अलीगढ़, डा० बी०पी० चड़ोला पौड़ी गढ़वाल, रावजी कन्तरा बम्बई, के० सी० ट्रीजीतला बम्बई, रामसिंह कन्नोज थाना, आर्यसमाज मन्दिर मंडी, गजानन्द मंडेलिया बम्बई, गोपीचन्द बुलन्दशहर।

५१) रु० देने वाले

सर्वश्री–सुन्दरलाल नारंग सतना, जगदीश प्रसाद वर्मा कटक, पं० शोभा राम शर्मा भन्दसौर, पी०आर० महलोत इन्दौर, रामचन्द्रराव बिडार, चंद्रभान दिल्ली, संतोषकुमार वर्मा मेरठ, जगदीशप्रसाद अलीगढ़, हरिश्चन्द्र देशवाला दिल्ली कैंट, दादूरूप अपकल दिल्ली-२७, पीपरभाई प्रयागभाई राजकोट, सुजान कंधू कटरा हीरालाल, राजदेव शर्मा जमशेदपुर, श्रीनन्द शर्मा गाजि० किशन गोपाल नागपुर, प्रताप नारायणसिंह गोरखपुर, धीरव्रत त्यागी हापुड़, द्वारिकाप्रसाद बिलासपालवी, गोगासिंह चौहान हजारीबाग, पारसनाथ आर्य पालम बिहार, मदनलाल आर्य पालम बिहार, अशोक महाजन जम्मू,राजीरनस स्टील सेल्स गोवर्धगोप, किस्तूरचन्दजोशी नागौर, शंकरलाल मूलचन्द डूगरपुर जगन्नाथ प्रसाद आर्य छपरा, रामचन्द्र एम० व्यास अहमदाबाद, निवाजी किशन ब्रह्म क्षत्रीय जलगांव, केदार नाथ शास्त्री धनबाद, आशाराम त्यागी डाल्टनगंम, सच्चिदानन्द सिन्हा हजारीबाग, मून्नालाल गुप्त शिवपुरी, ए० एम० तिवारी सीहोर, त्रिलोकी नाथ वाराणसी, श्रीमती पूर्णिमादेवी लखनऊ।

[शेष पृष्ठ ६४ का]

जाता है। हिन्दुओं को अपने इष्ट का नाम तक नहीं लेने दिया जाता। हिन्दू मंदिरों एवं अन्य इबादतगाहों पर भी पाक नागरिकों का कब्जा है।

एक अन्य व्यक्ति ने बताया कि पाकिस्तान में हिन्दुओं को हिकारत की निगाह से देखा जाता है, हिन्दुओं से वहां बेगार भी ली जाती है।

उदाराम का कहना था कि हिन्दू पाकिस्तान में पक्का मकान नहीं बना सकते। उन्हें कच्ची झोंपड़ियों में ही रहने पर मजबूर किया जाता है। कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति जब चाहे गरीब हिन्दुओं की झोपड़ियां मिट्टी में मिला सकता है। वे लोग हिन्दुओं की खूबसूरत औरतों को उठाकर ले जाते हैं। राहूराम ने कहा कि भारत में आकर हमें ऐसा महसूस हुआ कि हम मातृभूमि में आ गए।

 CC-0. Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते संस्कार

--अ० रतनलाल 'रत्नेश'

जब बाबू जी संग मुनुआ के जाते हैं बस हो कर सवार
तो पांच साल के मुनुआ को वे समझाते हैं बार-बार
यदि कोई भी बस में पूछे तो कहना तुम वह उसी काल
कुछ सीमित पैसों का लालच तुम उम्र बताना ढाई साल
है धन्य टका तुझको जग में तू झूठ बुलाता बार-बार
है झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते संस्कार

जब बाबू जी अवकाश बिना दिल्ली जयपुर या अम्बाले
आ जाते हैं उनके पीछे से उन के अफसर आले
यदि बच्चों ने कह दिया साफ वे गए हुए हैं अम्बाले
तो सच्चे का यह पुरस्कार पिला पड़ती अम्मा डंडो ले
उन बच्चों पर जीवन में होता न सत्य का चमत्कार
है झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते संस्कार

जब बाबूजी से कोई भी मिलने वाला आता है
या उधार के पैसों के हित बनिया चक्कर खाता है
बाबू जी घर बैठे हैं पर मुनुआ से कहलाते हैं
वे तो आफिस गए हुए या अन्य कहीं बतलाते हैं।
आराम भंग होने के भय से भी कर पाते हैं इन्कार
है झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते संस्कार।

जब पास पड़ोसिन नाइन धीवर या अन्य नार
आ गयी खड़ी हो देहरी पर माँग रही होती अचार
तो अम्मा फट कह देती है, है खतम हुआ सारा अचार
तब लल्ली सुन कह उठती है उस हंडिया में झांकें हजार
तब हाथ उठा आंखें निकाल मां जाती सच्चाई डकार
है झूठ बोलने के बच्चों में तब जम जाते संस्कार।

--अ० रतन लाल 'रत्नेश'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरिद्वार का कुम्भः
राष्ट्र यज्ञ में आहुति डालिए

मान्यवर,

हिन्दू समाज पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं। साफ
ाई दे रहा है कि ईसाई और मुस्लिम संप्रदाय के विघटनकारी तत्त्वों
षड्यन्त्र रचने पर कमर कस ली है और वे देश के अनेक टुकड़े
करने पर तुले हुए हैं।

शाहबानों कांड या रामजन्मभूमि मुक्ति प्रसंग के बहाने वे अपनी शक्ति
प्रदर्शन कर रहे हैं। सच तो यह है कि इस प्रकार के बहानों से वे इस
त की रिहर्सल करना चाह रहे हैं कि आगामी वर्षों में इस देश को
र्णतः इस्लामी राष्ट्र बनाने के लिए उनकी कितनी तैयारी हो चुकी है।
ायद वे ये भी देखना चाहते हैं कि हिन्दू समाज पर कितनी चोट की जा
कती है, इसकी जीवनी शक्ति कितनी है और इसे कुचलने के लिए कितनी
यारी और चाहिए। हर छुट-पुट घटना पर देशव्यापी तूफान, दंगे और
ार-काट से १९४७ के दिनों की याद ताजा हो आती है। क्या हम फिर
पनी मातृभूमि का विभाजन होने देंगे ? यदि ऐसा हुआ तो आजादी के
ाए प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों का बलिदान निष्फल हो जायेगा
ौर आने वाला इतिहास हमारी अकर्मण्यता को कभी माफ नहीं करेगा।

इन षड्यन्त्रों के विरुद्ध हिन्दू समाज को जगाने का यही समय है।
हिन्दू रक्त पानी नहीं है, उसमें शिवा-प्रताप के बलिदान का तेज है, शर्त
यही है कि उसे सही दिशा, नेतृत्व और आह्वान मिले।

यह हर्ष की बात है कि संकट के बावजूद इस बार कुम्भ के अवसर
लाखों हिन्दू और सभी सम्प्रदायों के संत हरिद्वार में इकट्ठे होंगे।
चेतना और आह्वान का इससे अच्छा अवसर और कौन-सा हो सकता है ?

हमारा विश्वास है कि हिन्दू जागरण का सबसे अच्छा उपाय इस
वसर पर वैदिक साहित्य का वितरण होगा। उसमें हमारे राष्ट्र को
न, मशक्त बनाने का ओजस्वी आह्वान है, सबल प्रेरणा है। हिन्दुओं की
नयों में रक्त खौला देने की क्षमता है। हम चाहते हैं कि इस अवसर
हिन्दू जनता में लाखों की संख्या में इस प्रकार का प्रचार साहित्य
जाये। कुम्भ से लौटने वाले हिन्दू सही अर्थों में अपने साथ अमृत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P.O. बलीपुर दिल्ली-३६	चैत्र २०४२ अप्रैल १९८६	D-C-201 R.N. 10719/65

लेकर जाँय। इसके लिए हमें लाखों रुपये का धन भी चाहिए। संकट के समय में हर हिन्दू से हम भामाशाह की तरह सर्वस्व त्याग की आशा तो नहीं करते पर 'इदं न मम' की भावना से अधिकतम सहयोग की आशा जरूर करते हैं।

देश और समाज तथा हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समय-समय पर अलग-अलग प्रकार का बलिदान अपेक्षित रहता है। कभी प्राण देने पड़ते हैं तो कभी समयदान करना पड़ता है कभी घर छोड़ने पड़ते हैं तो कभी बलिदान करना पड़ता है। जैसा कि आप जानते हैं, हम पर आर्यत्व हिन्दुत्व के जागरण हेतु साहित्य छापने तथा संघर्ष करने के "अपराध" में ३६ मुकदमे सरकार ने चला रहें हैं। हम ये मुकदमे आपके सहयोग से ही लड़ रहे हैं।

आज भी आक्रामक शक्तियों का आक्रमण एक आँधी की तरह बढ़ता आ रहा है। ऐसी स्थिति में अग्रिम मोर्चे पर जन-जागरण की लहर जरूरी है और थोड़ा कष्ट उठाकर अपने श्रम से अर्जित कुछ धन देकर यदि हम इस लहर को प्रवाहित रख सकें तो यह योगदान महंगा नहीं होगा। अन्यथा हो सकता है कि कल हमें बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़े।

कुम्भ पर इसी दृष्टिकोण से विचारोत्तेजक साहित्य वितरण के लिए आपसे आर्थिक सहयोग अविलम्ब चाहिए। समय बहुत थोड़ा है। ६ मार्च से कुम्भ मेला प्रारम्भ हो रहा है। वहां दयानन्द संस्थान द्वारा प्रचार साहित्य के वितरण और सस्ते मूल्य में विक्रय का केन्द्र लगेगा। मुझे विश्वास है कि आप पत्र पाते ही अविलम्ब इस राष्ट्र-यज्ञ के लिए अधिकाधिक आहुति भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे।

आपकी बहन

राकेशरानी

आपके अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान
दिल्ली-३६

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पंडिता राकेशरानी द्वारा
'जन-ज्ञान' मुद्रणालय दिल्ली-३६ में मुद्रित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi